55836

महाभारत का हिन्दी अनुवाद

तकूं तक्षक काट खायगा और यमलो
ककूं चला जायगा श्रंगी ऋषि के यह वच
न सुनकर ॥२५॥१९॥ पापी के ऋषि बो
ले पुत्र तैंने यह काम हमारी इच्छा के अ
नुसार नहीं किया तपस्वियों का यह ध
र्म नहीं है हम उस के देस में बसते हैं ॥२०
और वह हमारी रक्षा करता है हमारी
और से राजा परक्षमा होनी चा
हिये धर्म से रक्षा न करे तौ हम लोग सु
खपूर्वक कोई धर्म नहीं कर सकते और
और धर्मात्मा राजा की रक्षा में रहकर
बड़े बड़े धर्म करते हैं और उस ध
र्म में से कुछ भाग राजा को भी मिल
ता है इस कारण से राजा तो सदैव क्ष
मा योग्य है ॥२१॥२८॥ और यह परी
क्षत तौ विशेष कर के क्षमा के योग्य
इस कारण से है कि वह अपने दादा की
तरह प्रजा का पालन और धर्म की र

यह अपमान केवल भूख प्यास
से दुःखी होकर यह काम किया मेरा
मो लबंतकूं नहीं जानता था॥२६॥ हे
पुत्र जिस देश में राजा नहीं होता व
हां चोरी आदि बड़े बड़े दोष निरन्तर
हुवा करते हैं राजा ही केवल दण्ड दे
कर इन उपाधियों को दूर करता है जे
क राजा के दण्ड देने से स्वस्थता होजा
ती है तब सब लोग निर्विघ्न धर्म क
रते हैं इससे धर्म का होना राजा ही
के होने से होता है और धर्म से स्वर्ग
वास मिलता है धर्मात्मा राजा होने
ही से यज्ञ होते है यज्ञो से देवता प्रस
न्न होते हैं॥२७॥२८॥ देवताओं के
प्रसन्न होने से वर्षा होती है वर्षा के
होने से अन्नादि उत्पन्न होते हैं औ
र अन्नादि के होने से सब जीवों का पा
लन होता है मनु जी ने कहा है कि जो
राजा मनुष्यों का पालन करै

औरधर्म से राज करै वह दशवेद पा
ठियों के बराबर है तैने यह बुरा कि
या जो रे से राजा को शाप दिया॥३०॥
३३॥ इति श्री भाषा महा भारते आदि
पर्व एणी एक चत्वारिंशत तमो ऽध्या
यः॥४१॥ बयालीसवां अध्याय॥
शमीक ऋषि का अपने शिष्य को
राजा परीक्षत के पास भेज कर शृं
गी ऋषि के शाप का हाल कहवाना
और राजा का यो कर के उसका य
त्न करनां॥ सूतजी बोले हे ऋषि
यो शृंगी ऋषि अपने पिता की उ
न बातें सुन कर बोले महाराज मु
झसे जो यह कर्म साहस का या बुरा
आप का प्रिय अथवा अप्रिय बन
पड़ा है वह अब झूठ नहीं होसक्ता
क्योंकि मैं हंसी में भी कभी झूठ न

हीं बोलता हूं यह तो पापथा॥१॥२॥
यह सुनकर वाल्मीक ऋषि बोले
कि मैं जानता हूं कि तू सत्यवादी औ
र उग्र भाव वाला है तेरा कहा झूठ
न हो जा॥३॥ परन्तु पिता को जो पु
त्र नवान भी हो गया हो तो भी सम
झाना उचित है इससे मैंने तेरे बा
लकपन और तेरे साहस को देखक
र तुझ को समझाया है॥४॥५॥ अ
ब तू समरूप हो कर बन में रह औ
र बन फल खाकर अपने क्रोध को
मार क्रोध करने से तप और धर्म क्षी
ण होता है और परजाती नास हो
जाती है और क्षमा रूप रहने
वाले को दोनों लोकों में कल्याण
होता है जो मनुष्य जितेन्द्री होकर
क्षमापूर्वक रहते हैं उनको क्षमा

नी के पास के लोकों में मिलते हैं ॥ १ ॥
१० ॥ इसके पीछे शमीक मुनि ने अ
पने सौम्य स्वभाव वाले और मुख ना
म शिष्य को बुलाकर कहा कि तू ज
ल्दी से राजा परीक्षित के पास जाक
र यह सब बृतान्त सुनाकर कहियो कि
मुनि ने तो क्षान्त किया था परन्तु उनके
क्रोधी पुत्र ने बाल स्वभाव से तुम को
शाप दिया है सो अब जो कुछ तुम
योग्य समझो सो करो ॥ ११ ॥ १४ ॥ वह
शिष्य मुनि की आज्ञा पाकर वहां से तु
रन्त राजा परीक्षित के राज मन्दिर में
पहुंचा और द्वारपालों से अपनी खब
र कराई ॥ १५ ॥ राजा ने सुनते ही उ
से भीतर बुला लिया और उस यथावि
धि पूजन करके जब आने का हेतु
पूछा तब वह शिष्य सब मंत्रियों के
सामने बोला कि महाराज आप के

देश में एक जितेन्द्री शांत और व
डे तपस्वी शमीक नाम ऋषि रहते हैं
॥१६॥१७॥ जिनके कंधे पर आप मरा
हुवा सर्प रख आये थे उन्हों ने यह
कहने कूं आप के पास भेजा है कि हम
ने तेरे अपराध को क्षमा किया था पर
न्तु हमारे पुत्र ने क्षमा नहीं करी॥१८
॥१९॥ आप को उसने यह श्राप दिया है
कि राजा कूं सातवीं रात कों तक्षक
सर्प काटैगा और राजा मर जायगा
॥२०॥ सो आप कों मरण निश्चय
होगा आप रक्षा का यत्न कीजिये
॥२१॥ और मुनीश्वर ने आप के पा
स मुज कूं इसी वास्ते भेजा है कि य
ह श्राप झूठा नहीं होगा तुम कुछ उ
पाय करो॥२२॥ राजा इस बात को
सुन कर और उनमौन धारी म

निकी कृपा और अपने अपराध को जान कर अत्यन्त दुःखी हुवा और अपने मरने का इतना पोच नहीं किया जितना उस अपराध के कर नें का पोच किया ॥२३॥ २६॥ इस के पीछे राजा नें गौर मुख को विदा किया और मुनीस्वर से कहला भेजा के आप इसी प्रकार कृपा किया करें ॥२१॥ इस के पीछे राजा ने मंत्रियों को बुला कर कहा सलाह करी और सलाह कर के एक मंदिर एक खंभ ऐसा बनवाया कि और जीव की तो क्या सामर्थ है अपर बायु भी वहां नहीं जा सक्ती थी राजा उस में स्थित हुवा और चारों ओड मेरे सेना के लिये बड़े बड़े रक्षक रक्षा की कर नें वाले खड़े कर दिये और बड़े बड़े बड़े बैद्य और नाना प्रकार की बि

ख दूर करनेवालों और बधी और र
बड़े बड़े मंत्र सिद्ध ब्राह्मन लोंको रक्षा
के लिये इकट्ठा किया राजा जो कुछ रा
जकाज होता वहीं बैठा हुवा करता
॥२८॥३२॥ जब सातवां दिन आया
तब काश्यप ऋषि इस हाल को सुन
यह विचार करते हुये चले कि आज
राजा को तक्षक के बिष से अच्छा क
रके धन आदि जो कुछ मुझे इच्छा
होगी सो लूंगा ॥३३॥३४॥ राह में त
क्षक ने बुड्ढ ब्राह्मन का स्वरूप धा
रण करके उनसे पूछा कि आप बड़े
ही जल्दी जल्दी कहां को जाते हैं ॥३६॥
३७॥ कश्यप जी बोले कि आज सर्पों
का राजा तक्षक परिक्षित को काटेगा
और मैं उस को उसके बिष से अ
च्छा करूंगा यह सुनकर तक्षक बो
ला कि तक्षक मैं ही हूं तू अपने लौ

घरको लौटजा मेरे ठकी चिकित्सा नहीं
है॥३८॥४०॥ यह सुनकर कश्यप जीवो
ले कि मेरे विद्याबल को देखियो तेरे
काठे को ही तत्काल अच्छा करूंगा॥४१॥
इति श्री भाषा महाभारते आदिपर्वे
एा द्विचत्वारिंशाधितमोऽध्यायः॥४२॥
तेतालीसवां अध्याय॥ तक्षक सर्प का
राजा परीक्षित को काटना॥ सूतजी
बोले हे ऋषियो कश्यप जी की बात
सुनकर तक्षक बोला कि रे साही परा
क्रमी तेरा मंत्र है और तू मेरे काटे हुये
की चिकित्सा कर सक्ता है तो ले मैं इस
वड़ के पेड़को काटता हूं तू अपने मं
त्र का बल दिखा॥१॥२॥ कश्यप
जी ने कहा अच्छा फिर तक्षक ने उ
स बड़ के पेड़को काटा और वह बड़ उ
विष की अगनी से जलने लगा जैव
जलकर राख हो गया तब तक्षक बो
ला कि लो अब इस बृक्ष को जि
ला ओ॥३॥६॥ यह सुनकर कश्यप

पञ्जी ने उस जले हुये ब्रह्मन की रा
खको इकट्ठा किया और फेर अप
नी विद्या से जिला दिया पहले उस
राख मैं अंकुर उत्पन्न हुये फिर
देह तो कोइ दो घ आ उपरान्त के
[illegible] मसें जैसा ब्रह्मन था वैसा ही होग
या तब ब्रह्मनक का पुत्र पञ्जी का यह काम
देखकर बोला कि आप सामर्थवा
न हैं यह काम आपका कुछ अद्भु
त नहीं है आप मेरे अथवा दूसरे स
र्प के बि[illegible] ष को निश्चय अच्छा
कर सक्ते हैं परन्तु उस राजा की
आयु ढील है इसकारण से जो आ
पकी विद्या ने वहां काम न दिया तो
आपका सूर्य रूपी यश राहू ग्रसि
त के समान अस्त हो जाय जो इस
से आपको जो कुछ राजा से मांगना

हो वह मुझ से ही लेकर लौट जाइये
मैं आप को दुर्लभ पदार्थ भी दूंगा॥
१॥१५॥ यह सुन कर कश्यप जी बो
ले कि मैं धन के लिये वहां जाता था
जो तुम मुझ को दो तो मैं लौट जाउं १६
तक्षक बोला कि जितना तुम धन
चाहते हो उससे अधिक मैं दूंगा १७
सूत जी बोले हे ऋषियो कश्यप जी
ध्यान से राजा परीक्षित को दीर्घा
युष जानकर तक्षक से धन लेक
र लौट गये॥१८॥२०॥ और तक्षक
वहां से हस्तिनापुर को गया और
राजा को बड़े बड़े मंत्र और बिष हर
ने वाली औषधि से रक्षित सुनक
र उपाय सोचने लगा थोड़ी देर में
उपाय सोच कर उसने नागों को
बुलाकर कहा कि तुम लोग तपस्वि

योंका रूपधरके राजाको आपही
वोहू देकर जलकुंपा और फलदो
नाओं ने वसाही किया ॥२१॥२५॥
और राजाने बहुत वत्तकरके वहज
लकुंपा और फल लेकर आपनेपा
स रखलिये ॥२६॥ और उन तप
स्वी रूपनाओंको धन देकर विदा
किया उपरान्त राजाने आपने भा
ई बन्धु और मन्त्रि योंको बु
लाकर कहा देखो ये तपस्वियों प
स्वियोंके लाये हुये फल कैसे सुन्द
र हैं आप लोग इनको भोजन क
रैं हम भी एक दो खावेंगे यह सुनक
र सब लोग उन फलोंके खानेको
बैठे ॥२७॥२८॥ दैवयोग और मुनि
के श्रापसे राजा ने वही फल लिया जि
समें बैठकर तक्षक आया था ॥३०॥

जब उस फल को तोड़ा तब उसमें से
एक लाल रंग का कीड़ा जिसकी आं
खें काली काली थीं सो निकला उस
को हाथ में लेकर परिक्षित बोला कि
अब सूर्य अस्त होने का समय है अ
ब विष का तो भय हम को है ही नहीं
यही कीड़ा हम को काट कर मुनि के
वचन को सत्य करै॥३१॥३३॥ मंत्रि
यों ने भी काल से प्रेरित होकर अप
ना यही सम्मत दिया उपरान्त राजा
ने भी उस कीड़े को अपनी गरदन पर
रख कर उस को देख कर हंसने लग
गा उसी समय तक्षक ने भी अपना
स्वरूप धर कर राजा को लपेट लिया
और बड़ा पाड़ कर के काट खाया॥
३४॥३६॥ इति श्री भाषा महा भा
रते आदिपर्वणि त्रिचत्वारिंशत्ती
तमोऽध्यायः॥४३॥ चवालीसवां

अध्याय॥ राजा परिक्षित के मरने
पर उसका कर्म होना और उसके
पुत्र जन्मेजय के राज्याभिषेक हो
[illegible]ने की कथा॥ सूत जी बोले है कि
ऋषियो राजा के सब मन्त्री उस विष
से उठी अग्नि और उस तक्षक के ना
द को सुनकर भयभीत होकर भागे
और अत्यंत दुःखी होकर [illegible]रो
ने लगे और वह तक्षक जिसके ड
सने से राजा ऐसे गिर पड़ा जैसे की
बिजली गिरने से गिर पडे राजा
को काटकर चमकता हुवा आका
शमार्ग होकर चला उसको जा
ते हुये सब मंत्रियों ने [illegible] दे
खा॥ ६॥ ८॥ इसके उपरान्त सब
ब्राह्मण राजपुरोहित और मंत्रि
यों ने मिलकर उस राजा का प

१ सम्बन्धी कर्म किया॥५॥ और
१ अच्छा शुभ महूर्त देखकर उ
स के पुत्र का राजतिलक किया और
उस का नाम जन्मेजय रखा॥६॥
वह राजा यद्यपि बालक था पर अ
पने प्रपितामह राजा युधिष्ठिर के
समान राज्य शासन करने लगा॥७॥
मंत्रियों ने उस के तेज को देखकर
काशी के सुवर्णवरमा नाम राजा
से उस की वपुष्टमा नाम कन्या ज
न्मेजय से विवाह करने को मांगी॥
८॥ और सुवर्णवर्मा ने भी धर्म
परीक्षा करके उस कन्या का विवा
ह जन्मेजय से कर दिया जन्मेजय
ने उस को पाकर फिर दूसरी स्त्री की
तरफ दृष्टि न की॥९॥ और उसके
साथ इस प्रकार से विहार किया जैसे
से पहिले राजा पुरूरवा ने उर्वशी के

पाथ किया था ॥२०॥ और वह पति
व्रता वपुष्टा भार्या राजा जनमेजय को
पाकर विहार के समय प्रीति से रमण
करने लगी ॥२१॥ इति श्री भाषा महा
भारते आदिपर्वणि चतुर्चत्वारिं प्रति
तमोऽध्यायः॥४४॥ पैंतालीसवां अ
ध्याय॥ जरत्कारु ऋषि पृथ्वी पर भ्रम
ण करना और एक गढ़े में नीचे
को मुह किये हुये अपने पितरों को
लटकते हुये देखना॥ सूतजी बो
ले हे ऋषियो इसी अवसर में जर
त्कारु ऋषि भी उग्र तप करने लगा
फकत पवन खाते थे दिन रात पृ
थ्वी पर तीर्थादिकों में घूमा करते थे
ने हां जब सांझ होजाती थी तो वहीं
टिक जाते थे और ऐसे ऐसे
आचरण करते जो आत्म हू अन्तः

करती वा लौम नुष्य कभी नहीं कर स
क्ते हैं और निराहार रहकर जरत्का
रने आपनी देही कौ बिल्कुल सुखा
दिया था एक समय वह जरत्कारु घू
मते हुये एक स्थान मैं पहुंचे वहां देख
ते क्या हैं कि कुछ मनुष्य एक गढ
हे ला मैं नीचे को मुख किये एक ख
स के खम्भे के आसरे लटक रहा था
॥१॥३॥ उनको देख कर उनकी दी
नता पर दया करके जरत्कारु उनके पा
स आया और कहा कि आप लोग कौ
न हैं जो इस खड्डे में इस प्रकार से लट
के हुये हैं इस खस के खम्भे मैं अ
व केवल एक जड़ बाकी रही है उसे
भी मूसा अपने बिल मैं से लिकर
लिकुड कर काट डालते हैं ॥४॥१॥
उसके कट जाने पर आप लोग सब
नीचे गिर पड़ोगे ॥२॥ आप आप

नी आपत्ति का हाल कहिये जो मेरी त
पस्या के चौथाई तीसरे अथवा आ
धे ० हिस्से से या पूर्ण तपस्या से आ
प को दुःख दूर हो सके तो मैं देने को त
यार हूं ॥ ९ ॥ ११ ॥ यह सुनकर वे लोग
बोले के आप बड़े ज्ञानी हैं और हमारी
आपत्ति पर नजर रखकर हमारी रक्षा
करना चाहते है परन्तु तप के फल
से कुछ नहीं हो सकता ॥ १२ ॥ हमारे
पास भी तप का फल है परन्तु हमारी
हमारी तो यह गति संतान न होने
से हुई है ॥ १३ ॥ हम लोग पापनरक के
बिल हैं हमारे अब संसार में केवल ए
क पुत्र रह गया है नाम उसका
जरत्कार है वह बड़ा तपस्वी और वे
दों का जानने वाला है परन्तु उसके
स्त्री नहीं और न कोई पुत्र या भाई

है यह जो खसके खंभे में जिसके आश्रय हम लटके हुये हैं एक जड़ रह गई है वह केवल हमारे कुल में वही एक पुत्र रहा है और उसको भी चूहा रूपी महाकाल दिन रात्र भक्षण करता चला जाता है इससे हे महाराज आप ने जो हम पर दया की है तो कृपा कर के अगर आप को जरत्कारु मिले तो उससे हमारा सब दीन वृत्तान्त कह कर उसे ऐसा उपदेश कीजियेगा जिसमें वह अपना विवाह करे और ऐसा करने से वह भी कुछ काल में मर कर नरक में पड़ेगा बिना सन्तान के तरना दुर्लभ है, और आप ने हम पर ऐसी दया करी जप से कोई अपना भाई बंधु करता है हमारा दुःख पूछा इसकारण से हम भी जानना चाहते हैं

ते है की आप कौन है॥१४॥२३॥
॥इति श्रीभाषा महाभारते आदिपर्व
णि नाम पंच चत्वारिंशो ऽध्याय॥
४५॥ चालीसवां अध्याय॥ जरत
कार का पितरों के कहने से विवा
ह को स्वीकार ना हां करना॥ सूत
जी बोले है ऋषि वो उन लोगों
की पह बात सुन कर जरत्कार बो
ले के महाराज आपका पापी और दुः
ख देने के योग्य पुत्र मैं ही हूं मेरा ही
नाम जरत्कार है आप लोग निश्चय
मेरे पिता हैं मेरी इच्छा परलोक के
मिलने की नहीं थी और विवाह कार
ने की नहीं परन्तु अब आप के इस दुः
ख कूं देख कर मैं ऐसी स्त्री से विवा
ह करूंगा जिस का नाम मेरे

साहोय और उनका भरणपोषण
मुझे न करना पड़ै ऐसी स्त्री को पाक
र मैं अवस्य अपने ब्रह्म-चर्य को छो
ड़ूंगा और आपकी इच्छा पूरी कर
ने के लिये उस स्त्री से पुत्र उत्पन्न
करूंगा॥१॥१०॥ ऐसा कहकर जर
त्कारु वहां से चल दिये और भ्रम
ण करने लगे परन्तु कोई कन्या नहीं
पाई तब दुःखी होकर वन में चले
गये और धीरे धीरे कहा कै मैं अ
पने पितरों का दुःख दूर करने को अ
पना विवाह पितरों के कहने से कर
ना चाहता हूं मुझ दरिद्री को कोई
अपनी अपनी कन्या जिसका भ
रणपोषण मुझे न करना पड़ै औ
र जिसका नाम मेरा सा होय उस

 मैं

कूं मैं मांगता हूं मुझ कूं भि दीजे॥
॥१८॥ सूतपुत्र बोले हे ऋ
षियो जरत्कार के ऐसा कहने में
वासुकि नाग के भेजे हुये सर्प
वासुकि के पास आये और कहने
लगे कि महाराज जरत्कार विवाह
के लिये अब कन्या ढूंढते फिरते
हैं॥१९॥ यह सुन कर वासुकी अ
पनी बहन को वस्त्रादि के पहरा
कर जरत्कार के पास ले गया औ
र कहा की इस कन्या को आप ली
जिये जरत्कार ने उस को नहीं लि
या और कहा कि मैं ऐसी स्त्री चा
हता हूं जिस का नाम मेरे से मि
लो होय और मुझे उस के खाने
पहरने का उपाय न करना पड़ै

॥२५॥ आदि पर्व॥

॥२॥२३॥ इति श्री भाषा महा
भारते आदि पर्वणि षट्चत्वारिं
शोऽध्यायः॥४६॥ सैंतालीसवा
अध्याय॥ वासुकि की बहन का ज
रत्कार से बिवाह होना उसका ग
र्भ धारण करना और जरत्कार
को तपस्या कूं चला जाना॥ सूत
जी बोले है कै बियो जरत्कार की
यह बात सुनकर बासुकि नाग बो
ला कि मैं अपनी बहन का पालण
पोषण करूंगा आप इस बात की
चिन्ता न करो जरत्कार बोला अ
च्छा यह तेरी बहन हमारी कोई कि
सी तरह की अवज्ञा करैगी तो फिर
मैं इसकूं छोड़ दूंगा बासुकी ने क
हा बहुत अच्छा आप इसके साथ
विवाह किजिये यह सुनकर जरत्का

॥२३१॥ आदिपर्व॥

१ वासुकि के साथ उस के घर गया॥

२॥४॥ और वेद विधी से उसको

पाणी ग्रहण किया॥५॥ और वासु

कि ने उन को रहने के लिये एक व

हुत सुन्दर रमणीक घर जिस में स

व संपत्ति और विहार की चीजें र

क्खी थी और एक वहां सुन्दर मन

को लुभाने वाली सेज बिछ रही थी

ऐसा स्थान बता दिया जरत्कार अ

पनी स्त्री कर के साथ उस स्थान में

गये॥६॥७॥ और अपनी स्त्री से क

हा कि मेरी इच्छा से विपरीत ना उल

टी बात न करना जो ऐसा करै गी तो

मैं तुझ कूं छोड़ कर चला जाऊं गा॥

८॥९॥ यह सुन कर वासुकी

कि बहन बोली के बहुत अ

च्छा मैं सदैव आप की इच्छा के

अनुसार रहूं जी ॥१०॥ इसके उप
रान्त वे दोनों आनंद पूर्वक हां रह
ने लगे वासुकि की बहन बहुत बत
भयभीत रहकर मुनि की सेवा क
रती थी और कभी उनकी आज्ञा
के विपरीत नहीं करती थी ॥११॥
ऋतु स्नान के आने पर वासुकि की
बहन के गर्भ रहा कय साग्नि सका
अग्नि की भाक के चमत्का था औ
र दिन दिन ऐसे बढ़ता था जैसे
शुक्ल पक्ष में चन्द्रमां व
ढता है ॥१२॥१४॥ एक दिन जर
त्कार अपनी स्त्री की जांघ पर सि
र रखकर थका जांघ का तिकना
लगा कर सो गये तब सांझ हुई
और सूर्य अस्त होने लगे [redacted]
॥१५॥ उस समय संध्या करने

को समय जान कर वह भयभीत हो क
र विचार ने लगी ॥१८॥ कि जो मुनि
को जगाती हूं तो मुनीश्वर मुझ पर क्रो
ध करैं गे, और जो नहीं जगाती हूं तो
तो संध्या छूट जाने से धर्म का लोप हो
गा, और इस प्रकार से कुछ देर मन के
ध्य विकल्प करके अंत को धर्म का
लोप होना बड़ा दोष समझ कर अ
त्यन्त मधुर वोली से अपने प्राणप
ति को जगाने लगी हे महाराज अब
सायंकाल हो गया है सूर्य अस्त होने
वा ले हैं उठ कर के नमस्कार को ध्य
क्रोधी हो कर उठे और अपनी स्त्री से बो
ले कि तैं ने मेरा बड़ा अपमान कि
या ॥२२॥२४॥ स्त्री वोली महाराज
मैं ने आपका अपमान नहीं किया है
आपके धर्म का लोप समझ कर आ
पको जगाया है जरत्कारु वोले कि सू
र्य मेरी अंजली लिये विना अस्त न

हीं हो सक्ते हैं जहां हमारे ऐसे मनुष्यों
को आप मान होता है वहां हम नहीं रह
ते हैं हमारा कहना झूठ नहीं है अब हम
मनुष्य छोड़ते हैं तुम अपना भाई के
घरमें रह और कुछ पोच मत कर॥
२५॥३२॥ यह कहकर जब चल
नें लगे उनकी स्त्री यह देखकर रो
नें लगी कंठ रुक गया और फेर
गद् गद् बाणी करके बिनय पूर्बक
बोली महाराज आप को मुझे छोड़
ना उचित नहीं है मैं निरपराध औ
र धर्म रत हूं और जिस लिये बास
कि ने मुझे आप को दिया है वह भी
व नहीं हुवा अब बासु कि मुझ से क्या
कहैगा उसने मुझे आप को
आप से एक पुत्र उत्पन्न होने के
लिये दिया था जो महाराज आप से मे
रे एक पुत्र हो जाता तो मेरे कुल को

लोग सुख पूर्वक रहते जो भी न हो
ते थे के कारण से वे लोग अब
अत्यन्त ही दुःखी हो [redacted] जो मेरे
महाराज मुझ निरपराध को छोड़
ना आप को उचित नहीं है ॥३३॥
४०॥ यह सुनकर जरत्कार बोले कि
तू इस बात की चिन्ता मत कर तेरे
एक पुत्र बड़ा तपस्वी सुन्दर और सू
र्य के समान तेज रखने वाला उत्प
न्न होगा मेरा कहा झूठ नहीं होता
ऐसा कहकर जरत्कार वहां से तप
स्या करने को चले गये॥४१॥४२॥
इति श्री भाषा महाभारते आदि प
र्वणि सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः॥४७
॥अड़तालीसवां अध्याय॥ आस्ती
क के उत्पन्न होने की कथा॥
सूत पुत्र बोले हे ऋषि यो जरत्का

के चले जाने पर उन की स्त्री आप ने
भाई वासुकि के पास आई और वासु
कि से सब हाल रो रो कर कहा॥१०
वह सुन कर बड़ा दुःखी हुवा और बो
ला कि तू जानती है के किस लिये तु
झे मैं ने जरत्कार को दिया था जो उस महा
त्मा से तेरे एक पुत्र पैदा हो जाय तो वह
हम सब की सर्पों यज्ञ में रक्षा करे॥३॥
४॥ यद्यपि यह बात तुझ से पूछनी
अयोग्य है परन्तु बड़ा काम होने से मु
झे यह बात तुझ से पूछनी पड़ी कि तु
झे उस महात्मा से गर्भ भी है या नहीं
मैं तेरे पति के पीछे पीछे उसे लाने को
नहीं जा सकता हूं क्योंकि उन का स्वभा
व उग्र है ऐसा न हो कि मुझ से अप्रस
न्न होकर मुझे श्राप दे दें॥५॥६॥ अ
न जो कुछ उन्हों ने तुझ से चलते समय
कहा है वह कह कर मेरे संदेह को

दूर कर॥ ८॥ यह सुन कर वासुकि
बहन बोली कि मैं ने मपुत्र के वा
स्ते उन सती चलती वखत पूछा था
सो वह (अस्ति) कह के चले गये उ
न का उनका कहा हुआ सहज मैं
भी झूठ नहीं होसकता है पूछी हुई बा
त वह झूठ क्यों कर कहें उसी से तुम
अपने मन का संदेह दूर करो तुम्हारा
मनोरथ निश्चय सिद्ध होजा॥ ९॥ १३॥
यह सुन कर वासुकि और सब सां
प बहुत प्रसन्न हुये और नाना प्रका
र की सामग्री लेकर अपनी बहन का
पूजन किया॥ १४॥ १५॥ सूत जी
बोले हे ऋषियो थोड़े दिनों में उस वा
सुकि की बहन का गर्भ पक्ष के पह
ले के चन्द्रमां की तरह बढ कर सुन्दर ल
ग्न में उस गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न

हुआ और उसका नाम आस्तीक र
क्खा क्योंकि उसका पिता अस्ति कार उ
सकी माता से आस्ति कहकर वन को च
ला गया था थोड़े दिनों में जब आस्ती
क अपने माता के घर में बड़ा हुआ त
ब उसने च्यवन ऋषि से सब वेद
और वेदांग पढ़ लिये ॥२६॥१८॥
और नागों की रक्षा में रहकर आन
न्द पूर्वक नाग लोक में विचरने ल
गा और सब सर्पों को शिवजी के स
मान बढ़कर सुख दिया और सर्प उ
सके प्रताप से सर्पसत्र यज्ञ से निर्भ
य होकर रहने लगे ॥२७॥२२॥ इति
श्री महाभाषा महाभारते आदी
पर्वणि अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥
उनचासवां व पचासवां अध्या
य॥ शौनक ऋषि बोले हे सूत

त्र अब यह कृपा करके राजा जन्मेज
य का अपने मंत्रियों से अपने पिता
के मरने का हाल पूछने की कथा कहि
ये हैं तब बोले॥१॥२॥ हे ऋषियो
एक समय राजा जन्मेजय नें अपन
ने मंत्रियों से कहा के आप लोग हम
मारे पिता के मरने के सब हाल को अ
च्छी तरह जानते हो मैं भी सुना चाह
ता हूं आप उस सब को कहिये मैं सु
न कर अपने कल्याण का काम क
रूं जो बिपरीत बिपरीत नहीं करूं
गा॥३॥४॥ यह सुन कर धर्म के जा
नने वाले मंत्री बोले कि महाराज आ
प के पिता प्रजा का पालन अच्छी तर
ह करते थे चारों वर्णों की धर्म से रक्षा
करते थे बड़े पराक्रमी थे पृथ्वी की र
क्षा करते थे उन के न बहुत से बैरी थे
और न वे किसी से बैर मानते थे

प्रजापति के समान थे और रस वसे राक
सा भाव रखते थे उनके राज्य में ब्राह्म
ण क्षत्री वैस्य और शूद्र अपना अप
ना कर्म सावधान होकर करते थे वि
धवा स्त्री दीन अनाथ और अहीनप
क्षियों का पालन पोषण करते थे उन
को देखकर मनुष्य ऐसे प्रसन्न होते
थे जैसे चन्द्रमा को देखकर चकोर
प्रसन्न होती है उन्होंने महाराज कृपा
चार्य से धनुर्विद्या पढ़ी थी आपके
पिता जो विन्द भक्त शास्त्र नीति के
जानने वाले जितेन्द्रिय और बुद्धि
मान थे पाण्डु थे उन्होंने इस पृ
थ्वी का राज किया उपरांत परम
धाम को चले गये ॥५॥६॥ उनके
पीछे आप राजा हुये अब आप इस
कु [illegible] पृथ्वी पर राज्य करें

राज कि ज्ञिये ॥१८॥ यह सुनकर ज
न्मेजय बोला कि इस कुल में कभी
ऐसा कोई भी राजा नहीं हुवा जिस
ने प्रजा को पालन, आदि राज्य क
र्म धर्म से न किये हों जैसा कि हम
ने अपने दादे परदादों का हाल सु
ना है, अब, आप यह कहिये कि हमा
रे पिता कैसे मरे ॥१९॥ २०॥ यह
सुनकर मंत्रियों ने राजा परीक्षि
त के, अहेर खेलने जाने एक मृग के
बाण मार ने उस के वहां से वन में भा
गने राजा का उस का पीछा करने
वहां मृग का हाल मौन व्रत ऋषि
से पूछने उन के कुछ न बोलने प
र राजा का उन के गले में मरा सर्प
डालने उस हाल को सुन कर ऋषि
के पुत्र शृंगी को राजा को शाप देने
म निकाल के पास, अपने पिता पास मे

जो कर प्रताप का हाल कहना राजा का प्रताप की निंद जिको उपाय कर नां तक्षक का राजा को काटनें आतें हम एक कश्यप मुनि को जो राजा को अच्छा करनें को आते थे तक्षक से धन पाकर लौट जाना और तक्षक के काटने से राजा का मर जाने का सब हाल जो हम तुमसे पहले बर्णन कर चुके हैं क्रम से कहा॥२९॥६२॥ यह सुन कर राजा जनमेजय बोला कि कश्यप जी और तक्षक का संबाद तो बन में हुआ था यहां कैसे मालूम हुवा॥६३॥६४॥ हम जानते हैं कि तक्षक ने कश्यप जी का मंत्र बल देख कर यह विचार किया के मेरे काटे हुये को यह जिला देंगे तो मेरी हांसी होगी इससे उस ने कश्यप जी को राह से धन देकर लौटा दिया हम अब उपाय करके तक्षक को दंड देंगे यह कहिये कि यह हाल यहां किस ने आकर कहा

॥६५॥६९॥ ~~तदेत को पपा सें~~
~~[illegible]~~
यह सुन कर मंत्री बोले कि यहां को
एक लकड़हारा उसी वृक्ष पर ल
कड़ी तोड़ने चढ़ा था उस को तक्षक
ने नहीं देखा न कश्यप जी ने तक्ष
क के काटने पर उस वृक्ष के साथ
और भी भस्म हो गया था और जब
कश्यप जी ने उस वृक्ष को सरजीव
न किया तब वह लकड़हारा भी उस
के साथ जी उठा उस ने यहां आ क
र यह सब वृत्तान्त कहा था अब जो
कुछ आप की इच्छा हो यसो तुम
करो ॥६०॥९४॥ सूत जी बोले हे
ऋषियो यह बात सुन कर राजा ज
न्मेजय शोक में डूब गये आंखों से
आंसू बहने लगे और क्रोध से

दोनों हाथों को मलमल कर बोले ॥१५॥ कि आप लोगों से मैं ने अपने पिता के मरने का हाल सुना अब मेरी इच्छा उस दुष्ट तक्षक को दण्ड देने की है क्योंकी उसने छल करके शृंगी ऋषि के शाप को केवल हेतु बना कर हमारे पिता को डसा॥१६॥२०॥ उस तक्षक के कारण यह बिगड़ न जाता जो काश्यप जी हमारे पिता को अपनी औषध के बल से जिवा देते परन्तु उस दुष्ट तक्षक ने उनको धन देकर राह में से उलटा फेर दिया इस कारण से मैं उत्तंक और आप लोगों की प्रसन्नता और अपने पिता के बैर लेने के लिये तक्षक को दण्ड दूंगा॥२३॥२५॥
इति श्री भाषा महाभारते आदिपर्व

इति एकोनपञ्चाशत्तम व पञ्चाशत्तमो
ऽध्याय॥४९॥५०॥ इक्यावनवां अध्या
य॥ राजा जन्मेजय के सर्प सत्र यज्ञ रचने की कथा॥ सूत बोले हे ऋषियो
राजा जन्मेजय ने मंत्रियों से प्रसन्न
होकर सर्प सत्र यज्ञ करने की प्रतिज्ञा
करी॥१॥ और अपने पुरोहित और
ऋत्विजों को बुलाकर कहा के तक्ष
क ने अपनी दुष्टता से हमारे पिता को
विना अपराध अपनी विष की अ
ग्नि से काटकर जला दिया इससे मैं
भी चाहता हूं कि अपने पिता का बद
ला लेने के लिये उस तक्षक को भाई
बन्धुवों सहित जलती हुई अग्नि में
जलाऊं आप लोगों को ऐसा कर्म क
रने की विधि मालूम है या नहीं य
ह सुनकर ऋत्विज बोले के इसका
करने के लिये सर्प सत्र यज्ञ पुरा

तों में बि ख्यात हैं ॥२॥ हम लोग उत्तम यज्ञ को करा सक्ते हैं और आप के सेवा राजा के सिवाय उत्तम यज्ञ को और कोई नहीं कर सक्ता है यह सुन कर जन्मेजय प्रसन्न हुये और उसी समय से तक्षक को भस्म हुवा मान ॥८॥ ऋत्विजों से बोले कि मैं उस यज्ञ को करूंगा आप उस की सामग्री इकट्ठी कीजिये ॥९॥ सूत जी बोले हे ऋषियो ऋत्विजों ने यह सुन कर उस सब देश को नाप कर यज्ञ करने के योग्य पृथ्वी पाई ॥१०॥ और उस पृथ्वी पर यज्ञशाला बनवाई इस के पीछे वहां बहुत धन धान्य आदि सब यज्ञ की सामग्री इकट्ठी करी गई और बहुत से वेद के जानने वाले तपस्वी ऋत्विलोग इकट्ठे हुये ॥११॥१२॥ ऋत्विजों ने राजा के सर्प सत्र यज्ञ का फल पाने के लिये राजा को दीक्षा दी ॥१३॥

और राजा ने सब यज्ञ करनेवालों का वर्णन किया और यज्ञ प्रारम्भ होने के पहले शिल्प शास्त्र के जाननेवाले ने उस यज्ञशाला के बनानेवाले कारीगरों ने ऐसा कहा कि एक ब्राह्मण के कारण से यह यज्ञ समाप्त न होवेगा॥ १४ ॥ १६॥ यह सुन राजा जन्मेजय ने दीक्षा लेने के पहिले द्वारपालों को आज्ञा दी कि हमारी बिना आज्ञा यज्ञ में कोई न आने पावै॥ १७॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि आस्तीकपर्वणि सर्पसत्रे ॥ अध्याय ॥ ५१ ॥ बावनवां अध्याय॥ राजा जन्मेजय के सर्पसत्र यज्ञ करने की कथा॥ सूत० बोले हे ऋषियो इसके पीछे यज्ञ होने लगा सब ब्राह्मण अपने अपने कर्मों को करने लगे॥ १॥ और ऋत्विजों ने जिनके धूम्र से कपड़े काले और आंखें लाल हो गई थी मन्त्र से अग्नि में होम किया॥ २ और अग्नि के मुख में सर्पों का आवाहन किया॥ ३॥ और सर्प मन्त्र के बल से निर्बल होकर आ आकर अग्नि के गड्ढे में गि

रनें लगे॥४॥ बालक तरुण और बूढ़े पर्वत काले और नीले अनेक प्रकार के सर्प कोई एक कोस का कोई एक योजन और कोई जौ के नाक की बरबर लंबे जिन का आकार किसी को घोड़े किसी का हाथी किसी का हाथी की सूंड़ के समान था एक दूसरे को बुलाते फड़कते श्वास लेते पर स्पर लिपटते चिल्लाते पुकारते लाखों पद्मों अर्बुदों असंख्य सर्प अबपाहो कर कोई पूंछ की ओर से और कोई मुख की ओर से उस अग्निकुंड में सन्ताके वल आक्रम से गिर गिर कर भस्म हो गये॥५१०॥

इति श्री भाषा महाभारते आदिपर्बणि द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥५२॥ त्रिपनवां अध्याय॥ जन्मेजयके ऋत्विज और सदस्यों के नाम॥ इतनी कथा सुनकर शौ० बोले हे सू० तपुत्र उस भयानक सर्पयज्ञ में ऋत्विज और सदस्य कौन कौन थे॥१॥२॥ सू० जी बोले सुनो भृगुवं शा में एक चंड नाम बाह्मण बड़े बेद के

ग्यानने वाले, और तपस्वी थे वे उस यज्ञमें हो
ता अर्थात् होम करनें वाले थे ॥३॥५॥ जै
मनीजी जो बड़े विद्वान, और बृद्ध थे वह सा
म वेदी ऋत्विज थे सांगरजी ब्रह्मा, और
पंगल ऋषि यजुर्वेदी ऋत्विज थे ॥६॥
और, अपने शिष्यों सहित व्यास जी महा
राज, उद्दालक, प्रमतक, श्वेतकेतु, पिं
गल, असित, देवल, नारद, पर्वत, आत्रे
य, कुंड, जठर, कालघट, वात्स्य, श्रुतश्र
वा, कोहल, देवशर्मा, मौद्गल्य, समसौर
भ और ॥८॥ बहुत से वेद के जानने वाले ब्राह्म
ण उस यज्ञ के सदस्य थे ॥९॥१०॥ हे ऋषि
यो उस यज्ञ में हजारो सर्प चिल्लाते हुए आ
काश से अग्नि में गिरते थे उनकी चर्बीकी
नदी उस अग्निकुंड से बह चली और सर्पों
के जलने की बड़ी कड़वी गंध वास फैल गई
॥११॥१२॥ और तक्षक जनमेजय के यज्ञ का
हाल सुनकर इन्द्र के पास गया और अप
नी रक्षा के लिये इन्द्र की शरण लई इन्द्र
ने उसे शरण दे कर उस से कहा कि
तू भय मत कर यहां तुझको यज्ञ से बाधा न

कर सकेगा ॥२३॥१६॥ हम तेरे वारे में ब्र
ह्मा जी से पहले ही कह चुके हैं यह
सुन कर नन्दक सुख पूर्वक इन्द्र के स्थान
में रहने लगा ॥२१॥१८॥ इस के उपरान्त स
र्पों के बहुत से जलने पर वासुकी नाग को
जिसका पति बाकी रह थोड़ा सा रह गया था॥
मोह हुवा ॥१९॥ और उस मोह में अत्यन्त
दुखी होकर अपनी बहन से बोला कि रा
जा जन्मेजय यज्ञ कर रहा है उस में मेरे सब
देह में जलन उठ रही है मुझे दिशा नहीं सू
झती चक्कर आते हैं और हृदा क्या घाती
पटी जाती है मैं जानता हूं कि मैं भी अब उ
स यज्ञ की घोर अग्नि में गिर कर मर जा
ऊंगा ॥२०॥२२॥ अब यह वही समय आ
या है जिसके लिये मैं ने तुझे जरत्कारु को
दिया था इसलिये अब तू अपने पुत्र को
जो वेद वेदांग के पार हो गया है बुलाकर
उस से हमारी सकुटुम्ब रक्षा करतेरा आ
स्तीक पुत्र निश्चय उस यज्ञ को बन्द कर
सकता है क्योंकि ब्रह्मा जी ने मुझ से पहले

इनबातोंकोकहाथा॥२३॥२६॥इतिश्री
भाषामहाभारतेआदिपर्वणित्रिपंचा
शत्तमोऽध्याय॥५३॥चौवनवां अ
ध्याय॥वासुकिकीबहनकाअपनेपु
त्रसेसर्पोंकीयज्ञसेरक्षाकरनेकीकथा
औरआस्तीककाजनमेजयकेपासजाना॥
सूतजीबोलेहेऋषियोवा[illegible]सुकि
कीबहननेअपनेभाईकीबातसुनकरअ
पनेपुत्रआस्तीककोबुलायाऔरउससे
कहाहेपुत्रतेरेमामानेमुझेतेरेपिताको
एककारणपाकरदियाथाउसकार
णकासमयअबआनपहुंचाहैइससम
यमेंतुझकोभीउचितकर्मकोकरना
चाहिये॥१॥२॥यहसुनकरआस्तीकबो
लामेरेमामानेतुमकोक्योंमेरेपिताकोदि
याथाऔरवहक्याकामहैजोमुझेअबक
रनाचाहियेमाताबोली॥३॥४॥हेपुत्र
सर्पोंकीमाताकद्रूनेअपनेपुत्रोंकोआ
ज्ञानमानन[illegible]नेकेकारणसेयहशापदि
याथाकितुमसबपसकीजलतीहुईअ

जिन में भस्म होजे, और ब्रह्मा जी ने का
द्रू माता से उस समय कहा था कि तेरा
श्राप सच्चा होगा॥५॥८॥ उपरान्त मेरे
मामा वासुकि ने देवताओं की शरण ली
देवता तेरे मामा को ब्रह्मा जी के पास लेग
ये॥९॥१०॥ और उनसे तेरे मामा की ओ
र से बहुत कुछ कह सुन कर तेरे मामा को
श्राप से छूटने की प्रार्थना॥११॥१२॥ त
ब ब्रह्मा जी ने कहा कि वासुकि की बहन
जरत्कारु नाम जरत्कारु ऋषि को विवाही
जावेगी उसका पुत्र सुकर्मी सर्पों को
श्राप से छुटावेगा॥१३॥ हे पुत्र इसका
रण से तेरे मामा ने मुझे तेरे बड़े तपस्वी
पिता जरत्कारु को दिया था॥१४॥ अ
ब वही समय आया है राजा जन्मेज
य सर्प सत्र यज्ञ कर रहा है तुझे चाहि
ये कि अपने मामा आदि के कुटुम्ब को
उस यज्ञ की अग्नि से बचा और उस नि
मित्त को पूरा कर जिस निमित्त मैं ने
तेरे पिता को ब्याहा था॥१५॥१६॥ यह सु

नकर आस्तीक अपनी माता से बोला कि बहुत अच्छा मैं रे सा तीक रूंगा और फिर अपने फिर अपने मामा वासुकि से कहा॥२१॥ कि मैं आप को पुत्र से छु टाऊंगा अब आप स्वस्थ होकर बैठो और भय को छोड़ दो मैं कभी हंसी में भी झूठ नहीं कहता हूं मेरे कहे को आप सच मा नो मैं अभी [illegible] जन्मेजय के पास जाता हूं और उसे अपनी वाणी से प्रसन्न क रके उसका यज्ञ बंद करा [illegible] ता हूं॥१८॥

२२॥ वासुकि यह सुनकर बहोत खुसी हुये मानो किसी ने जीव दान दिया और यह बोले कि मेरा शरीर घूम रहा है हृदा छाती फटी जाती है मुझे ब्रह्म दण्ड की पीड़ा से दिशा दिखाई नहीं देती है॥२३॥ यह सुनकर आस्तीक ने कहा कि आप कि सी तरह का भय और संताप न करो मैं आ प को अग्नि के भय को दूर करके अग्नि ही समान तेज रखने वाले ब्रह्म दंड के

तेजकौ नापा कहंू गा॥२४॥२५॥ सूत
जी बोले हे ऋषियो ऐसा कहि ये आस्ती
कनें वासुकि कै दुःख कों उसकी देहसें
उतार कर अपने सरीर पर रख लि
या और सर्पों की रक्षा के लिये वहां से रा
जा जन्मेजय के पास चले॥२६॥२७॥ जब
यग्य साला के पास पहुंचे तब द्वार पाल
ने कहा कि बिना महाराज की आग्या बि
गर भीतर नहीं जान पावो गे हुकम नहीं
है आप ठहरो मैं खबर उनकूं देता हूं
ऐसा कह के द्वारपालने राजाकूं जा ख
बर करी राजाने कहा अच्छा आने दो
आस्तीक राजा की आग्या हुकम पाके
र भीतर गया जग्य साला मैं जहां बडे ब
डे तपस्वी ग्रहस्थ और ऋत्विग बैठे थे
यग्य की प्रसंसा करता हुवा करते हुये पहुं
चे॥२८॥३०॥ इतिश्री भाषा महाभारते
आदिपर्व्वणी चतुःपंचासत्तमोऽध्या
यः॥५४॥ पचपनवां अध्याय॥ आस्ती
कका यग्य सभा मैं पहुंच कर सदस्य के ऋत्वि

जे यग्य और राजा की स्तुति करना॥ सू० बोले हे ऋषियो आस्तीक यग्य मैं पहुंचकर यग्य सदस्य ऋत्विज और राजा की स्तुती करने लगे हे राजन लेने वाले आप साहू वा हो जयसे पहले चन्द्रमा वरुण प्रजापती इन्द्र यम राज हरिमेध रंतिदेव गय काशि बिन्दु कुबेर नृग अजमीढ रामचन्द्र यग्य में तिय धिष्ठिर अजमीढ बंपी और व्यासजी आदि यग्य हुये हैं समतुम से आपने य्या रों का कल्याण चाहते हैं ये॥१॥९॥ आप के यग्य कराने वाले ऋत्विज लोग सूर्य के समान तेज रखने वाले हैं पृथ्वी पर कोई विधी ऐसी नहीं है जिसे ये न जानते हों इनको दान दिया हुवा कभी नाश नहीं होता॥२॥ और व्यासजी महाराज सब के पितामह हैं जिनकी दीक्षा पाकर शास्त्र ऋत्विज होजाते हैं और पृथ्वी पर अनेक शुभ कर्म करा

तेहैं॥९॥ और अग्निदेव जिनके नाम विभावसु, चित्रभानु, हिरण्यरेता, ठुठुक, कृष्णवर्त्मा, प्रदक्षिणावर्त शिखा हैं तेरी होमी हुई हब्य को देवताओं को देते हैं॥१०॥ प्रजा के पालन में बराबर इस नरलोक में कोई राजा नहीं है हम तुम्हें देखकर प्रसन्न हुये तू धर्मराज और वरुण के समान उदार है॥११॥ इन्द्र और लोकपाल की समान प्रजापालक है तू बड़ा वीर है तेरी बराबर धीरज धारी कोई नहीं॥१२॥ तेरा तेज खट्वांग, नाभाग, दिलीप, ययाति और मान्धाता के तुल्य है तू भीष्म की समान तेजस्वी वाल्मीकि की समान पराक्रमी वशिष्ठ के समान क्रोध को वश में करने वाला इन्द्र के समान प्रभुता का रखने वाला नारायण के समान कान्तिधारी यमराज के तुल्य धर्मचारी कृष्ण के समान गुण निधान लक्ष्मी और य

सो का वासस्थान पर परशुराम के समान
अस्त्र शस्त्र जानने वाला तेजस्वी अग्नि
और और वैरिसियों के तुल्य तपस्वी और
भागीरथ के समान दुर्धर्ष को है ॥१३॥
१६॥ सूत जी बोले हे ऋषियो आस्तीक
की यह स्तुति सुनकर सब सदस्य ऋ
त्विज राजा और अग्नि प्रसन्न हुये और रा
जन्मेजय उन सब ब्राह्मणों के मानसी
संकल्प को जान कर बोला ॥१७॥ इति श्री मा
धामहाभारते आदिपर्वणि पंचपंचाशत्त
मोऽध्यायः ॥५५॥ छप्पनवां अध्याय ॥
आस्तीक का राजा जन्मेजय से वर मांगना क
र सर्पसत्र यज्ञ को बंध करना ॥ सूत जी
बोले हे। ऋषियो राजा जन्मेजय
सब ऋषियों से बोला कि यह बाल
क वृद्धों की तरह बात कहता है इस
से मैं इसे वृद्ध ही मान कर वर देना चा
हता हूं आप की क्या सलाह है ॥१॥ स
दस्य और ऋत्विज बोले कि राजा ओं

को ब्राह्मणों का बालक भी मान्य है
और जो विद्वान हैं वह तो सर्व प्रापूजन
नयोग्य है आप बुद्धिमान हैं आपसे
और क्या कहा जाय तक्षक भी आया
ही चाहता है यह सुनकर राजा आ
स्तीक को वर देने को ही था कि इ
तने में होता ब्यग्र चित्त होकर बोला
कि महाराज तक्षक नहीं आता है २॥
३॥ यह सुनकर जन्मेजय बोला कि
[illegible]न हे ब्राह्मणों अब ऐसा कर्म
[illegible]में सा करो जिसमें तक्षक आके
र अग्नि में गिरै यह यज्ञ समाप्त हो
॥४॥ [illegible] ऋत्विज बोले महारा
ज हम लोग बहु प्रकार से मंत्र पढ़
ते हैं पर तक्षक नहीं आता है वह
भय से पीड़ित होकर इन्द्र की शरण
गया है इन्द्र ने उसे यह वर दिया है
कि तुम यहां निर्भय बसो यहां मंत्र
बल नाही चलैगा इसमें जानपड़
ता है कि जो परसंग के वक्ता ने

के समय पुराणों के जाननेंवाले सूतनैं और ब्राह्मणोंनें कहा था कि वैही होनहार है ॥५॥ १॥ यह सुनकर राजा जन्मेजयने क्रोध किया और होता से कहा कि अब ऐसा उपाय करो जिसमैं वह सर्प इन्द्र सहित चला आवै यह कहकर राजानें मंत्रों के जाननेवाले ब्राह्मणों सें फिर क्रोध करके कहा महाराज तक्षक तो इन्द्र के घर गया है अब आप उपाय करें कि तक्षक सहित इन्द्र का आवाहन करके दानों को अग्नि मैं होम दे ॥८॥ ११॥ राजा की यह बात सुनकर होतानैं इन्द्र का आवाहन किया और इन्द्र तक्षक सहित जिनके

अंगामहामंत्रसें खौलजाये थे स्वर्ग
सें चले कुछ देर तक देवेन्द्र आकाश
में दुखित रहे उपरान्त उस पक्ष को दे
खकर भयभीत हो तक्षक को छो
ड चले गये इ[illegible] न्द्र के चले जाने प
र तक्षक मंत्र बपासें सब घमंड भूल
गया और ब्याकुल अंगा होता हुबा अ
ग्नि के पास पहुंचा॥१२॥१५॥ उसको
देखकर ऋत्विजों ने कहा हे राजा ते
कार्य तो सिद्ध हुवा अब तुम इस ब्राह्म
ण को बर दो॥१६॥ जन्मेजय कहा महा
राज आप बर मांगिये मैं आपको जो
मांगो गे सोही दूंगा॥१७॥ राजा यह कह
ने ही पाये थे कि इतने में ऋत्विजों ने फि
र बोलो देखो राजा जन्मेजय तक्षक
स्वर्ग से चिल्लाता चला आता है औ
र इन्द्र के छोड़ जाने से बिकल मूर्छि

त और घूमैं रखा रखा कर ऊंचे स्वास लेता है॥१८॥१९॥ सूत बोले है कि षियो जब आस्तीक नें देखा कि तक्षक अग्नि के समीप आ पहुंचा है थोड़ा ही अंतर है तब वह जन्मेजयसे बोला॥२०॥ कि आपनें जो वर हमको देनेका था सो दीजिये हम यह वर मांगते हैं कि तुम्हारा यह सर्पसत्र यज्ञ अब बंद हो वे और इस समय से पाछे इसमें सर्प न गिरें॥२१॥ यह सुनकर जन्मेजय बोला के आप सोना चांदी गाय और जो कुछ इच्छा हो सो लीजिये परन्तु हमारे यज्ञ को न बंद न हीं कीजिये॥२२॥ २३॥ आस्तीक बोले कि हम को यह कुछ धन नहीं चाहिये हम तो केवल आपका यज्ञ बंद करना चाहते हैं॥२४॥ राजा ने बार बार यही कहा कि और जो वर इच्छा होय सो मांग लो परन्तु हमा

रायसवंदनकरोपरन्तु आस्तीकनेय
हीउत्तर दियाकि मुझे और वरनहींचा
हिये॥२५॥२६॥ इसकेउपरान्तसबस
दस्य और ऋत्विज बोलेकि हे राजा आ
बकुछ चिन्ता नकरो वरदो और सर्प
सत्र यज्ञ को बंद करो उनकी बातसुन
कर राजा ने ब्राह्मण को वरदिया, और
सर्पसत्र यज्ञ को बंद करो उनकी बात
सुन कर राजा ने ब्राह्मणको वर दिया
और सर्पयज्ञ को समाप्त किया॥२९॥
इति श्री भा ला महाभारते आदिपर्वणि
षट्पंचाशत्तमोऽध्याय॥५६॥ सत्तावन
वां अध्याय: उन मुख्य मुख्य सर्पों के
नाम जो यज्ञअग्नि में भस्म हुये१ इतनीक
था सुनकर सौनक ऋषि बोले
कि मैं उन सब सर्पों के नाम सुना चाह
ताहूं जो उस यज्ञ की अग्नि में गिरक
र भस्म हुये उन सब के नामों को नहीं
कहसक्ता हूं॥२॥ परन्तु उन में मुख्य

मुख्य सर्प थे उनके नाम ये हैं॥३॥ पहले वासुकि नाग के कुल के [redacted] सर्पों को नाम कहता हूं जो नीले काले और श्वेत आदि अनेक रंग के बड़े विषधारी और कायाधारी थे प्रधान प्रधान उनके नाम ये हैं कोटिश, मानस पूर्ण, पाल, [redacted] पाल, हलीमक, ॥४॥ पूर्ण, पिच्छल, कौणप, चक्र काल वेग, प्रकालन, हिरण्यबाहु, शरण, तक्षक और काल दंतक॥६॥ और तक्षक कुल के सर्पों के मुख्य सर्पों के नाम ये हैं पुच्छाण्डक, मंडलक, पिंड सेक्त, और भेणक॥७॥८॥ उच्छिखक, शरभ, भंग, बिल्वतेजा, विरोहण, शिली, शलकर, मूक, सुकुमार, प्रवेपन, मुद्गर, शिशुरोमा, सुरोमा, और महाहनु॥९॥१०॥ और ऐरावत सर्प के वंश के नागों के प्रधान ये हैं पारा

वत, पांडर, हरिण, कृष, बिहंग, पा
रभ मेद, प्रमोद और संहतापन और
कौरव्य कुल के मुख्य मुख्य ये नाम हैं
॥११॥१२॥ शरक, कुंडल, वेणी वेणी
स्कन्द, कुमारक, बहुक, श्रृंगबेर, धू
र्तक, प्रात, आतक, धृतराष्ट्र और ना
गवंश के मुख्य सर्पों के ये नाम हैं ॥१३
॥१४॥ शंकु, कर्ण, पिठरक, कुठार,
मुख्य सेचक, पूर्णांगद, पूर्णमुख,
प्रहास, शकुनि दरि, अमाहठ, कामठ
क, सुषेण, मानस, अव्यय, भैरव, मुं
डवेदांग, पिशंग, उद्रपारक, ऋषभ
भ, वेगवान नाग, पिंडारक, महाह
नु, रक्तांग, सर्व सारंग, समृद्ध, प
ट वासक, वराहक, वीरणक, सु
चित्र, चित्रवेगिक, पराशर, तरुण
क मणि, स्कंध, और आरुणि ॥१५॥

१९॥ सूत बोले हे ऋषियो मुख्य मुख्य
नागों के नाम मैं ने कहे इन सबके पुत्र
पौत्रादिक असंख्य थे किसी के तीन
किसी के सात और किसी के दश शि
र थे और उनका विष का अग्नि के
समान था कोई पहाड़ की सिखर की
बराबर था कोई एक योजन और को
ई दो योजन लम्बे थे ऐसे ऐसे कोटिन
सर्प जिनकी संख्या कोई नहीं कहस
का है माता के शाप से जन्मेजय के
यज्ञ मे आये और भस्म होगये॥२०
॥२४॥ इति श्री भाषा महाभारते आ
दिपर्वणि सप्तपंचाशत्तमोऽध्या
य॥५७॥ अट्ठावनवां अध्याय॥ आ
स्तीक का जन्मेजय से सर्पयज्ञ बंद क
रने का बर मांगना और जन्मेजय का
बरदान देकर यज्ञ समाप्त करना॥
सूत बोले हे ऋषियो आस्तीक ने
टेक और बड़ा अद्भुत बात की वह भी

सुनोइन्द्र आस्तीक को वर मिलने मैं
देरि देखकर भयसे तक्षक को छोड़क
र चला गया और बड़ी देर होगई परन्तु
तक्षक अग्नि मैं नहीं गिरा तब राजा
के मन मैं बड़ी चिन्ता यह हुई के मंत्र से आ
वाहन करने पर भी तक्षक स्वर्ग से अ
ग्नि मैं क्यों नहीं गिरता है ॥१॥३॥ यह
सुनकर शौनक ऋषि ने पूंछा कि
हे सूत पुत्र जी क्या ब्राह्मण मंत्र विधि
भूल गये थे जिस से ऐसा हुवा ॥४॥ सू
त बोले नहीं जब आस्तीक ने देखा कि
तक्षक अग्नि में गिरने चाहता है तब
तीन बेर तिष्ठ तिष्ठ अर्थी बैठकर कहा
॥५॥ उस के वचन से वह तक्षक आका
श मैं ~~बैठ गया~~ ठैर गया इस के पीछे रा
जा सब सदस्य ऋत्विजों के कहने से बो
ला कि आस्तीक का कहना सत्य होय १
हमारा यह कर्म पूरा हो और सर्प निर्भ
य होय आस्तीक प्रसन्न होकर और वह

त्रौ नौ स्य सर्प भय भवेत् ॥ २३ ॥
यो जरत्कारु (णा जातो जरत्कारौ महा
यशा। आस्तीक सर्पसत्रे व पन्नगा
न्यो भ्यरक्षत तंस्मर न्तो महाभाग
तन्मां हिंसितु मर्हथ ॥ २४ ॥ सर्पापस
र्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविषजन
मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्म
र ॥ २५ ॥ आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा
यः सर्पो न निवर्तते शतधाभिद्यते
मूर्धा शिंशवृक्षफलं यथा ॥ २६ ॥
इतनी कथा सुना कर सूत बोले हैं
ऋषियो सर्पो से यह वरदान पाकर
आस्तीक ऋषि वहां से चले गये औ
र पुत्र पौत्र युक्त होकर कुछ काल
में स्वर्गवासी हुये ॥ २७ ॥ २८ ॥ इस आ
स्तीक के चरित्र सुनने वाले को सर्पों
का भय कभी नहीं होगा ॥ २९ ॥ इस प्रक
था को प्रमिति नाम भार्गव ने जै

॥३६५॥ आदिपर्व॥
जय से अपने पुत्र रुरु को सुनाया
था वही मैं ने तुम [illegible] से भी कही है ३०
॥३१॥ यह वही आस्तीक की कथा
है जो डुंडुभ सर्प ने कही थी और
उस के सुनाने को आप ने मुझ से
कहा था॥३२॥३३॥ इति श्री मा
हा महा भारते आदिपर्वणि अष्ट
पंचाशत्तमो अध्यायः ५८॥ उ
नसठवां अध्याय सौनक ऋषि
को सूत पुत्र से महाभारथ कथा मैं
कुरु पांडव बृतान्त सुन ने की इच्छा
करना॥ शौनक ऋषि बोले कि हे सू
तजी भृगु बंश की सब कथा सुन
न कर हम तुम से बहुत प्रसन्न हु
ये अब तुम कृपा कर के महाभारत
सम्बन्धी कुरु पांडव बृतान्त
जिस राजा जन्मे जय ने अपने

किये बैसम्पायन सर्प सत्र यग्य मे
ब्यासजी से पूछाथा और ब्यासजी
महाराजने अपने शिष्य बैशम्पा
यनको उसे सुनानें की आग्याकी ब
रनन कि जिये सूतजी बोले बहु
त अश्चर्य मैं आदि से सब कथा कह
ता हूं आप सुनिये मुझे भी इस कथा
के कहनें मैं आनन्द होता है॥१॥१०॥
इतिश्री भाषा महाभा ते आदिप
र्वे त्तीरकौन बहित मो ऽध्याय॥५९
साठ वां अध्याय॥ ब्यासजी का राजा
जन्मेजयके यग्य मैं जाना और रज
न्मेजय का कुरु पांडवों का वृत्तान्त पूछ
ना॥ सूतजी बोले हे ऋषियो राजा
जन्मेजयको सर्प सत्र यग्य करनें
के लिये दीक्षित सुन श्री ब्यासजी
महाराज जो परा शर मुनि से यमु
ना के दीप मैं सत्यवती माता के कु

मार अवस्था में उत्पन्न हुये थे आप
ने रिषियों सहित वहां आये ब्यास
जी अपनी माता के उत्पन्न होते ही
बड़े होगये और बिना बेद पढ़े अथवा
तपस्या किये सब बेदांगों में पार होग
ये ब्यास जी सगुण निर्गुण ब्रह्म के
जानने वाले ब्रह्म ऋषि कबि सत्य
ब्रत और पवित्र थे उन्होंने ही वेद
के चार भाग किये और राजा शान्त
नु के कुल को बढ़ाने के लिये पाण्डु
धृतराष्ट्र और बिदुर को उत्पन्न
किया सो ब्यास जी अपने वेद बेदांगों
के जानने वाले रिषियों समेत उस
जग्य में जहां राजा जनमेजय बड़े ॥२
ब्रह्मकल्प सदस्यों के बीच में ऐसे
बैठा था जैसे देवताओं में इन्द्र ॥१॥९
राजा उनको देख कर ऋषियों सहि

न उनके पास आया। और बड़े आदर से उनको ले जाकर सनहली बिछर वाले आसन पर बैठाया। और बिधि पूर्बक जैसे इन्द्र बृहस्पति की पूजन करता है पाद्य अर्घ आचमन और मधुपर्क आदि बिधि से राजा ने उनका पूजन किया॥१०॥१३॥ ब्यास जी उस पूजा को ग्रहण करके प्रसन्न हुये॥१४॥ राजा पूजन करके उनके पास बैठ गया। और उनसे कुशल पूछी ब्यास जी ने भी राजा से कुशल पूछी॥१५॥ उपरान्त सब सदस्यों ने आकर ब्यास जी का पूजन किया। और ब्यास जी नैं भी ~~राजा से कुशल पूछी~~ उनका शिष्टाचार किया इसके राजा जन्मेजय ने हाथ जोड़ के

र ब्यासजी से बीनती करी॥१६॥ कि
महाराज आपने कुरू और पांडवों को
आंखों से देखा है कृपा करके उन
की कथा कहिये॥१७॥ कि वे लोग
बड़े बुद्धिवान थे फिर किस लिये आ
पस में ऐसा बिरुद्ध हुआ कि उनके
युद्ध मैं सब राजाओं का नाश हो
गया॥१८॥ यह सुनकर ब्यासजीनें
अपने बैशम्पायन शिष्य को पास
बुलाकर कहा के जो कुरू पाण्डवों के
भेद होनें की कथा तुमनें हमसें सुनी
है उसको राजा जन्मेजय को सुनावो
॥१९॥२१॥ यह सुनकर बैशम्पाय
नजी गुरू की आज्ञा सिर पर धार
ण कर के कुरू पांडव की कथा इति
हास बर्णन करनें लगे॥२२॥२३॥
इती श्री भाषा महाभारते आदि

इति पर्वणि षष्ठितमोऽध्याय॥

६१॥ इकसठवां अध्याय॥ व्यासजी
को राजा जन्मेजय के यज्ञ में जाना
और जन्मेजय का कुरु पांडवों के व
तांत पूछना॥ सूतजी बोले हैं के
विप्रो राजा जन्मेजय को सर्प यज्ञ
से करने के लिये दीक्षित सुनकर
श्री व्यासजी महाराज जो पराशर मु
नि से यमुना के द्वीप में सत्यवती मा
ता के कुमार अवस्था में उत्पन्न हुये
थे अपने पिता पराशर के साथ हुए और
ये व्यासजी अपनी अपनी माता के उ
त्पन्न होते हीं बड़े हो गये और बि
ना पढ़े ही वेद पढ़े अथवा तपस्या
किये सब वेदांगों में पार हो गये व्या
सजी सर्वज्ञ ज्ञानी निर्गुण ब्रह्म के जान
ने वाले ब्रह्म वादी कवि सत्यव्रत और

र पवित्र थे उन्हों ने ही वेद के चार भा
ग किये और उन्हों ने शान्तनु के कुल को
बढाने के लिये पाण्डु धृतराष्ट्र और
विदुर को उत्पन्न किया सो व्यासजी
अपने वेद वेदांगों के जानने वाले
शिष्यों सहित उस यज्ञ में जहां राजा
जनमेजय बड़े बड़े ब्राह्मण कल्प सदस्यों
को बीच में ऐसे बैठा था जैसे

सूतजी बोले हे ऋषियो वैशम्पाय
नजी ने गुरु और ब्राह्मणों को न
मस्कार करी और जनमेजय से कहा
कि मैं महात्मा व्यासजी के बनाये हुये
कथा इतिहास को प्रसन्न पूर्वक कह
ता हूं तुम सब जो हम तुमको सुनने
के योग्य समझते हैं ॥६३॥ कुरु पां
डवों में भेद होना और पृथ्वी की दृ
य करने की वाले युद्ध की प्राप्ती का

संक्षेप कारण इस तरह पर है ॥४॥५॥
कि राजा पांडु के वन में मरजाने के पीछे
उनके पुत्र हस्तिनपुर में आये और थो
ड़े से दिनों में सब बेद और धनुर्बवि
द्या पढ़कर बड़े प्रबीण चतुर होगये
॥६॥ उनकी लक्ष्मि यथा देह बल उ
त्साह जितेन्द्रियता और बल देख
कर पुरवासी बड़े प्रसन्न हुये परन्तु
धृतराष्ट्र के दुर्योधनादिक पुत्र उ
नको न देख सके ॥७॥ और दुर्योधन
कर्ण और शकुनी की सलाह से कुल
जपद्ती की बरा कर जो सिंह की डाढ़ का
भी मांस निकालने के लिये यत्न कर
ता है अनेक उपाय करके पांडवों को
दुःख देने लगे ॥८॥९॥ पहले दुर्योध
न ने भीमसेन को मारने के लिये बि
ष दिया भीमसेन उसको पचा गये
॥१०॥ और गंगा के तट पर प्रमाण

॥२११॥ आदिपर्व॥

एक दिन घाट पर सो जाये दुर्योधन ने उस
सोते हुये वीर को बंधवा कर गंगा जी में
डाल दिया॥११॥ वह वीर जाग जाने पर बं
धन तोड़ कर चला आया और
फेर सो रहा तब दुर्योधन ने उस को वि
षधारी सर्पों से कटवाया फेर भी वो
नहीं मरा॥१२॥१३॥ विदुर जी पांडवों
की रक्षा इस प्रकार से करते थे जैसे इन्द्र
मनुष्यों की रक्षा करता है॥१४॥१५॥
उनकी रक्षा के कारण से दुर्योधना
दिक सब प्रकार के यत्न और परपंच
व उपाय करके थक गये पर उन पांडवों
को नहीं मार सके॥१६॥ इस से पीछे
दुर्योधन ने शकुनी और कर्ण की सलाह
से धृतराष्ट्र की आज्ञा लेकर पांडवों को
वारणावत नगर को भिजवाया॥१७॥
१८॥ और वहां उन को लाक्षा घर में
रहने को हुकम दिया पांडव वहां गा
ये और एक बरस तक उस घर में रहे पि
छे विदुर जी के कहने के माफक जो

जो पांडवों से हस्तिनापुर से चलते वख्त उस घर में से बचने को उपाय बताया था उस घर में आग लगाकर पुरोचन को जलाकर आप सुरंग की राह होकर माता कुंती कूं साथ लिये निकल गये और दुर्योधन के डर से अपने को परच्छन्न करने के वास्ते रात कूं चले गये राह में हिडंब नाम राक्षस को मारा ॥१९॥२४॥ और उस की बहन हिडंबा को भीमसेन ने ग्रहण करी जिस से ती घटोत्कच उत्पन्न हुआ वहां से पांडव चलकर एकचक्रापुरी नगर में पौहुचे ॥२५॥ एक ब्राह्मण के घर ब्रह्मचारी बण कर रहे और भीमसेन नें उस नगर के मनुष्यों के खानें वाले बक नाम राक्षस को मारा और पुरवासियों को सुख दिया इस के पीछे पांडव पांचाल देश के राजा की कृष्णा नाम कन्या का स्वयंवर सुनकर ॥२६॥२९॥ हो गये और द्रोपदी को पाकर राक

वर्षतक वहां रहे ॥३१॥ फिर जब प्रच
ट होगये तब वहां से हस्तिनपुर को च
ले गये हस्तिनापुर जाने के पीछे भीष्म
पितामह और धृतराष्ट्र ने उन से क
कहा कि तुम खांडव प्रस्थ नगर में जा
कर वसो और मत्सरता छोड़ कर रहो
॥३२॥३३॥ पांडव उनके कहे की मा
फक सब प्रकार के रत्न लेकर अप
ने सुहृद प्यारे मित्रों के साथ खांडव
प्रस्थ नगर में जा वसे ॥३४॥ और अ
पने शस्त्र के प्रताप से बहुत से राजा
वों को वशमें करके रहने लगे ॥३५॥३६
भीमसेन ने पूरब और अर्जुन ने उत्त
र की दिशा नकुल ने पश्चिम और स
हदेव ने दक्षिण दिशा ओं के सब रा
जाओं को जीत कर विजय नां जीतक
री ॥३७॥३८॥ पांचों पांडव सूर्य के स
मान तेजधारी होने से पृथ्वी उस स
मय में दूः सूर्य रखने वाली हुई ॥३९॥
इसके पीछे युधिष्ठिर ने अर्जुन को

जो प्राण से भी अर्जुन को प्यारा था किसी
कारण से बन को भेजा ॥४०॥४१॥ वहां
अर्जुन ने बारह वर्ष तक वास किया
फेर वहां से अर्जुन द्वारका चले गये
॥४२॥ और वहां श्री कृष्ण जी की छो
छोटी बहन सुभद्रा को हरा नां चे रणया
याने ले आये उसको लेकर रा से पोभा
को प्राप्त हुये जयसे लक्ष्मी कर के पाथ
बिष्णु की पोभा होवै ॥४३॥४४॥ इ
सके अनन्तर अर्जुन ने श्री कृष्ण चन्द्र
के पाथ खाडव बन को जलाकर अग्न
ग्नि देव को तृप्त किया ॥४५॥ और बा
सुदेव की सहायता से इन्द्र के बन को भ
स्म कर दिया ॥४६॥ अग्नि देव ने प्रस
न्न होकर अर्जुन को गांडीव धनुष दे
तरकशा का जिसमें बाण कभी खाली
न जाय और एक अरथ जिसकी ध्व
जा पर हनुमान जी की मूर्ती थी सो दि
भी दिया ॥४७॥ और अर्जुन ने यमना

मरुदैत्यको अग्निमें जलता हुवा देख कर उसकूं बचाया था उसने पांडवोंको राकव होते अत्यन्त सुन्दर रतनजटितसभा बनादई ॥४८॥ उस सभामें दुर्योधनने लोभ किया और पीछे पाकुनीके साथ जुवा खेलकर युधिष्ठिरसे छल करके सर्व धन सब ठाठ बाट हर लिया याने जीत लिया और बारह बर्षका वनोवास दिया ॥४९॥ पांडव बारह बर्षन कतो वनमें रहे तेरवे बर्षमें बिराटनगर मैं गुप्त होकर के रहे और चौदवे बर्षमे युधिष्ठिरने वनसे लौटकर अपना सब धन और राज मांगा और वह न मिलने के कारण से युद्ध क्या लड़ाई आपसमें हुई उस युद्धमें पांडवोंने क्षत्री कुलको मारकर राजा दुर्योधनको मारा ५०॥५१॥ और संपूर्ण राज लेलिया जन्मेजय इस प्रकार से कुरुपांडवोंमें भेद होकेर युद्ध हुवा॥५२॥ इति श्री भाषा महाभारते आदिपर्व णि राक षष्ठीतमोऽध्याय॥६१॥

वां सठवां अध्याय॥ जन्मेजय का वैश
म्पायन से महाभारत कथा विस्तार
सहित पूछना। और वैशम्पायन को
महाभारत महात्म कहना॥ सूतजी
बोले हे ऋषियो इतनी कथा सुनके
र राजा जन्मेजय वैशम्पायनजी से बो
ले कि महाराज आपने कु[illegible] हुए ओ
र पांडवों का वर्णन तो संक्षेप करके सु
नाया परंतु मैं सम्पूर्ण महाभारत
कथा जो व्यासजी ने कही है सुनना
चाहता हूं॥१॥२॥ कोई कारण मा
लूम होता है जिससे पांडवों ने भी भा
दिक बड़े बड़े अवध्य योधाओं
को मारा और समर्थ होने पर भी व
डे बड़े क्लेश पा सहे॥३॥५॥ परन्तु क्रोध
न किया भीमसेन को दश हजार
हाथी का बल था जिस पर भी उन्हों
ने क्रोध को रोका॥६॥ और द्रोप

दी सब प्रकार से समर्थ थी परन्तु उस
ने महात्म्य के पास है और उन द्वारा तमा
कौरवों को अपने तेज से न जलाया १
युधिष्ठिर जु वे मैं चारों भाइयों को हार
गये वे चारों महापराक्रमी होने पर भी
चले गये और कौरवों को नमारा यु
धिष्ठिर धर्मावतार थे और कृष्ण के पास
हनने के योग्य न थे परन्तु उन्हों ने भी
[illegible] के पास हा उन सब चरित्रों
को कारण सहित कहिये और यह
भी वर्णन कीजिये कि अर्जुन ने जि
न के सारथी श्री कृष्ण थे किस प्रका
र से वह तसी सेना को यमपुर पहुंचा
या और उन सब महारथीयों ने कि
स प्रकार से युद्ध किया और कब क
व क्या क्या चरित्र किया ॥८॥ ११॥ यह
सुनकर वैशम्पायनजी बोले कि हे रा

जो मैं एकलाख व्यासजी के बनाये हुये महाभारत को जो सब लोकों में पूजित है कहता हूं आप एकाग्रमन करके सुनिये॥१२॥२४॥ इस कथा के सुनने और सुनाने वाले दोनों ब्रह्मलोक पाकर देवतों के तुल्य होजाते हैं॥२५॥ यह महाभारत वेदों की तरह पवित्र और उत्तम है और सब के सुनने के योग्य है क्योंकि सब ऋषियों ने इसकी प्रशंसा करी है॥२६॥ और इसके पढ़ने से मनुष्य को अर्थ काम मोक्ष सम्बन्धी बुद्धि और ज्ञान प्राप्त होता है॥२७॥ बिद्वान लोग इस महाभारत को दान शील सत्यप्रतीत अनास्तिक और अच्छेमन वालों को सुनाकर धन पाते हैं॥२८॥ इस के सुनने से भ्रूण

हत्या का पाप दूर हो जाता है और सब पापों से ऐसे छूट जाता है जैसे राहु से छूट कर चन्द्रमा निर्मल हो जाता है इस के सुनने से जय चाहने वाले की जय होती है ॥१९॥२०॥ वह पृथ्वी को जीत कर शत्रुओं को मारता है और सन्तान चाहने वालों के सन्तान होती है ॥२१॥ जो राजा और रानी इस को सुनैं तो उन के बड़ा वीर पुत्र अथवा बड़ी भाग्यवान कन्या होती है ॥२२॥ यह व्यासकृत महाभारत धर्मशास्त्र और मोक्षशास्त्र है ॥२३॥ इस के सुननें और सुनाने वालों के मन बाचा और कर्म के किये हुये पाप जल्दी दूर हो जाते हैं और उन के आज्ञाकारी और सेवा करनें वाले पुत्र होते हैं ॥२४॥२५॥ उन के पास व्याधि नहीं आती है ॥२६॥ व्यास जी ने इस

इतिहास को मनुष्यों के पुण्य आयु
यश और धन देने को बना या है यह पां
डव आदिक बड़े बड़े क्षत्रियों का की
र्तन करने वाला है और सब विद्यां
वों का देने वाला है जो कोई इस पुण्य
कथा को ब्राह्मणों को सुनाता है उस
को परम गति मिलती है जो कुरुवं
स की कथा को पढ़ता है उस को बड़ाउ
त्तम वंपा [redacted] को मिलता है और
जो चातुर्मास में इस को सुनता सुना
ता है उस के सब पाप दूर हो जाते हैं॥
२९॥३१॥ इस महाभारथ के पढ़ने
वाले को वेद पारग जानना चाहिये
क्योंकि इस में देव ब्राह्मण ऋषि वि
ष्णु देवी और जो का महात्म्य वर्णन
किया है॥३२॥३४॥ जो कोई इस इति
हास को श्राद्ध में ब्राह्मणों को सुनाता
है उस के पितर अक्षय तृप्ति हो जाते

है॥३६॥ और जो मनुष्य स्नान याग अस्नान से इन्द्रियों के वश होकर पाप करते हैं उनके पाप तुरन्त छूट जाते हैं॥३७॥ इस में भरत वंशियों के महाजन्म की कथा होने से इस का नाम महाभारत हुआ है इस ग्रन्थ को जानने से मनुष्य के पाप इस प्रकार से भाग जाते जैसे सूर्य के तेज के लगने से शीत चला जाता है॥३८॥३९॥ श्री व्यासजी ने इस इतिहास को नियम कर के तप में स्थित होती है ने वर्ष में बनाया है इस से ब्राह्मणों को भी नियम धरि के कहना और अवसान चाहिये॥४०॥४१॥ अर्थ मानने से सब पाप दूर हो जाते हैं धर्म की करने से सब पाप दूर इच्छा रखवालों को इसे अवश्य सुनना चाहिये क्यों कि इस के सुनने से सिद्धी मिलती है मनुष्य स्वर्ग गति से ऐसे भोग नहीं भोगता है जैसे भोग इस महाभारत के पढ़ने से मिलते हैं

४२॥४४॥ इसके सुनने से सुनाने
से अस्वमेध और राजसूययज्ञों
का फल मिलता है पवित्र और
वेदों के तुल्य महाभारत तरो से पुराय
की खान है जैसे समुद्र और सुमेरु
पर्वत रत्नों का है॥४५॥४६॥ जो
कोई महाभारत की पुस्तक पढ़ने को
दान देता है उसे सब पृथ्वी दान कर
ने का फल मिलता है हे राजा यह क
था अद्भुत और पावन पवित्र है
और पुराय विजय और चारों फलों को
देनेवाली है और जो धर्म अर्थ काम
और मोक्ष का सिद्धांत इसमें है वही औ
र जगह भी है और जो इसमें नहीं है
वह कहीं नहीं है॥४८॥५१॥ इति श्री
भाषा महाभारते आदिपर्वे लिद्विष
ष्टितमो अध्यायः॥६२॥ तरेसठवाँ
अध्याय॥ व्यासजी की उत्पत्ति औ
र कुरुपांडवों के युद्ध के मुख्य मुख्य रा

जावोंकेजन्मकीसंक्षेपकथा॥
वैशंपायनबोलेहेराजापूर्वकालमें
वसूनामएकपुरुवंशकाबड़ाधर्मा
त्माराजाथाउसकोअहेरखेलने
काबहुतशौकथासमयपरवनजाए
करऔरराजराजछोड़करउग्रतप
करनेलगाउसकेतपकोदेखकरइन्द्र
कोसंकाहुईऔर~~सनानवचनकहके~~
इसीकारणसेइन्द्रसबदेवताओंके
साथराजाकेपासआयाऔर[redacted]साव
धानवचनकहकरउसकोतपसेहटा
या॥१॥४॥ पहलेदेवतावोलेकिहेरा
जाआपकायहधर्मनहींहैआपको
तोपहलेहीक्षत्रीधर्महैजिससेस
बसंसारकीरक्षाहोतीहै॥५॥ फिर
इन्द्रबोलेहेराजाआपकोराजनीती
केमाफकचलनाचाहियेऔरसंसा
रकापालनकरनाचाहियेऐसाक

र नैं से तुम को प्रणाम और सनातन लो
कों मिलैं गे ॥६॥ हम स्वर्गवासी हैं
और आप पृथ्वी के रहने वा
ले हैं अब मेरे मित्र आप हे
कर इस पृथ्वी पर जो चन्द्रेरी देस
है बड़ा सुन्दर हां तुम वास करो यह देश
पशुवों का हितकारी पुण्यकारी
और धनधान्यकारी है यां की पृथ्वी
धन रत्न और अनेक गुणों से युक्त
है ॥१॥८॥ और उस में धर्म और शी
लवान मनुष्य और बड़े संतोषी सा
धू लोग रहते हैं झूठ कोई नहीं बोल
ता है सब गुरु भक्त होते हैं पुत्र पिता
से जुदे नहीं रहते बैल को धुरी में नहीं
जोतते हैं सब वर्णों के लोग अपना अ
पना धर्म करते हैं और मैं तुम को अप
ना विमान जो देवताओं के योग्य है

और स्फटिक की तरह उजाला है देता हूं इस पर चढ़ कर तुम नरत्व पधारी देवताकी तरह विचरो ॥१४॥ और यह वैजन्ती माला जिसके कमल कभी नहीं मुरझाते लो इसको पहर कर जब लड़ाई में जावोगे तब यह शस्त्रों से तुम्हारी रक्षा करैगी ॥१५॥ इस कूं पहरे हुये जो कोई तुम को देखेगा वो तुम को धन्य कहेगा ॥१६॥ इन्द्र के ऐसा कहने से राजा ने चन्देरी देश में वास किया और इन्द्र ने उस समय राजा को एक बांस की लकड़ी दई ॥१७॥ और कहा कि यह लकड़ी साधारण नहीं है हर संवत के बीतने पर इस लाठी को तुम पृथ्वी में गाड़कर मेरा आवाहन इसमें करना और मणि भूषण और वस्त्रन सहित बो उस उपचार से मेरा पूजन करना दूसरे दिन राजा चंदेरी ने बड़े उत्साह से उस रीती से इन्द्र का पूजन किया उसको देखके

२ इन्द्र ने प्रीतिसे कहा कि राजा चंदेरी
की समान जो राजा मेरा पूजन न करेगा
उसके लक्ष्मी और विजय होगी और
उसके देश मैं सदा आनन्द रहैगा तबसे
उत्तम राजावों के यहां अब तक इन्द्र का
पूजन उसी प्रकार से होता है राजा चन्दे
री इन्द्र से ऐसा सत्कार बड़े प्रसन्न हुये
और हर संवत मैं इन्द्र का पूजन औ
र प्रजा का धर्म से पालन करने लगे॥
१८॥२८॥ इसके पीछे राजा के पांच
पुत्र बड़े पराक्रमी और तेजस्वी हुये
एकका नाम बृहद्रथ जो मगध देश मैं
विख्यात है दूसरे का नाम प्रत्यग्रह
तीसरे का नाम कुशाम्ब जिसको म
णिवाहन भी कहते हैं चौथे का ना
म मावेल्ल और पांचवें का नाम यदु
था इन पांचों को राजा ने अलग २ रा
ज्य दे कर राजा किया और वे पांचौं

॥२९३॥ आदि पर्व॥

आपने राज्य मे आपने ना-
म के नगर बसा कर राज करने ल-
गे॥ उन पांचों के पांच अलग २ बंस हु-
ये॥२९॥३२॥ राजा बसु इन्द्र के दि-
ये हुये विमान पर आकाश में बैठे
रहते और विचरा करते थे और उन
के पास गंधर्ब आ[illegible] और अप्सरा आ-
ती थी॥३३॥ इस के पीछे राजा का नाम
उपरिचर विख्यात हुवा उस राजा को
चंदेरी नगर के समीप एक शुक्तिम-
ती नाम नदी बहती थी उस नदी को
[illegible] दी को काम के बस होकर कोला-
हल नाम पर्बत ने रोका॥३४॥ राजा
ने कोप करके उस पर्बत को लात से मा-
रा और उसमें एक छिद्र हो गया कि
उसकी राह वह नदी बह निकली॥३५
कोलाहल के संगम करने से उस नदी
के गर्भ [illegible] रहा और उसके

एक पुत्र हुवा और एक लड़की उ
त्पन्न हुई नदी ने उन दोनों को रा
जा की प्रीति के कारण उसे राजा को निवे
दन किया॥३७॥ और उस गिरि की क
न्या को अपनी पत्नी बनाया थोड़े दिनों
मैं वह गिरिका ऋतुवती हुई॥३८॥ पर
न्तु जिस दिन वह गिरिका ऋतुस्नान
करने कूं थी उस दिन पितरों ने राजा
से कहा कि आज मृग मार कर श्राध
करो राजा उनकी आज्ञा के अनुसा
र वन को चला गया और गिरिका के
स्वरूप को याद करके राजा काम सवपा
हुवा॥३९॥४०॥ जब वन में पौंहुंचा
तब देखता क्या है कि वसंत, ऋतु
ने उस वन को अत्यन्त शोभायमा
न कर रक्खा है, अनेक तरह के मीठे
फल देने वाले वृक्ष जैसे अशोक चं
म्पक, आम, अतिमुक्त, पुन्नाग,
बकुल, दिव्यपाटल, पाटल, नारि

॥२८५॥ आदि पूर्व॥

केले, चन्दन, अर्जुन आदि लगे
हुये हैं चारो ओर भौरे गूंज
रहे हैं और कोकिलावो के झुंड के झुं
ड जहां तहां मधुर घोष कर रहे हैं ॥४२
॥४३॥ राजा काम की अग्नि से
आविष उस अनन्द को
देखता हुआ दैवयोग से एक अशो
क वृक्ष के पास पहुंचा वह अत्यन्त सु
गन्धित फूलों के गुच्छे से फूला हुवा
था राजा उसके निचे बैठ गया और मै
थुन के आनन्द को पाने लगा उपरान्त
उस वन में घुमते हुये रा
जा का बीर्य गिरा ॥४४॥४५॥ राजे ने
इस बात को जान कर बीर्य को वृक्ष
के पत्ते में ले लिया ॥४६॥ और इस बि
चार से कि मेरा बीर्य और मेरी कुमा
र स्त्री का ऋतुकाल व्यर्थ न होय ॥४७

आपने विमानपर बैठे हुये श्येन नाम
पक्षी से कहा कि यह मेरा वीर्य है इसको
तूं जल्दी लेजा वा मेरी स्त्री गिरि का नाम
स्त्री को दे ॥५०॥५२॥ श्येन पक्षी यह
सुनकर वहां से उसका बीर्य को लेकर
चला बड़ा जोर से उड़ा जल्दी ॥५३॥ राह
मे उसको जाते हुये एक दूसरे श्येन
पक्षी ने उस पक्षी देखा और उस वी
र्य को पत्ते को मांस समझ कर उसके
उसके सामने झपटा ॥५४॥ वा उस पौहुंचा
तब दोनों आपस मे चूंच मार मार कर
लड़ने लगे और [illegible] और वीर्य यमुना
मे गिर पड़ा ॥५५॥ दैवजोग से उस ज
गह जहां वीर्य गिरा था एक आद्रिका ना
म अप्सरा जो एक ब्राह्मण के श्राप से
मच्छली हो गई थी यमुना में डोलती फि
रती हुई वहां पहुंची ॥५६॥ और उस वी
र्य को खा गई ॥५७॥ जब दस महीने हु
ये तब उस मच्छली को दैव योग से

झींवरों नें उस मछली को पकड़ लिया और उस पेट चीर ने लगा उस मछली का पेट में से एक कन्या और एक लड़का पैदा हुवा उनको देख कर झींवरों नें आश्चर्य माना और उन दोनुवों को ले जाकर राजा के अर्पण कर दिया ॥५८॥५९॥ राजा नें उस लड़के को ले लिया और वही लड़का धर्मात्मा और सत्य संकल्प मत्स्य नाम राजा हुवा और वह अप्सरा शाप सें जो मछली हो गई थी और भगवान नें उससे यह कहा था कि तूं दो मनुष्यों उत्पन्न करेंगी उस समय तूं इस शाप से छूट जायगी झींवरों के पेट काटने पर दिव्य स्वरूप धर के आकाश कूं चली गई ॥६०॥६१॥ और उस कन्या को जो बड़ी गुणवान और स्वरूप वाली थी राजा नें झींवरों दे कर कहा कि यह तुम्हारी कन्या हो ॥६४॥६५॥ धीवरों नें उसको ले

लिया और अपनी कन्याके समा
न पाला और उसका नाम सत्यव
ती रक्खा परन्तु उसका जन्म म
छली के होने के कारण से उसका
थोड़े दिनों तक मत्स्यगन्धि
नी नाम रहा ॥६६॥ थोड़े दिनों में वो क
न्या स्याणी हो गई और पिता की आ
ज्ञा से पिता की नाव के महात्मा ओं की
सेवा के लिये यमुना में चलाया कर
ती थी एक समय पराशर ऋषि
तीर्थ यात्रा करते हुए आ पहुंचे और
उस कन्या के सुन्दर सरूप और मं
द मुस्कान को देखकर मोहित होग
ये ॥६७॥ ६८॥ और जब नाव में बैठ
कर बीच धारा में पहुंचे तब कामदेव
के वस में होकर बोले के हे कल्याणी
तू मेरे साथ रमण कर वो कन्या यह
बात सुन कर बोली के महाराज
वार पार दोनों और ऋषि गण देख
रहे हैं उनके देखते हुए मेरा आप

कासमागम क्योंकर होय यह सुनकर
र पराशरजी नैं ऐसा निहार प्रघट कि
या की चारों ओर बड़ा अन्धकार छा
या॥६९॥७१॥ सत्यवती उस अन्ध
कार को देखकर चकित हुई और उन
को बड़ा तपस्वी समझकर लज्जित
होकर॥७२॥ बोली कि महाराज मैं
अभी कन्या हूं और पिता की आ
ज्ञा के अनुसार चलती हूं आपके
संगम करने से मेरा कन्याभाव मि
ट जायगा और कन्याभाव मिटने पर
क्योंकर घर जाउंगी और जीती रहूं
गी॥७३॥७४॥ इस बात को
आप विचार कर लीजिये फिर जो चा
हे सो करो यह सुनकर मुनीश्वर प्री
तिपूर्वक बोले कि तू जो मैं हूं सो
कर तेरा कन्याभाव बना रहेगा

ना पड़ा और जो तुझे वर मां
मांगता है सो मांग ॥१५॥१६॥ मे
रा कहा कभी झूठ नहीं होता सत्य
वती ने कहा कि महाराज मेरी देह
सुगन्धित हो जाय ॥१७॥ मुनीश्व
र ने उसको मनो बांछित वर दिया
और वर पाकर उसकी देह अत्य
न्त सुगन्धित हो गई और
उसका नाम गंधवती पृथ्वी पर वि
ख्यात हुवा उपरान्त जब मनुष्यों
ने उसकी देह की गंध को एक योज
न च्यार कोस तक सूंघा तब से उ
सका नाम योजन गंधा विख्यात हु
आ ॥१९॥२०॥ इस के उपरान्त परा
शर ऋषि ने उस कन्या सें उसी ज
गह यमुना के द्वीप में भोग किया
और उस कन्या ने तुरन्त गर्भ को
धारण करके उसी यमुना के

द्वीप में व्यासजी को उत्पन्न किया व्या
सजी उत्पन्न होते हीं वहां से तप कर
नै को चले गये और माता से यह क
ह गये कि जिस समय तू याद करैगी
मैं आ जाऊंगा ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ व्यासजी
को नाम द्वैपायन मुनि होने का यह
कारहै कि वह यमुना के द्वीप अर्थात
टापू मैं उत्पन्न हुये और इसके पीछे
जब उन्होंने ब्राह्मणों पर अनुग्रह
करके मनुष्यों की आयु और शक्ति
को और युगों के अंत मैं धर्म की हा
नी देखकर देह का विस्तार और
विभाग किया तब से उन का नाम
व्यासजी करके विख्यात हुआ ॥
८४ ॥ ८५ ॥ उन चारों वेदों मैं
को और इस पांचवें महाभारत

वेद को व्यास जी ने सुमंतु, जैमिन,
पैल, और बैशम्पायन, आदि शि
ष्यों को, और, अपने पुत्र सुकदेव जी
को पढाया, और बैशम्पायन के
द्वारा यह पंचवां महाभारत बेद
संसार में प्रसिद्ध हुवा ॥ ८६ ॥ ८७ ॥
इतनी कथा सुनाकर सूतजी बो
ले हे ऋषियो इसके उपरान्त बड़े
यशस्वी, और पराक्रमी भीष्म
जी । जं जाके जर्मसे, अष्टवसु
वों के, अंससे राजा सान्तनु के पुत्र
उत्पन्न हुये ॥ ८८ ॥ और धर्म
राजपुत्र दूर्योनी से, अवतार लेकर
विदुर के नाम से प्रकट हुये पुत्र दूर्यो
नी से जन्म लेने का कारण । यह
पा की एक, ऋषी माण्डव्य नाम
बड़े तपस्वी बेदबेत्ता, और बेद पा

ही ऋषि थे उन को चोरी का झूठा
पाप लगा कर फांसी दी गई जब
यमराज के पास पहुंचे तब ऋषि ने
कहा की हमने कोई पाप संसार में नही
किया था हां बालापन मैं एक समय
एक टीड़ी को तिनके से छेदा था
सो वह थोड़ा सा पाप क्या हमारी महा
उग्र तपस्या से भी नाश नही हुवा
ब्राह्मण का बध करना पीड़ा देना औ
र अप्रमा[illegible] पना न कर सब संसारी प्रा
णियों के वध से अधिक है इस
कारण से हम तुम को पाप देते है
कि तुम पृथ्वी पर जाकर शूद्र योनी
मैं जन्म लो॥८९॥९३॥ इसके पीछे
गावल्गण से मुनियों के समान सं
जय सूत उत्पन्न हुये॥९४॥ औ
र कुंती के गर्भ से कुमार अवस्था मे
सूर्य के वीर्य से कर्ण और कवच

धारण किये रूपे कर्णी अपघट्छ आ
॥१८५॥ इसके उपरांत श्रीविष्णु भ
गवान जो अनादि नापार हितुज
गतका कर्ता, प्रभु, अप्रकाट, अवि
नाशी, ब्रह्म, प्रधान, त्रिगुण ग्ग
के, ~~[illegible]~~
आत्मा. अव्यय. प्रकृति. उत्पत्ति
कारणि जिस. प्रभु. पुरुष. विश्वक
र्मा. तत्व. योग. ध्रुवादर अर्थात
प्रणव नाम ब्रह्मा दर के अक्षर. अ
नन्त, अचल, देव, हंस, अर्थात
संन्यास आश्रम स्थित. नारायण प्र
भु. धातार. अज. अव्यक्त. अव्य
य. कैवल्य. निर्गुण. विश्वरूप.
अनादि. अज. अव्यय. पुरुष. सम
र्थ. कर्ता. और स्थव प्राणियों का पिता
मह है उन्होंने धर्म की रक्षा, और सं

॥ ३०५॥ आदिपर्व ॥
सारी जीवों का कल्याण करने के लिये
व विशंपायन के चरित्रों में देव की और
र वसु देव के घर अवतार लिया ॥ ९९ ॥
१०० ॥ फिर सत्यवक के वंश में पांडवों
की और वृष्णि के वंश में कृतवर
मा बड़े पराक्रमी और अस्त्र और
शस्त्र विद्या में अति निपुण उत्प
न्न हुये और भरद्वाज ऋषि का
वीर्य पर्वत की खोह में गिरने से
द्रोणाचार्य और गौतम ऋषि का वी
र्य सरकंडों पर गिरने से अश्वत्था
मा की माता और कृपाचार्य प्रघट
हुये और द्रोणाचार्य के अश्वत्था
मा बड़ा वीर पुत्र उत्पन्न हुवा ॥ १०१ ॥
इनके पीछे होम की अग्नि से अग्नि
की समान तेज रखने वाला द्रोणाचार्य
के मारने के लिये धनुष बाण लि
ये हुये पैदा हुआ और अग्नि

॥३०६॥ आदिपर्व॥

त सुन्दरी कृष्ण प्रघट हुई॥१०५॥१०६॥
फिर प्रह्लाद का पिआ नजन जित
और सुबल उत्पन्न हुये॥१०७॥ इन
की संतान दैब के कोप से धर्म नासक
हुये और गांधार देस के राजा सुबल
के शाकुनि नाम पुत्र और एक गांधा
री नामक कन्या उत्पन्न हुई उस का
विवाह धृतराष्ट्र से हुआ और उस
के दुर्योधनादिक पुत्र हुये और कि
र ब्यास जी से विचित्रवीर्य की स्त्री के
गर्भ से धृतराष्ट्र और पांडु और शू
द्र पोती से विदुर जी उत्पन्न हुये वि
दुर जी धर्मवान और निष्पाप थे॥१०८
॥११०॥ इस के उपरान्त राजा पाण्डु
के दो स्त्रियों से पांच पुत्र देवता औ
के तुल्य पराक्रमी उत्पन्न हुये एक
का नाम युधिष्ठिर उस से छोटे दूसरे
का नाम भीमसेन और तीसरे नाम

॥३०१॥ आदि पर्व॥

अर्जुन चौथे का नकुल और पांचवे का सहदेव था इन मैंसे पहिले ती नों क्रमसे धर्मराज वायु और इन्द्र से और पिछले दोनों अश्वनी कुमारों से उत्पन्न हुये॥१११॥११२॥ और धृत राष्ट्र के भी सौ पुत्र दुर्योधनादिक और युयुत्सु और कर्ण उत्पन्न हुये॥११४

इनमैंसे ११ पुत्र जो महारथी थे उनके नाम यह है के कर्ण, दुःशासन, दुःसह, दुर्मर्षण, विकर्ण, चित्रसेन, विविंशति, जय, सत्यव्रत, पुरु मित्र, और वैश्यापुत्र युयुत्सु॥११५॥११६॥ इनके पीछे श्रीकृष्ण का भान जा और पांडवों का पोता अभिमन्यु सुभद्रा के गर्भसे उत्पन्न हुआ॥११७॥ और द्रौपदी के भी पांचों पा ण्डवों से पांच पुत्र अत्यन्त सुरूपवा

॥३०८॥ आदिपर्व॥

न उत्पन्न हुये॥११८॥ इनमेसें युधि
ष्ठिर के पुत्र का नाम प्रतिबिन्ध्य
भीमसेन के पुत्र को नाम सुत सो
म अर्जुन के नाम श्रुतकीर्त्ति नकु
ल के पुत्र को नाम सतानीक
और सहदेव के पुत्र को नाम श्रुत
सेन था और उसी समयमैं हिडंबा
राक्षसी के भीमसेन से घटोत्कच
नाम पुत्र पैदा हुवा॥११९॥१२०॥
और राजा द्रुपद को शिखंडी कन्या
उत्पन्न हुई और उसको स्थूणा न
मयक्ष ने अपना पुरुषत्व देकर पु
रुष किया॥१२१॥ इतकथा सुनी
का सूतजी बोले हे ऋषियो कुरु और
पांडवो के पक्षमैं कई लाख राजा
इकठे हुये थे उनके नाम वर्षो मैंभी न
हीं कहसक्ता हूं परन्तु जो जो उनमे

मुख्य मुख्य थे उनको मैंने ऊपर ब
र्णन किया है ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ इति श्री
भाषा महाभारते आदि पर्वणि त्रयष
तमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥ चौंसठवां अध्या
य ॥ असुरों का पृथ्वी पर जन्म लेना व
पृथ्वी का उनके अधर्म से दुःख
पाकर ब्रह्मा जी के पास जाना और ब्र
ह्मा जी का सब देवताओं को पृथ्वी का
भार दूर करने को पृथ्वी पर जन्म लेने
की आज्ञा देना ॥ सूत जी बोले कि हे ऋ
षियो राजा जन्मेजय ऊपर वर्णन की
गई कथा को सुनकर वैशम्पायन
जी से बोला कि महाराज मैंने इनको
जो का बनतो सुना पर जो और वहा
तसे महारथी राजालोग जिन्होंने दे
व ना और कैपाह दा पृथ्वी पर जन्म लि
या उनकी कथा भी सुना चाहता हूं

कृपाकर के उनकी कथा भी सम
झाकर कहिये॥२॥ यह सुन
कर वैशम्पायनजी बोले कि हे
राजन यह देवताओं की उत्पत्ति
है मैं ब्रह्माजी को नमस्कार करके
तुम्हारे सामनें वर्णन करता हूं॥३॥
जमदग्नि के पुत्र परशुराम
जी महाराज इकीसबेर पृथ्वी
को क्षत्रियों से रहित करके महे
न्द्र पर्वत पर सौम्य स्वभाव धार
ण करके तपस्या करने को चले
गये॥४॥ तब सब क्षत्रियों की इ
स्त्रीयां ऋषियों के पास जाई॥५॥
और कहा के महाराज ऐसा की
जिये कि जिसमें क्षत्रियों का वं
श पृथ्वी पर रहे अब उन महा

॥३११॥ श्रीदिवे॥

तपस्वी ऋषियों नें उनकी पर
वात सुनकर ऋतुस्नान न करने प
र उनके साथ भोग कर करके वीर्य
दान दिया परन्तु किसी ने उनको
प्राप्त कामवश होकर भोग नहीं
किया उन क्षत्रियों की हजारों स्त्री
यों नें गर्भ धारण किया और उ
नसें हजारों बड़े बड़े पराक्रमी क्ष
त्रि पुत्र और कन्या उत्पन्न हुईं
और थोड़े ही काल मैं धर्म करने
सें वह क्षत्रि लोग प्रसबड़े कि
संपूर्ण पृथ्वी और वन और प
हाड़ों मैं पास मुद्र तक भर गये
और उनके पीर रहित रोग औ
र आयु लाख बरस की होती थी
क्योंकि वह लोग धर्म पर चलते

थे और स्त्री के साथ संगाम करते थे अ
स्मा न करने पर करते थे काम वस
हो कर कभी कोई स्त्री के साथ भोग
नहीं करता था ॥ १३ ॥ राजा लो
ग पृथ्वी का पालन धर्म से करते थे द
राउपो सुत्यजय मनुष्यों को धर्म
से दंड देते थे तेपस्या करने से ब्राह्म
ण आदि चारों वर्ण उन के राज में
आनन्द पूर्वक रहते थे ॥ १४ ॥ १५
राजा लोगों के इस प्रकार धर्म के सा
थ राज्य करने से इन्द्र सब देशों में
अच्छी तरह बर खा करते थे और
उस से प्रजा को पालन होता था १६
उस समय में कोई मनुष्य बाल्य अ
वस्था में नहीं मरता था और ना को
ई स्त्री यौवन में मरती थी व जानती
थी पुरुष बल्कि सुन्तियों के साथ ही

गमयुवाअवस्थाकेप्राप्त होनेपरकरते
थे॥ ॥१९॥ द्वेतीलोग वडे२ यस जि
नमेंवडी२ दच्छिणादीजातीहैंकर
तेथेब्राह्मणलोगविनांच्छियेवे
द पढातेथेऔर२ वेदोंकाउच्चारण
शूद्रोंकेसामनें नहीं करतेथे१९
॥२०॥वर्णिपेरवेतीवैलोंसेकर
तेथेपरन्तु आपवैलोकोधुरीमें
नहीं जोतकेजो वैलदुवलेहोतेथे
उनसेकामनहीलेतेथेऔर२उन
कापालनकरतेथेऔर२गायोंकादू
ध तवतकहीं दूहतेजवतकवछडे
कोआधारकेवलदूधपैरहताथा
औरवणिकलोगकभीकपटके
वाटोंसेसौदानहीतोलतेथे॥२१॥
२२॥ सवकालमेंअपनी२ वर्ण

॥ २४ ॥ आदिपर्व ॥

पनी जन्तु के फूल और फल अ
च्छी तरह होते थे ॥ और स्त्री अ
पने २ ~~धर्मों को अच्छी तरह क~~
~~रते~~ थे ॥ काल पर बच्चा जनती
थी इस प्रकार से सब पृथ्वी मैं
सुख और आनन्द रहता था चा
रो वर्ण अपने २ धर्मों को अ
च्छी तरह करते थे ॥ २३ । २४ ॥ इस
प्रकार से जब पृथ्वी मैं सतयुग व्या
प रहा था उस समय पृथ्वी मैं उन
दैत्यों ने आकर जन्म लिया जो
देवताओं से युद्ध मैं हारने के का
रण स्वर्ग से निकाल दिये थे उन दै
त्यों ने आकर मनुष्य घोड़ा हाथी
गाय भैंस ऊंट गधा और मज

आदि सब यो नियों मैं जन्म लिया और उन के पीछे दिति और दनु के पुत्र दैत्यों ने राजालो गों मैं जंन्म लिया थोड़े दिनों मैं ये दैत्य पृथ्वी पर जन्म ले लेकर समुद्र तक पृथ्वी पर फैल गये और अधर्म का आचरण करने लगा उन परा क्रमी घमंडी मद मत्त और विवेक हीन असुरों से ब्राह्मण आदि चारों वर्णों को बड़ा दुःख हुवा वह लोग जीवों को मारने और ऋषियों को दुःख देने लगे जब ऐसे अनेक अधर्म पृथ्वी पर होने लगे तब पृथ्वी उन दैत्यों के बोझ को नहीं सह सकी और सब देवतावों के पिता मह ब्रह्मा जी के पास गई ॥२६॥३९
और उन की सभा मैं जहां उनाम

॥३१६॥ आदिपर्व॥

ब्राह्मण बड़े २ ऋषि संपूर्ण देवता
गंधर्व और अप्सरा बैठी थी उ
का ब्रह्मा जी की वन्दना करी औ
र लोकपालों सहित सरण गत हो
कर अपनी व्यवस्था सुनाने ल
गी॥४०॥४२॥ परन्तु ब्रह्माजी
जो संपूर्ण जगत के रचने वाले स्व
यंभू प्रधानो त्मा ईश्वर अर्थात वि
[illegible] प्राणभृ और प्रजापति
है पृथ्वी की सब व्यवस्था को पह
ले ही जानते थे और उससे बोले
॥४३॥४४॥ हे पृथ्वी मैं जानता हूं
जिस कारण से तू यहां आई है अ
र्थात जो और मैं तेरे काम के करने
के उपाय में देवताओं को नियुक्त
करता हूं॥४६॥ ऐसा कहकर ब्रह्मा
जी ने पृथ्वी को विदा किया और

॥३१७॥ आदिपर्व ॥

सब देवगणों को आज्ञा दी ॥४७॥ कि
तुम लोग पृथ्वी का भार दूर करने को
अपने २ अंशों से मर्त्यलोक में जन्म
लो ॥४८॥ और गंधर्व अप्सराओं
को भी बुला कर यही आज्ञा दी ॥४९॥
देवता आदि सबों ने ब्रह्माजी की आज्ञा
को शिर पर धार और ॥५०॥ वहां
से सब के सब देवता श्री विष्णु भ
गवान के पास जो शंख चक्र गदा
पद्म और पीतांबर के धारण कर
ने वाले तीन प्रभा वाले पद्मना
भ असुर नाशक बड़ी चौड़ी छाती
पर दृष्टि रखने वाले प्रजापति के प
ति देव, सुरनाथ, श्रीवत्स का चिह्न
धारि के सब और सब देवताओं से पू
जित हैं बैकुंठधाम में जाकर विनय
करी आप भी पृथ्वी भार दूर करने

को जन्म लीजिये विष्णु भगवा
न ने कहा अच्छा ऐसाही करैं गे
॥ ५१ ॥ ५४ ॥ इति श्री भाषा महा
भारते आदिपर्व णि चतुः पष्टि
तमो ऽध्याय ॥ ६४ ॥ पैंसठवां अ
ध्याय ॥ सब सुर असुर दैत्य दा
नव गंधर्व और अपसरा ओं के
अंशावतार णकी कथा ॥ वैशं
पायन बोले हे राजा जन्मे जय इन्द्र
आदि सब देवता ओं का विष्णु
भगवान के साथ मंत्र होने के
पीछे इन्द्र ने सब देवता और गंध
र्व आदि को को मृत्युलोक में ज
न्म लेने की आज्ञा और आसी
र्वाद देकर वहां से चले गये ॥ १ ॥ २ ॥
इसके पीछे सब देवता ओं ने अप
नी रुचि के अनुसार स्वर्ग से पृ
थ्वी में जाकर ब्रह्म ऋषि और रा

न ऋषियों के वंश में अवतार लि
या और सब दैत्य दानव और रा
क्षसों को मार डाला और दैत्यलो
ग उन प्रबल देवों को बाल अवस्था
में भी न मार सके ॥ ३ ॥ ६ ॥ यह सु
न कर राजा जन्मेजय ने कहा कि
महाराज मैं सब सुर असुर दैत्य
दानव गंधर्व अप्सरा और मनु
ष्यों के अवतार की कथा विस्तार
पूर्वक सुनी चाहता हूं आप कृपा क
र के उन के संभव की कथा वर्णन
कीजिये ॥ १ ॥ ८ ॥ यह सुन कर वै
शम्पायन बोले हे राजन मैं ब्रह्मा
जी को नमस्कार कर के सब देवता
ओं के सम्भव की कथा कहता हूं
सुनो ॥ ९ ॥ पहले ब्रह्मा जी के ६ मा
नसी पुत्र उत्पन्न हुए एक का नाम
मरीचि दूसरा अत्रि तीसरा अंगिर
स चौथा पुलस्त्य पांचवां पुलह

॥३२०॥ आदिपर्व॥

१ एक काल पाकि रमरीचके क
स्यपजी पुत्र हुये। औेर कस्यप
जीसे यह सब स्रष्टि हुई। औेर दक्ष
के १३ तेरा कन्या उत्पन्न हुई
उनके नाम ये हैं॥१०॥११॥ आ
दिति १ दिति २ दनु ३ काला ४ द
नायु ५ सिंहिका ६ क्रोधा ७ प्रा
धा ८ विस्वा ९ बिनता १० कपि
ला ११ मुनि १२ कद्रू १३ इन स
बका बिवाह कस्यपजीसे हुवा
और उनके पुत्र और पौत्र अन
गिनत हुये॥१२॥१३॥ अदिति
के बारह सूर्य जो देवने पवर क
हलाते हैं उत्पन्न हुये उनके ना
म ये हैं॥१४॥ धाता १ मित्र २ अ
र्यमा ३ सक्र ४ वरुण ५॥ अंसा ६

॥ ३२२॥ आदि पर्व॥
भग ९ विवस्वान ८ पूषा९ सविता१०॥
१५॥ त्वष्टा ११ विष्णु १२ इन सब
मैं छोटे आदित्य गुण मैं सब से अधि
क हैं ॥१६॥ और दिति के एक पु
त्र हिरण्यकश्यप हि रण्यकशिपु ना
मी बड़ा प्रतापी हुवा और उस के पां
च पुत्र हुये पहला प्रह्लाद दूसरा संह्ला
द तीसरा अनुह्लाद चौथा शिवि और
पांचवां वाष्कल था॥१७॥१८॥ प्रह्ला
द के तीन पुत्र हुये एक का नाम विरोच
न दूसरे का नाम कुंभ और तीसरे का
नाम निकुम्भ था॥१९॥ विरोचन के
बड़ा प्रतापी बलि नाम पुत्र हुवा वह शि
वजी का बड़ा भक्त था जिसका नाम
महाकाल भी विख्यात है और इद के
२० पुत्र हुये उन मैं से जो विख्यात

हैं उनके नाम ये हैं विप्रचित्ति, शंवर, नमुचि, पुलोमा, असिलोमा, केशी, दुर्जय, दानव, अयःशिरा, अश्वशिर, अश्वशंकु, गगनमान, स्वरभानु, अश्वपति, वृषपर्वा, अजक, अश्वग्रीव, सूक्ष्म, तुहुंड, एकपाद, एकचक्र, विरूपाक्ष, महोदर, निचंद्र, कुपट, कपट, शरभ, शलभ, सूर्य और चन्द्रमा २०॥ २६॥ जिन सूर्य और चन्द्रमा की गिनती देवताओं में है वे सूर्य और चन्द्रमा दूसरे हैं॥ २७॥ दनु के पुत्रों में जो प्रबल वंश पाकर तो हुये उनके नाम यह हैं एकाक्ष, मृतपवीर, प्रलंब, नरक, वातापि,

॥२३३॥ आदिपर्व

पात्रतपन, महा असुर, पाठनाम, ग
विष्ठ, वनाय, दीर्घजिह्वा, दानव और
र इनदपों के पुत्र पौत्र असंख्य हुये
॥२८॥ ३०॥ और सिंहिका के ४ पुत्र
हुये पहला सूर्य और चंद्रमा को मर्द
न करने वाला राहु, दूसरा सुचन्द्र
तीसरा चंद्रहंता और चौथा चं
द्र प्र[illegible] मर्दन थी ॥३१॥ और क्रो
धा के क्रूर स्वभाव रखने वाले, अ
नगिनती पुत्र पौत्र उत्पन्न हुये
॥[illegible]॥ ३२॥ और दनु के पीछ द
नय के च्यार पुत्र विदर, बलवी
र, और दश ञ नामी सब दानवों
मैं उत्तम हुये ॥३३॥ इनके पीछे का
ला के चार पुत्र विनाशन, क्रोध,
क्रोध हंता, और क्रोध शत्रु नामी
बड़े बलवान विख्यात, और काल
के तुल्य प्रहार के करने वाले प्रकट

हुये॥३४॥३५॥ इन असुरों के ऋ
षि पुत्र शुक्र जी उपाध्याय हुये और
शुक्र के चार पुत्र त्वष्टा अधार
अत्रि नामी और दो और जो सू
र्य के समान तेजस्वी और ब्रह्मलो
क में रहते थे असुरों को यज्ञ कराने
वाले हुये॥३६॥३७॥ इतनी कथा सु
नाकर वैशम्पायन जी बोले हे राज
न यह असुरों के वंश की कथा जो ह
मने पुराणों में सुनी थी आपके सा
मने कही परन्तु इन सब की संतान
का हाल नहीं कह सक्ता हूं क्योंकि उ
नकी गिनती नहीं हो सक्ती॥३८
॥३९॥ विनता के पुत्रों के नाम ये
हैं [redacted] तार्क्ष्य, अरिष्टनेमी, गरु
ड, अरुण, अरुणी और बरुणि
॥४०॥ और शेष, वासुकि, तक्षक,

कूर्म, और कुलिक, कद्रू के पुत्र हैं॥४३
इनके पीछे मुनी देवी के १६ देवगंधर्व उत्पन्न हुये उनके नाम यह हैं भीमसेन, उग्रसेन, सुपर्ण, वरुण, गोपति, धृतराष्ट्र, सूर्यवर्चा, सत्यवाक, अर्कपर्ण, प्रयुत, भीम, चित्ररथ, शालिशिरा, पर्जन्य, कलि और नारद॥४२॥४४॥ इसके उपरान्त प्राधा के पुत्री और १०पुत्र उत्पन्न हुये उनके नाम यह हैं पुत्रीनामानी, अनवद्या, मनुवंशा, असुरा, मार्गणप्रिया, अरूपा, सुभगा और भासीपुत्रनामानी॥ सिद्ध, पूर्ण, वर्हि, पूर्णायु, ब्रह्मचारी, रतिगुण, सुपर्ण, विश्वावसु, भानु, और सुचन्द्र॥४५
॥४६॥ प्राधा के येपुत्र देवगांधर्व कहलाते हैं और इनके उपरान्त उन्होंने केपीछे प्राधा के देव ऋषियों से अ

प्सरा औं के बंश उत्पन्न हुये नाम
तुम आगे व[illegible]र्णन करते हैं ॥४८॥
४९॥ अलंबुषा, मिश्र, केश[illegible]
शी, विद्युत्पर्णी, [illegible], [illegible]
[illegible] तिलोत्तमा, अरुणा, [illegible]
रक्षिता, रम्भा, मनोरमा, के
शिनि, सुबाहु, सुरता, सुरजा
और सुप्रिया और गंधर्वों में अ
तिबाहु, हाहा हूहू और तुंबरु ब
डे नामी हुये ॥५०॥५१॥ इतनी क
था सुनाकर बैशम्पायन जी बो
ले हे जन्मेजय मैं ने तुम को अस
त वा सिद्ध जो गंधर्व अप्सरा
और कपिला की संतान की कथा
पुराणों के अनेक सार सुनाई औ
र सम्पूर्ण प्राणी गंधर्व अप्स

सर्प, सुपर्ण, रुद्र, मरुद्गण, जो ब्राह्मण और पवित्र पुरुषों के उत्पन्न होने का हाल भी वर्णन किया यह सब कथा आयु के बढ़ाने वाली और धन और सुख के देने वाली और सदा सुनने के योग्य है जो मनुष्य इस कथा को ब्राह्मण और देवता के समीप पढ़ैगा उसको लक्ष्मी यश संतान और सुभगती प्राप्त होगी॥ ५२॥ ५६॥ इति श्री भाषा महाभारते आदिपर्वणि पंचषष्ठितमोऽध्यायः॥ ६५॥

छासठवां अध्याय॥ देवता, असुर, धर्म, अधर्म, और पशु पक्षियों के उत्पन्न होने की कथा॥ वैशंपायन बोले हे राजा जन्मेजय मरीच, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु ये ६ पुत्र ब्रह्मा जी के और प्रजाध्यक्ष सर्वपति [illegible] जैति, अजैकपाद,

अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, दहन, ईश्वर,
कपाली, स्थाणु, और भग यह ११
पुत्र शिवजी के उत्पन्न हुये ॥४॥
इसके पीछे वृहस्पति, उतथ्य और
संवर्त ये तीन पुत्र बड़े व्रतधारी अंगि
रा के और मनुज व्याघ्र, वानर,
राक्षस किन्नर और यक्ष पुलस्त्य
जी के और शालभ सिंह, किंपुरुष व्या
घ्र, ईहा, और मृग पुलह जी के और
सत्यव्रतधारी वालखिल्य ऋ
षि जो सूर्य के साथ फिरा करते हैं
क्रतु जी के और वेद के जानने वा
ले बड़े २ महा ऋषि अत्रि जी के
उत्पन्न हुये ॥५॥६॥ और उसी
समय में ब्रह्मा जी के दहिने अंगूठे
से दक्ष ऋषि और बायें अंगूठे से
दक्ष की भार्या उत्पन्न हुये और
(उन दोनों के ॥५॥ पचास कन्या हु

६ ॥१०॥११॥ दक्ष जी उन सब सुन्दरी क
न्याओं को जो कि पुत्र भाव से रखते थे
और इच्छा नीहो पर दक्ष ने ॥१०॥ कन्या
ओं का विवाह धर्मराज से ॥ २७ का च
न्द्रमा से और १३ का कश्यप जी से
वेद विधि से कर दिया ॥१२॥१३॥ जो
कन्या दक्ष ने धर्मराज को दी उन
के नाम यह हैं कीर्ति, लक्ष्मी,
धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा ॥ कि
या, ॥१४॥ बुद्धि, लज्जा और मति
ब्रह्मा जी ने दसों धर्म के द्वार इन
ही को कहा है ॥१५॥ और जो २७ क
न्या चन्द्रमा को दी थी वे लोक या
त्रा में समय के क्रम से नक्षत्रों में
फिरा करती है अर्थात अश्विनी
भरणी रोहणी आदि जो २७ नक्ष
त्र कहलाते है वह दक्ष की बड़ी सम

ताई सो कन्या है जो चन्द्रमा
को दी थी ॥१६॥ और पुत्र दक्ष दे
प्रजापति के जो आठ पुत्र हुये वे
ही अष्ट बसु कहलाते हैं और उ
नके नाम ये हैं ॥१७॥ धर, ध्रुव,
सोम, आप, अनिल, अनल,
प्रत्यूष, और प्रभास ॥१८॥ इन में
से धर और ध्रुव धूम्रा से चन्द्रमा
मनस्वी से श्वसन श्वासा से अ
रता से हुतासन शाण्डिली से प्रत्यू
ष और प्रभास प्रभाता से उत्प
न्न हुये ॥१९॥२०॥ इसके पीछे
धर के द्रविण, और हुतहव्य और
ध्रुव के काल और चन्द्रमा के वर
चा और मनोहरा के शिशिर प्राण
और रमण, और अनल के
ज्योति, शम, शांत, और मुनि

और अग्नी के मानन कुमार जीजो
कृतिका ओं से उत्पन्न होने के कार
ण से कार्तिकेय नाम से विख्यात
हुये और अनिल के शिवा स्त्री
से मनोजव और अविज्ञातगति
और प्रत्यूष के देवल और प्र
भास के बृहस्पति की बहिन से जो
ब्रह्मवादिनी और योगयुक्त थी
विश्वकर्मा जी पुत्र उत्पन्न हुये इन
के अनन्तर चन्द्रमा के पुत्र वर्चा के
वर्चस्वी पुत्र और कार्तिकेय जी के
शाख विशाख और नैगमेय
नामी पुत्र और प्रत्यूष के
पुत्र देवल के क्षमावान और म
नीषी नाम पुत्र उत्पन्न हुये और
प्रभास के पुत्र विश्वकर्मा जी जो
पत्थर बनाने की विद्या में बड़े नि

पणुयै औरह जारों ऐसे ऐसे पत्थ
र बनाये जिनको ज्ञान कर मनुष्य
अपनी जीविका कार ने हैं और विश्व
करमा का आराधन न करते हैं उन्हों
नें देवताओं के लिये उत्तम २ विमा
न बनाये ॥२९॥३०॥ इसके अनन्त
र ब्रह्मा जी के दाहिने स्तन [illegible] को फो
ड़कर नररूपधारी धर्म उत्पन्न
हुये ॥३१॥ उनके पास, [illegible] काम
और हर्ष नामी तीन पुत्र बड़े मनोह
र और तेजस्वी हुये ॥३२॥ और इ
न [illegible] तीनों का विवाह प्राप्ति और
रति और नन्दा नाम स्त्रियों से
हुवा ॥३३॥ और मरीचि के
पुत्र कश्यप प्रजापति कश्यप के [illegible]
[illegible] सुर और असुर उत्पन्न हुये
जो कि सृष्टि के कारण कहलाते
हैं ॥३४॥ इसके पीछे स्वयंभू की

नाम स्त्री से दोनों अश्विनी कुमार
आकाश में उत्पन्न हुये॥३५॥ और
और अदिति के इन्द्रादि कबारह पुत्र
हैं उन में सब से छोटे बिष्णु हैं॥३६॥
इन की कथा सुनाकर वैशंपायन बोले
हे राजन्‌ अब मैं तुम से देवताओं के
गण और पक्षों के नाम कहता हूं वह पह
ले हैं रुद्रगण मरुद्गण साध्यग
ण भार्गव पक्ष वसु पक्ष विश्वेदेवा
विनता के पुत्र गरुड़ और अरुण ब
हस्पति जो आदित्यों में गिने जाते हैं
दोनों अश्विनी कुमार गुह्यक और
सब औषधी और पशु॥३७॥ ६०॥
मनुष्य इनका कीर्तन करने से सब
पापों से छूट जाता है और भृगु जी
ब्रह्मा के हृदय को फोड़ कर निकले

॥४१॥ उनके कवि नामी पुत्र औ
र और कवि के भृगु नामी पुत्र उत्प
न्न हुवा सबह पशु के वर्षा अ[illegible]
अवर्षा भय और अभय सूच
क कार्यों के लिये ब्रह्मा जी से नि
पुण होने के कारण से चौदहों भ
वनों में घूमते हैं और यही भृगु
योग सिद्धी से दो रूप धर कर सुर
और असुरों के गुरु हैं ॥४२॥४३॥
इसके पिछे भृगु जी के च्यवन ना
म बड़ा तपस्वी और धर्मात्मा पुत्र
उत्पन्न हुवा जिन्हों नें बड़े क्रोधि
त हो के गर्भ से गिर कर अपनी मा
ता को असुर से छुटाया ॥४४॥४५॥
इसके अनन्तर भृगु जी का विवा
ह मनु की कन्या से हुवा और उस

सो मनु जी के और्व ऋषि बड़े तेजस्वी
और शास्त्र की मर्याद को तोड़कर उत्पन्न
हुये ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ उनके पुत्र ऋ
चीक हुये और ऋचीक के जमदग्नि
और जमदग्नि के चार पुत्र उत्पन्न हु
ये उन चारों पुत्रों में सब से छोटे परशु
राम जी बड़े गुणवान सब शास्त्रों में नि
पुण और सब पृथ्वी के क्षत्रीयों को
नाश करनें वाले और बपा में रखनें
वाले हुये और और्व ऋषि के सौ पु
त्र थे उन में जमदग्नि सब से बड़े थे
और उन पुत्रों की अनगिनती सन्ता
न पृथ्वी पर फैली ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ इसके
पीछे ब्रह्मा जी के दो पुत्र धाता और वि
धाता नाम से उत्पन्न हुये थे दोनों मनु
जी के संग रहते हैं ॥ ५० ॥ उन ब्रह्म
कमल में रहने वाली लक्ष्मी जी जिस
के आकाश में चलनें वाले मानसी
पुत्र उत्पन्न हुये थे ॥ ५१ ॥ इसके उपरां

त वरुणके बडी स्त्रीसे एक बल ना
मी पुत्र, और सुरा नामी पुत्री जिस
दे देखकर देवता परमानन्द पाते हैं
उत्पन्न हुये॥५२॥ और अन्ने न
होनेके कारणसे जब प्रजा दुःखि
त हुई और प्रबल निबल को भक्ष
ण करने लगी तब सब जीवोंका ना
श करनेवाला अधर्म उत्पन्न हु
आ॥५३॥ उसका विवाह निर्ऋति
नाम स्त्रीसे हुवा और उसके तीन
पुत्र भय, महाभय, और मृ
त्यु नामी राक्षस सदैव पापकर्ममें
रत रहनेवाले उत्पन्न भये मृत्युके
कोई स्त्री, अथवा पुत्र नहीं हुवा वह
आपही अंतकरूप रहा॥५४॥५५॥
इसके पीछे ताम्रा देवीके पांच पुत्री
काकी, श्येनी, भासी, धृतराष्ट्री
और शुकी नामसे उत्पन्न हुई ५६

२ औं श्येनी कि श्येन नामके
॥२३१॥ आदिपर्व पत्र दोनी भासी के भा
॥ काकी के उलूक नामके पक्षी धृतरा
ष्ट्री के सब तरह के हंस और चक्रवाक
नामक पक्षी और शुकी के शुक अ
र्थात तोता नामके पक्षी उत्पन्न हुये ।
५९॥६०॥ इस के अनन्तर दक्ष की
क्रोधा नाम पुत्री के मृगी, मृगम
न्दा, हरी, भद्रमना, मातंगी, शा
र्दूली, श्वेता, सुर, भि और सुर
सा नाम ~~पुत्री के सुरभी~~, नव कन्या
उत्पन्न हुई ॥६१॥६२॥ मृगी के सब
मृग और मृगमन्दा से ऋक्ष और
सृमर भद्रमना से ऐरावता ऐरा
वत हाथी हरी से वानर और लं
गूर शार्दूली से सिंह व्याघ्र और द्वी
पी मातंगी से हाथी श्वेता से दिग्ग
ज उत्पन्न हुये और सुरभी के चार
पुत्री रोहिणी, गन्धर्वी, विमला और

और गरुड नामक पक्षी ॥

अनला उत्पन्न हुई और रोहणी
के जौ बैल उत्पन्न भी के घोड़े विम
ला के खच्चर नारी के लि आदि सा
त प्रकार के पिंड बृक्ष और अनला
के पुत्र की नाम शुकी हुई॥६२॥६८॥ औ
र सुरसा के कंक नामा पुत्र हुआ॥६६॥
और अरुणा की स्त्री श्येनी के महा
बली संपाति और जटायु उत्पन्न हुये इ
स के पीछे सुरसा सें नाग कद्रू सें सर्प
पें और विनता सें गरुड़ और अरुण
उत्पन्न हुये हे राजन यह सब स
ष्टि का वृत्तांत हम ने वर्णन कि
या जो कोई पापी मनुष्य इस को सुनै
गा वह पापों सें मुक्त होकर उत्तम
गति पावैगा॥७०॥७२॥ इति श्री
भाषा महाभारते आदिपर्वणि ष
ट्षष्टितमो अध्यायः॥६६॥ सत
सठिवां अध्याय॥ दैत्य दानव दे

वता गन्धर्व और अप्सराओं के
पृथ्वी पर अपने २ अंस से अवतार
लेने की कथा ॥ राजा जन्मेजय बोले
हे वैशम्पायन जी अब आप कृपा
कर के देवता दानव गन्धर्व [illegible] उ
रग राक्षस सिंह व्याघ्र मृग पन्न
ग पक्षी और सब महात्मा प्राणियों
के मनुष्य लोक में जन्म लेने की
कथा वर्णन कीजिये ॥ १ ॥ २ ॥ यह सु
न कर वैशम्पायन जी बोले कि मैं देव
ता और दानवों के पृथ्वी पर जन्म लेने
की कथा वर्णन करता हूं आप चित्त
दे कर सुनिये ॥ ३ ॥ देवताओं से दैत्यों ने
पहले पृथ्वी पर जन्म [illegible] लिया उ
न के नाम और जिस जिस ने जहां २
जन्म लिया वह हम आगे वर्णन कर
ते हैं ॥ दैत्यों के नाम पृथ्वी पर जन्म
लेने का संक्षेप वृत्तान्त ॥ विप्रचि
त्ति--- यह दैत्य इस लोक में जरा
संघ के नाम से विख्यात हुआ ॥ ४ ॥

हिरण्यकशिपु— यह शिशु
पाल नामी राजा हुआ॥५॥ प्रह
लाद का छोटा भाई संह्लाद—
यह बाह्लीक के वंश में शल्य
नाम से उत्पन्न हुआ॥६॥ अ
नुह्लाद— यह धृष्टकेतु के ना
म से विख्यात हुआ॥७॥ शिवि
— यह राजा द्रुम के नाम से वि
ख्यात हुआ॥८॥ बाष्कल—
यह राजा भगदत्त के नाम से वि
ख्यात हुआ॥९॥ अयशिरा, अ
श्वशिरा, अयःशंकु, गग
नमूर्धा वेगवान्॥ यह पांचों
दैत्य केकय देश में उत्पन्न हो
कर बड़े योधा राजा हुये॥१०॥
११॥ केतुमान— यह अमि

॥३४॥ आदिपर्व॥
तौ जा नाम से विख्यात बड़े उग्र
कर्म का करने वाला राजा हुवा॥
स्वरभानु — यह राजा उग्रसेन
नाम से विख्यात हुवा॥१२॥ अ
श्व — यह अशोक नाम से वि
ख्यात हुआ बड़ा पराक्रमी राजा
हुवा॥१३॥ अश्वपति — यह
सहार्दिक्य नामी बड़ा राजा हुआ
॥१४॥ वृषपर्वा — यह दैत्यरा
जा दीर्घप्रज्ञ के नाम से विख्या
त हुवा॥१५॥ अजक वृषपर्वा
का भाई — यह राजा शाल्व हुआ
॥१६॥ अश्वग्रीव — यह दैत्य
रोचमान नामी बड़ा बुद्धिवान
और कीर्तिमान राजा हुआ॥
१७॥ सूक्ष्म — यह राजा वृहद्

पहुआ ॥ १८ ॥ तुहुंड यह राजा सेना
बिंदु हुआ ॥ १९ ॥ दृबिप — यह रा
जा नग्नजित हुआ ॥ २० ॥ शंकच
क्र — यह राजा प्रतिबिन्ध्य हुआ
॥ २१ ॥ विरूपाक्ष — यह राजा चि
त्रधर्म नाम से विख्यात हुआ ॥ २२
वीर हर — यह दैत्य सुवाहु नाम
राजा हुआ ॥ २३ ॥ अहर — यह दै
त्य वाह्लीक नाम राजा हुआ ॥ २४
निचन्द्र — यह दैत्य मुंजकेश ना
म राजा हुआ ॥ २५ ॥ निकुंभ — यह
दैत्य देवाधिप नाम राजा हुआ ॥
२६ ॥ शरभ — यह दैत्य पौरव ना
म राजा क्षत्रि हुआ ॥ २७ ॥ कु
पथ — यह दैत्य सुपार्श्व
नाम राजा हुआ ॥ २८ ॥ क्रथन — य
ह दैत्य पार्वतीय नाम बड़ा तेज
स्वी राजक्षत्रि हुआ ॥ २९ ॥

॥ ३४२ ॥ १ प्रा॰ दि पर्व ॥
पालोम- यह दैत्य प्रहलादनामी
राजा वाहीक के वंश में उत्पन्न
हु॰ प्र॰ ॥ ३० ॥ चन्द्र- यह दैत्य चं
द्रवर्मा नाम कांवोज देश का रा
जा हुवा ॥ ३१ ॥ प्रर्क- यह दैत्य
ऋषिक नाम राज ऋषि हुवा ॥
३२ ॥ मृतपा- यह दैत्य पश्चि
मानूपक नाम राजा हु॰ प्र॰ ॥ ३३ ॥
गोज विरु- यह दैत्य द्रुमसे
न नाम राजा हुवा ॥ [illegible] ३४ ॥
[illegible] मपुर- यह दैत्य विश्व ना
म राजा हु॰ प्रा॰ ॥ ३५ ॥ सुपर्ण- य
ह दैत्य कालकीर्ति नाम राजा हु॰
प्रा॰ ॥ ३६ ॥ चन्द्रहन्ता- यह दैत्य
सुनक नाम राजा हुवा ॥ ३७ ॥ चन्द्र
विनाशन- यह दैत्य जानकी
नाम राजा हुवा ॥ ३८ ॥ दीर्घ [illegible]

जित्रु — यह दैत्य काशिराज
नाम राजा हुआ॥३९॥ सिंहिका
बेटा राहु — यह ग्रहकाथ नाम
[illegible] राजा हुआ॥४०॥ अनायु
का पुत्र विक्षर — यह दैत्य वसुमि
त्र नाम राजा हुआ॥४१॥ दूसरा
विक्षर — यह दैत्य पांड्यराष्ट्र का
अधिप नाम राजा हुआ॥४२॥ वृत्त
— यह दैत्य मणिमान नाम राजा हु
आ॥४४॥ क्रोधहंता — यह दै
त्य दण्ड नाम राजा हुआ॥४५॥ क्रो
धवर्द्धन — यह दैत्य दण्डधार ना
म राजा हुआ॥४६॥ कालेय नाम आ
ठ दैत्य — यह आठों दैत्य आठ ब
डे बडे पराक्रमी राजा हुए उनके ना
म ये हैं पहला मगधदेश में जयत्से
न नाम राजा दूसरा अपराजित
नाम राजा तीसरा भीम नाम निषा

दों का राजा चौथा अभिमान नाम रा
जा राजऋषि पांचवां महौजा नाम रा
जा छठा भीरु नाम राजऋषि सातवा
समुद्रसेन नाम धर्म और अर्थ के
तत्त्व को जानने वाला राजा और आठ
वां बृहत् नाम बड़ा धर्मात्मा राजा हु
वा॥५१॥५५॥ कुक्षि–एक दैत्य पर्व
तीय नाम राजा हुआ॥५६॥ क्रपथ
–एक दैत्य सूर्याक्ष नाम राजा हुआ॥
५७॥ सूर्य–एक दैत्य दरद नाम वाह्
ही क राजा हुवा॥५८॥ क्रोधवशा
नाम दैत्य गण–इस गण के दैत्यों
ने पृथ्वी पर बहुत से राजाओं में ज
न्म लिया उनके नाम ये हैं॥५९॥ म
द्रक, कर्णवेष्ट, सिद्धार्थ, कीटक,
सुवीर, सुवाहु महावीर, वाह्लि
क॥६०॥ क्रथ विचित्र, सुरथ नील,
चीरवास, कौरव्य॥६१॥ दंतवक्त्र जो
दुर्जय दानव का अवतार था, रु

॥ ३८५ ॥ आदि पर्व ॥

कर्मी, जन्मेजय ॥ ६२ ॥ अग्रवादि

वापर्व जभूरितेजा, एकलव्य, सु

सुमित्र, वाठधान, गोमुख ॥ ६३ ॥

कारूषय देश भूर्ति, श्रुतायु, उद्धह,

वृहत्सेन ॥ ६४ ॥ क्षेमो, उग्रतीर्थ,

कुहर, कालिंगपति, और इश्वर ॥

६५ ॥ ये सब राजा बडे पराक्रमी और

कीर्तिमान क्रोध वपा नाम दैत्यों

के गण से उत्पन्न हुये ॥ ६६ ॥ का

लनेमी — पपदैत्य उग्रसेन का

पुत्र कंपा नाम से महाबली विख्या

त हुवा ॥ ६७ ॥ इतनी कथा सुनाक

र बैशंपायनजी बोले हे राजन

दैत्यों के पृथ्वी पर जन्म लेने के पी

छे सब देवताओं ने भी अपने २ अं

शों से अवतार लिया उनके नाम औ

र जहां जहां जिसने जन्म लिया वह

आज वर्णन करते हैं ॥ देवताओं

के नाम पृथ्वी पर अवतार लेने

का हाल ॥ गंधर्व पति — यह अव
तार लेकर देवक नाम राजा हुवा ॥ वृह
स्पति — इनका अवतार द्रोणाचा
र्य हैं जो भरद्वाज के वंश में अयोनि
निज उत्पन्न हुये ॥ ६९ ॥ महा देव अंत
क काम और क्रोध — इन चारों देवता
ओं के अंश से संपूर्ण वेद शास्त्र औ
र अस्त्र बिद्या के जानने वाले द्रोणाचा
र्य के महावीर और तेजस्वी अश्वत्था
मा नाम पुत्र उत्पन्न हुवा ॥ ७० ॥ ७३ ॥
अष्टवसु — यह आठों वसु वशिष्ठ
जी के शाप और इन्द्र की आज्ञा से रा
जा शान्तनु के यहां गंगाजी के गर्भ से उ
त्पन्न हुये उनमें सब से छोटे सब श
त्रुओं को जीतने वाले और कुरुवों
को अभय करने वाले भीष्म जी थे
जिन्होंने सब शास्त्र विद्या के जान
ने वाले जमदग्नि के पुत्र परशुराम
जी से युद्ध किया था ॥ ७४ ॥ ७६ ॥ रुद्र
गण — [illegible] कृपि कृपाचार्य रुद्र

गणों का अवतार थे ॥११॥ द्वापर—
इनका अवतार शकुनि नाम महार
थी राजा था ॥१८॥ मरुद्गण इन दे
वताओं के अंश से विशिष्ट कुल में
सात्यकि और राजर्षि राजा द्रुपद
राजा कृतवर्मा और राजा विराट
उत्पन्न हुये ॥१९॥ ८३॥ हंस ना
म गंधर्वपति इस देवता के अंश
से व्यासजी का पुत्र धृतराष्ट्र ना
मी जो अरिष्टा का पुत्र था बड़ा ते
जस्वी माता के दोष और ऋषि
के कोप से अंधा उत्पन्न हुवा ॥८४
॥८५॥ हंस नाम गंधर्वपति का
छोटा भाई इस देवता के अंश से
राजा पांडु सत्यधर्म में रत बड़ा ते
जस्वी उत्पन्न हुवा ॥८६॥ सूर्य के
बेटे धर्मराज इसके अंश से विदु
रजी उत्पन्न हुये ॥८७॥ कलियुग
—इसके अंश से धृतराष्ट्र का पुत्र

॥३४८॥ आदिपर्व॥
दुर्योधन नाम उत्पन्न हुआ वह वडा
दुर्बुद्धि दुर्मति कुरुकुल को अपयश
देने वाला सब पृथ्वी के क्षत्रियों का
नाश करने वाला और महा भारत य
द्ध का रोपने वाला था॥८८॥८९॥
राव्रत्न के पुत्र आदि— इनके अं
शों से धृतराष्ट्र के दुश्शासन आ
दि सौ पुत्र बडे खोटे कर्म करने वा
ले उत्पन्न हुये और युयुत्सु जो वै
श्यांसें उत्पन्न हुवा था वह इनसो
पुत्रों अधिक था॥९०॥९१॥ इतनी
नी कथा सुन कर राजा जन्मेजय ने
कहा कि मैं धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों ना
म क्रम से सुना चाहता हूं यह सुन
कर वैशंपायन जी बोले कि उन
नाम यह है कि दुर्योधन १ युयुत्सु
दुश्शासन ३ दुस्सह ४ दुश्शल ५
दुर्मुख ६ विविंशति ७ विक

॥३४९॥ आदिपर्व॥
र्णा ८ सुलोचन १० बिंद ११ अनु
विंद १२ ~~[illegible]~~ दुर्द्धर्ष १३॥ सुबा
हु १४ दुःप्रधर्षण १५॥९३॥९४॥
दुर्मर्षण १६ दुर्मुख १७ दुष्कर्ण १८
कर्ण १९ चित्र २० उपचित्र २१ चि
त्राक्ष २२ चारुचित्र २३ अंगद २४
॥९५॥ दुर्मद २५ दुःप्रहर्ष २६ वि
वित्सु २७ विकट २८ सम २९ ऊ
र्णनाभ ३० पद्मनाभ ३१ नन्द ३२
उपनन्द ३३॥९॥ सेनापति ३४॥
सुषेण ३५ कुण्डोदर ३६ म
होदर ३७ चित्रबाहु ३८ चित्र
वर्मा ३९ सुवर्मा ४० दुर्विरोचन
४१॥९७॥ अयोबाहु ४२ महाबा
हु ४३ चित्रचाप ४४ सुकुण्ड

॥३५०॥ आदि पर्व॥

ल ४५ भीम वेग ४६ भीमवल ४७
बलाकी ४८ भीम ४९ बिक्रम ५०
॥४८॥ उग्रायुध ५१ भीमसार ५२
कनकायु ५३ दृढायुध ५४ दृढव
र्मा ५५ दृढक्षत्र ५६ सोमकीर्ति ५७
अनूदय ५८ ॥४९॥ जरासंध ५९
दृढसंध ६० सत्यसंध ६१ सहस्र
बाक ६२ उग्रश्रवा ६३ उग्रसेन
६४ क्षेम ६५ मूर्त्ति ६६ ॥१००॥ अ
पराजित ६७ पंडितक ६८ विषा
लाक्ष ६९ दुराधन ७० ॥१०१॥
दृढहस्त ७१ सुहस्त ७२ बातबेग
७३ सुवर्चस ७४ आदित्यकेत
७५ बहुवाषी ७६ नागदत्त ७७ अ
नुपायन ७८ ॥१०२॥ कवची ७९
निषंगी ८० दंडी ८१ दण्डधार ८२
धनुग्रह ८३ उग्रभीम ८४ रथ

॥२५१॥ आदिपर्व॥

वीर ८५ वीरबाहु ८६ अलो
लुप ८७॥१०३॥ अभय ८८ रौद्र
कर्मा ८९ दृढरथ ९० अनाधृष्य
९१ कुण्डभेदी ९२ विरावी ९३
दीर्घलोचन ९४॥१०४॥ दीर्घ
बाहु ९५ महाबाहु ९६ व्यूढोरु
९७ कनकांगद ९८ कुण्डज ९९
चित्रक १०० धृतराष्ट्र के ये सौ पु
त्र थे और एक पुत्र युयुत्सु नामी
वैश्यां से था इस प्रकार से सब पु
त्र १०१ थे और एक कन्या दुःशला
नाम था उसका ॥१०५॥१०६
इन सब की बड़ाई छुटाई नामों के
अनुसार है अर्थात जिसका ना
म पहले है वह अपने पीछे वाले
से बड़ा है धृतराष्ट्र के ये सब पु
त्र बड़े शूरवीर पण्डित [illegible] अ

स्त्र शास्त्र विद्या के जानने वाले और वेद शास्त्र में निपुण थे ॥१०९॥१०८॥ इन सब का विवाह इनके अनुरूप स्त्रियों से किया गया और द्रुपद पाञ्चाल नाम क्षत्र राज की पुत्री का विवाह पाकुनी की राय से सिंधु देश के राजा जयद्रथ के साथ किया गया॥ १०९॥११०॥ धर्मराज— इनके अंश से राजा युधिष्ठिर उत्पन्न हुये॥ वायु, इन्द्र और अश्वनी कुमार— वायु के अंश से भीमसेन इन्द्र के अंश से अर्जुन और अश्वनी कुमार के अंश से नकुल और सहदेव जो बड़े स्वरूपवान थे उत्पन्न हुये॥१११॥ चंद्रमा का पुत्र वर्चा— इनके अंश से अर्जुन का बड़ा प्रतापी पुत्र अभिमन्यु नामी उत्पन्न हुआ अभिमन्यु के

अवतार लेने के समय चन्द्रमा ने देवता ओं से यह कहा था कि यह मेरा पुत्र प्राण से भी प्यारा है मैं इसको पृथक् नहीं कर सक्ता परन्तु उनका कार्य करने के लिये यह पृथ्वी पर अवतार लेकर अर्जुन का पुत्र होगा और ईश्वर की उमर में यह प्राप्त होने पर नररूप अर्जुन अपने पिता और नारायण रूप श्री कृष्ण चन्द्र के न होने के कारण से यह महा अभेद्य व्यूह को तोड़ कर भीतर घुस जायगा और वहां जाकर बड़े बड़े शूर वीरों को यमपुरी पहुंचावेगा और उस दिन सब सेना की चौथाई सेना को अकेला मार कर संध्या होने पर मेरे पास चला आवेगा और पांडवों का वंश चलाने के लिये मेरा एक पुत्र भी उत्पन्न

होगा यह सुनकर देवताओं नें तारा
गणों के ईस्वर चन्द्रमा की पूजा करी
और कहा कि ऐसा ही होहै राजा जन्मे
जय यह अभि मन्यु तेरा पितामह
अर्जुन का था॥ १२३॥ १२५॥ अ
गिन— इन के अंश से धृष्टद्युम्न
उत्पन्न हुवा और शिखंडी स्त्री पू
र्व जन्म का राक्षस था॥ १२६॥ विश्व
देवाओं का गण— इस गण के
देवताओं के अंश से द्रोपदी के
पांच पुत्र उत्पन्न हुये उन के नाम
ये हैं के प्रति विंध्य सुत सोम, श्रु
ति कीर्ति शातानीक, और श्रुत
सेन॥ १२७॥ १२८॥ और बसुदेव
जी के पिता सूरसेन के एक पुत्री
पृथा नाम की ऐसी स्वरूपवान् उ
त्पन्न होने के पहले ही अपनी
फूफी के पुत्र को देने की प्रतिज्ञा
करी थी सो उस प्रतिज्ञा के

॥३५५॥ आदिपर्व॥
अन्न सार सूर वसेन ने पथा को
कुंति भोज नाम राजा को दे दिया
॥२९॥३२॥ उस ने उस कन्या
को महात्मा और ब्राह्मणों
की सेवा करने के निमित्त नियत कि
या एक समय दुर्वासा उग्र तपस्वी
ऋषि वहां आये उस कन्या ने उ
न की बहुत अच्छी तरह सेवा की
दुर्वासा ने प्रसन्न होकर पथा को
देव बसी करण मंत्र बताया और
कहा कि इस मंत्र से तू जिस दे
वता को पुत्र की कामना से बुला
वेगी वह आकर तेरी इच्छा को पू
र्ण करैगा॥२३॥१३६॥ दुर्वासा
तो चले गये और कुंती ने उस मं
त्र से सूर्य का आवाहन किया
और उन से जो गर्भ को धारण कर के
बड़ा तेजस्वी और सुपवान

कुरण्डल और कवच धारण किये हुये एक पुत्र को उत्पन्न किया और जाति बिरादरी के भय से उस को जल में बहा दिया॥१३९॥१४०॥ इस के पिछे उस बालक को जल में बहता हुवा राधा के पति अधिरथ ने जाते देखा वह उस को अपने घर ले आया और पुत्र भाव मान कर उस का नाम वसु षेण रक्खा थोड़े दिनों में वह बालक बड़ा हो गया था और सब वेद और शास्त्रों को पढ़ कर सब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हो गया था जिस समय वह पूजा करने बैठ जाता उस समय जो कोई ब्राह्मण उस से जो कुछ मांगता था वह उस को वही देता था॥१४१॥१४४॥ उसी समय में इन्द्र ने अर्जुन के हित के लिये ब्राह्मण का रूप धारण कर के उस

से कवच और कुण्डल मांगे जो उस
ने दोनों दे दिये और इन्द्र ने उस
के बदले में उसको एक शक्ति दी
और कहा कि देवता, मनुष्य, यक्ष,
गन्धर्व और राक्षस में से जिस कि
सी पर तू इस शक्ति को छोड़ेगा वह
मर जायगा ॥१४५॥ १४६॥ वह वसु
षेण नाम से पहले विख्यात रहा
परंतु कुंडल और कवच के हरे जा
ने पर उस का नाम पृथ्वी पर वैक
र्तन कर्ण हुवा ॥१४८॥ वह क
र्ण पृथा का पहला पुत्र था और
सूत के घर में बढ़ कर थोड़े दि
नों में दुर्योधन का मंत्री
हो गया हे राजन वह बड़ा वीर श
त्रुओं का नाश करने वाला और
सब शास्त्र धारियों में श्रेष्ठ

पा और उत्पत्ति उसकी स्वरूप के
अंश से थी ॥ १४९ ॥ १५० ॥ इसके पी
छे श्री सनातन नारायण भी वासुदेव
नाम से पृथ्वी पर प्रकट हुये ॥ १५१ ॥
शेष — इनके अंश से बलदेव जी उ
त्पन्न हुये ॥ सनत्कुमार — इनके अं
श से प्रद्युम्न जी उत्पन्न हुये ॥ १५२ ॥
इनके सिवाय बहुत से और देवता
ओं ने भी अपने २ अंश से वसुदेव
जी के कुल में अवतार लिया ॥ १५३
॥ अप्सराओं के गण — इन सब
देवियों के अंश से सोल
ह सहस्त्र कन्या उत्पन्न हुई और
उन सब का विवाह श्री कृष्ण जी के
साथ हुआ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ लक्ष्मी
— लक्ष्मी जी ने अपने अंश से
भीष्मक के कुल में रुक्मिणी ना
म जी सका अवतार लिया ॥ १५६

प्राचीं — यह देवी राजा द्रुपद के यहाँ
द्रौपदी नाम से प्रसिद्ध की अग्नि से
प्रकट हुई ॥१५७॥ वह द्रौपदी श्या
मा अत्यन्त सुंदरी कमल लोच
नी न बहुत बड़ी न बहुत छोटी स
ब लक्षणों से युक्त और कमल
की सी गंध रखने वाली थी ॥१५८
॥१५९॥ सिद्धि और धृति — इन्हों
ने कुंति और माद्री नाम से पृथ्वी
पर अवतार लिया॥ मति — यह
देवी अपने आप से गांधारी ना
म से प्रकट हुई ॥१६०॥ इतनी कथा सु
नाकर वैशंपायन जी बोले हे रा
जा जन्मेजय मैंने सब देवता गं
धर्व राक्षस और अप्सराओं
के पृथ्वी पर जन्म लेने की कथा
वर्णन की यह अंशावतार नाम

वैधनयपापघ्न आयु और विज
जयका देनेंवाला है और उनमनु
ष्योंके उनको सुननेके योग्यहैजो
परगुणों से दोष नहींलखजाते
हैं परमात्माकोजाननेवाला मनु
ष्य इसको सुनकर संसार दुःखों
से पीड़ा नहीं पाता है॥१६१॥१६५॥
इति श्रीभाषा आदि महाभारते
आदिपर्वणि [illegible] ऋषि
[illegible] तमो अध्यायः॥६१॥ अ
थ [illegible] वां प्रध्याय॥ कुरुवंश
के चलानेवाले राजादु:
ष्यन्तकीकथा॥ राजा [illegible] ज
न्मेजय बोले हे वै[illegible] शंपायन
जी आपने देवता आदिके पृथ्वी
पर अवतार लेनेकी कथा सुना

६ अब आप से कुरुवंश की कथा
आदि विस्तार पूर्वक सुना चाह
ता हूं ॥ १ ॥ २ ॥ यह सुन कर वैशं
पायन जी बोले हे राजा जन्मेज
य इस कुरुवंश का चलाने वाला
पहला राजा दुष्यन्त नामी हुवा
उसने अपने बल और पराक्र
म से सब पृथ्वी को समुद्र की सीमा
तक और म्लेच्छों के देशों की अव
धि तक जीत कर अपने वश में कि
या और उसका राज अनेक भो
गों के साथ किया ॥ ३ ॥ ४ ॥ उसके
राज्य में न वर्णसंकर उत्पन्न हो
ता था न खेती होती थी पाप होता
था सब मनुष्य धर्म में प्रीति र
खते थे और अर्थ धर्म को पाते
थे ॥ ६ ॥ चोरी कभी नहीं होती थी

॥२६१॥ आदि पर्व॥

मनुष्यों को क्षुधा और व्याधि का भय नहीं होता था चारों वर्ण अपने २ कर्म करते थे इन्द्र समय पर वर्षा करता था और २ पृथ्वी पर धान्य और २ पशु अच्छी तरह उत्पन्न होते थे॥ ८॥ १०॥ ब्राह्मण लोग अपना कर्म ठीक करते थे और झूठ कभी नहीं बोलते थे वह राजा ऐसा पराक्रमी और दृढ़ था कि मन्द्राचल पर्वत को अपनी दोनों भुजाओं से उठा कर ले जा सक्ता था गदा आदि शस्त्रों से युद्ध करने में अत्यन्त निपुण था और हाथी घोड़े आदि की सवारी भी अच्छी तरह करता था उस राजा का बल विष्णु के समान ते

॥३६२॥ आदिपर्ब्बे॥
जे सूर्य के तुल्य और अग्नि के समान
समुद्र और समापृथ्वी के अनुरू
प था प्रजा उसको बड़ा चाहती थी
और आप प्रजा का पालन धर्म से कर
ता था॥११॥१५॥ इति श्री भाषा
महाभारते आदिपर्व्वणि अष
ष्टितमोऽध्यायः॥६८॥ उनह
तरवां अध्याय॥ राजा दुःष्यंत के
वन में अहेर खेलने की कथा॥
इतनी कथा सुनकर राजा जन्मेजे
य बोले कि महाराज मैं भरतजी
के जन्म और चरित्र और शकुं
तला की उत्पत्ति का वृत्तान्त वि
स्तारपूर्वक सुना चाहता हूं॥१॥
और यह भी वर्णन कीजिये कि
राजा दुःष्यन्त ने शकुंतला को
कैसे पाया था सुनकर वैशम्पाय

नजी बोले के इक समय राजा दुःषंत बहुत सी चतुरंगनी सेना और बड़े बड़े पहर बीर जो खड़ग पाश आदि अनेक शस्त्र लिये हुये थे साथ लेकर बन मैं सिकार मारने गया ॥ २०५

चलते समय पहर बीरों के सिंहनाद और ताल मारने के शब्द शंख और दुन्दुभी आदि के घोष हाथियों की चिंघाड़ और रथों की झणझणाट से चारों दिशा व्याप्त हो गईं स्त्रियों ने अपने घरों पर चढ़ चढ़ कर राजा पर फूलों की वर खा कर ने लगे और आपस मे कहने लगी कि यह इन्द्र की समान और राजा दुःस्यन्त है जिस का पराक्रम रण मे वसद देवता के समान है और जिस के सन्मुख कोई शत्रु नहीं ठहर स

को॥६८॥११॥राजा उन स्त्रियों की प्रशंसा से प्रसन्न होता हुवा और ब्राह्मणों से संस्तुति सुनता हुवा हाथी पर सवार वन को चला॥१२॥१३॥राजा के पीछे २ जो पुरवासी लोग आशीर्वाद देते और जय २ बोलते जाते थे वह राजा की आज्ञा पाकर लौट गये और राजा उस वन में पहुंचा जो नन्दन वन के समान मनोहर था और जिसमें बिल्व, अर्क, खदिर, कैथा, धौक आदि अनेक उत्तम २ वृक्ष लगे हुये थे जहां तहां ऊंचे नीचे पत्थरों के ढेरों से पृथ्वी वहां की विषम हो रही थी न तो वहां जल था न कोई मनुष्य था और मृग और सिंह आदि अनेक वन के जीव फिरते थे॥१४॥१५॥राजा वहां पहुं

चा और पहुंचकर उस वनमें शिकार मारनेलगा और थोड़ी देरमें राजाने बाण, खड्ग, डंगा, गदा, और मूशल आदि अनेक शस्त्रोंसे सिंह व्याघ्र वराह मृग आदि अनेक जीवोंको मार डाला जो जीव राजा के पास होकर भागजाते थे राजा उनको तरवारसे काट डालता था और जो दूर रहते थे उनको बाणोंसे छेदन करके गिरा देता था इस प्रकार करनेसे उस वनके सब जीव व्याकुल होकर उस जंगलमेंसे बाहरको भागनेलगे वहुतसे भूख और प्याससे व्याकुल होकर नदी और तलाव आनेमान करके रेतकी और दौड़कर जाते और फिर जल न मिलनेके कारणसे मूर्छित होकर गिरपड़ते थे॥१९॥

॥२१॥ उससमय राजाकी सेनाके

मनुष्योंनें भूख के कारण से वहां
तमृगों को अग्नि में भून कर वृक्ष
तों को दूर कर और बहुत से वैसे ही
भक्षण कर गये बन के हाथी घा
यल होकर भय सें अपनी २ सूंड
सिकोड़ २ कर मूतनेलगे और ली
द कर नेलगे और वन छोड़ कर
भाजनेंलगे॥२८॥३०॥ उनके
भाजनें सें बहुत से मनुष्य दब क
र मर गये इस प्रकार से राजा नें
सेनांरूपी मेघ और बाणरूपी
बूंदों से सब बन को ढक कर मृ
गों को मार कर निश्शेष कर दि
या॥३१॥ इति श्री महाभारते आ
दिपर्व्वणि एकोनसप्ततितमो ऽ
ध्यायः॥६९॥ राजा दुःष्यंत का
एक दूसरे बन में जाना और वहां

॥३६१॥ आदि पर्व॥

एक बडे रमणीक आश्रम को देख
कर उस मैं जाना॥ वैशम्पायन जी बो
ले राजा दुःष्यंत इस प्रकार से हजारों
मृगों को उस वन मैं मार कर और अ
हेर करनें की इच्छा से भूखा प्यासा
उस बन को छोड़ कर आगे कूं चला
बन के अंत में एक बड़ा शून्य स्था
न देखा राजा वहां से भी आगे कूं च
चला गया और फेर एक दूसरे ब
न मैं पहुंचा जहां शीतल मन्द सुग
न्ध वायु चलती थी अनेक रंगों के
फूल खिल रहे थे कोकिला झिल्ली
आदि बहुत से पक्षी मधुर २ बोली
बोल रहे थे वृक्षों की छाया अत्य
न्त सघन थी भौंरे। जहां तहां गूंज
रहे थे एसा कोई वृक्ष न था जिस पर
पर फूल और भौंरे न थे राजा उ

॥३६८॥ आदिपर्व॥

सवन की आति अद्भुत पोभा
को देखता हुआ वन में चला॥
१।८॥ उसके जाने से वृक्षों पर
से फूल टूट कर राजा के उपर
गिरने लगे मानो वृक्ष राजा
पर फूलों की वर्षा कर रहे हैं ९
राजा पक्षियों के चहचहाट
को सुनता [redacted] सफल वृक्षों
की झुकी हुई डालियों पर गूंजने
वाले हुए भौंरों को शोभा को देख
[redacted] ता फूल रूपी वस्त्रों
[redacted] को पहने हुए वृक्षों की सुगं
धि को सूंघता [redacted] इन्द्र की ध्व
जा के समान ऊंचे वृक्षों की डालि
यों के आपस में मिलने की शो
भा को निरखता और बहुत से

बहुत से स्थानों में सिद्ध चारण
के समूह, अप्सरा ओं को गं
धर्व और किन्नर आदि कों
देख कर ता हुवा बन मैं उत्तम
चलती हुई वायु को खाता हुवा
[illegible] और उस नदी के किना
रे के ऊंचे वृक्षों की शोभा को दे
खता हुवा उस बन मैं चला जाता
था॥१०॥१६॥ थोड़ी दूर जाकर
राजा ने उस बन मैं एक आश्र
म अति श्रेष्ठ जहां सुंदर ना
ना प्रकार के वृक्ष लगे हुये थे
पक्षी मधुर बाणी बोल रहे थे
और अग्निकुंडों मैं अग्नि
जल रही थी देखा॥११॥१२॥

वह आश्रम जो मालिनी नदी
के किनारे पर बालखिल्यसं
न्यासियों और बहुतसे मु
नियों गणों से युक्त था राजा ने
उस आश्रम को प्रणाम किया
और उस नदी के अन्तपद्वी औ
र सब आदि की शोभा से प्रस
न्न होता हुवा राजा उस मनोहर
और देवलोक के तुल्य आश्र
आश्रम में गया ॥ १९ ॥ २२ ॥
नवराजा उस आश्रम के पास
पहुंचा तब देखता क्या है कि
वह नदी उस आश्रम के कि
नारे से लगी हुई प्रवाह करती
हुई वह रही है चकवाके आ
दि जलपक्षी और जल के जी

व किलोल कर रहे हैं और वानरसी
ह किनारे पर शार्दूल सर्पराज और
मतवाले हाथी क्रीडा कर रहे हैं औ
र उस नदी के किनारे पर एक आ
श्रम कश्यपजी का बना हुवा है
और वहां बहुत से मुनियों के ग
ण बैठे हुये हैं ॥२३॥२४॥ उस
आश्रम की शोभा नदी के कि
[illegible] के प्रताप से ऐसी थी जैसे
बद्रिकाश्रम की शोभा गंगा से है
राजा ने उस आश्रम में कश्यप
जी के दर्शन करने को जाने की
अभिलाषा से अपनी सेना के
मनुष्यों से कहा कि तुम लो
ग यहां ठहरो हम कश्यपजी के
दर्शनों को जाते हैं जब तक कि हम
न आवें तब तक तुम न आवो तब

ते के कहीं न जाता॥३१॥३२॥
और आपराजचिन्हों को दूर क
रके अपने साथ मंत्री और पु
रोहित को लेकर उस आश्रम
मैं गया। राजा वहां की शोभा को देख
कर भूख प्यास सब भूल गया
॥३३॥३४॥ जब आश्रम के भी
तर पहुंचा तब देखता क्या है कि
वहां यज्ञ हो रहा है ऋषि और
ब्राह्मण लोग सामवेद ऋग्वे
द यजुर्वेद और अथर्वण वे
दों के मंत्रों को पद क्रम घन आ
दि अलंकारों से पढ़ रहे हैं
कोई संहिता का पाठ कर रहा है
बहुत से ऋषि लोग जो यज्ञों की
क्रिया में निपुण न्याय तत्व और
आत्मविज्ञान में सम्पन्न

माहार में विशारद थे और मोक्षध
र्म अध्यात्म की बात को स्थापन करना दू
सरे के मत को खंडन करना और
सिद्धान्त मत को कहना इस के पर
म आनन्द पाइं और षट् दर्शन की निरु
क्ति को जानने वाले काल का ज्ञान
करने वाले द्रव्य कर्म गुण और ध्यान
रूप दिशाओं की बोली समझने
वाले और बड़े ग्रंथों को विचार
करने वाले थे आपस में बाती ला
प कर रहे थे राजा ने उनकी वा
णी को सुन कर और पांचि

नवतन [illegible] अनेक [illegible]
ब्राह्मणों को उत्तम आ
सनों पर बैठे हुए जप और होम
मैं परायण और इन्द्र के मंत्रियों
में ब्राह्मणों की करी हुई पूजा को

देखकर यह समझा कि मैं इस समय ब्रह्मलोक में हूं॥ ३५॥ ४८॥
राजा उस आश्रम की शोभा को देखकर तृप्त नहीं होता था उपरांत उस आश्रम में राजमंत्री और पुरोहित के साथ किसी एकांत और अत्यन्त मनोहर स्थान के समीप पहुंचा॥ ४९॥ ५०॥
इति श्रीभाषा महाभारते आदिपर्व एणीसप्ततितमो ऽध्याय॥ ७०॥ इकत्तरवां अध्याय॥
राजा दुःष्यन्त का सकुन्तला से मिलाप होना और शकुन्तला के जन्म होने की कथा॥
वैशंपायन जी बोले हे राजन वह राजा मंत्री और पुरोहित

को उसी जगह छोड़ कर आ
प उस स्थान के भीतर गया। और
र, वहां ऋषि अथवा किसी और
को न पाकर बड़े ऊंचे स्वर सें बोला
यहां कौन है॥१॥२॥ उस शब्द
को सुन उस स्थान मैं सें एक क
न्या परम सुन्दरी लक्ष्मी की पाद्दूस
तपस्वी के वेष मैं निकली॥३॥ औ
र राजा को देखकर आदर कर के बो
ली आप अच्छे आये॥४॥ इस के
पीछे उस कन्या ने राजा का पूजन
पाद्य अर्घ सें कर के उस को आ
सन पर बैठाया और क्षेम कुशल
पूंछने के उपरान्त मन्द मन्द मुस
कान के साथ बोली कहिये आप
का क्या काम है जो कुछ कहो सो क
रैं॥५॥६॥ राजा उस कन्या की

मधुर बोली को सुन कर बो
ला कि मैं कण्व ऋषि के दर्श
नों को पूजा आया था कहो वह क
हां गये हैं ॥७॥८॥ यह सुन कर व
ह कन्या जिस का नाम शकुन्तला
ला था सो बोली के मेरा पिता ऋ
षि वन में फल फूल लेने कूं गया
है तुम थोड़ा काल भर ठहरो वह
आता ही होगा ॥९॥ राजा यह सु
न कर और उस कन्या की मंद
मुसकान तेज और तप से पू
का पा मान रूप और यौवन को
देख कर बोला ॥१०॥११॥ कि तुम
कौन हो किस की बेटी हो और क
हां से और किस लिये इस वन
में आई हो ॥१२॥ तैने अपने द
र्शन मात्र ही से मेरे मन को ह

र लिया है इस कारण से मैं तुम
को जानना चाहता हूं ॥१३॥ यह सु
न कर वह कन्या हंसती हुई मधुर
बोली से बोली ॥१४॥ कि मैं धीर्य
वान धर्म से तपस्वी कण्व ऋषि
की पुत्री हूं ॥१५॥ राजा ने कहा कि
लोकपूजित ऋषिश्वर महाराज
तो उर्द्ध रेता कहलाते हैं अर्थात
उनका वीर्य नीचे नहीं उतरता है
और ऐसा कहते हैं कि चाहे धर्म
आपनी कृत्यसे डोल जावे परन्तु
शंसितव्रत ऋषि अपने व्रत
से कभी नहीं डोलता है फिर तू
क्योंकर ऋषि की पुत्री है ॥१६॥
॥१७॥ यह सुनकर शकुंतला बोली
कि मैं अपने जन्म और ऋषि
की पुत्री होने का व्रत्तांत वर्णन

करती हूं ॥१८॥ एक समय एक के
यहां आये थे उन्हों ने कण्व ऋषि
से मेरे जन्म का हाल वही
मैं पूछा था मैं ने उस समय कण्व
ऋषि के मुख से अपना जन्म
का हाल सुना था वही मैं तुम से क
हती हूं ॥१९॥ पहिले किसी सम
य में विश्वामित्र ने बड़ा उग्र
तप किया था उन के तप को
देखकर इन्द्र को अपने इन्द्रास
न के छीन जाने का भय हुवा
और उस ने इस डर से मेनका अ
पछरा को बुला कर कहा ॥२०॥
२१॥ कि हम तुझ को सब अप
सराओं में विशेष सम
झते हैं तुझ से हमारा एक काम

है उस को लूट न और चित लगा
कर उस को कर ॥ २२ ॥ आजकल
सूर्य के तुल्य तपस्वी विस्वामि
त्र ऋषि बड़ा उग्र तप कर रहे हैं
मुझ को उन से इन्द्रासन छीन
जाने का बड़ा भय हो रहा है इस से
तू अपने स्वरूप यौवन मधुर बो
ली आदि से ऋषि के चित्त को ए
सा लुभा ले कि वह अपना चित्त
तपस्या में से हटा ले ऐसा करने से
मेरा बड़ा उपकार होगा तू इस का
म को जैसे बने वैसे कर ॥ २३ ॥
२६ ॥ यह सुन कर मैनका बोली
कि आप जानते हैं कि विस्वामि
त्र ऋषि बड़े तेजस्वी तपस्वी
और क्रोधी हैं ॥ २७ ॥ आप भी
उन से डरते हैं फिर मेरे डरने

मैं कथासंदेह है॥२८॥ हे महारा
ने यह विश्वामित्र ऋषि वही
है जिन्हों ने वशिष्ठ जी के सब
पुत्र मार डाले और तप बल से क्ष
त्री से ब्राह्मण हुये॥२९॥ इन्हों
ने ही अपने तप के प्रभाव से
कौसिकी नाम नदी को प्रघट कि
या॥३०॥ और फिर जब वह ऋ
षि तपस्या करने को किसी सम
य पहले चले गये थे और उस स
मय अकाल पड़ने पर राजा त्रिंश
तंग ने उनके कुटुंब की स्त्रि
यों का पालन किया था तब
तपस्या से लौटकर आने पर
ऋषि ने उस नदी का नाम पा
रा रक्खा और मतंग को प

सकराया ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ उस य
समे आप से भी मैं को भयभी
त होकर गये थे ॥ ३३ ॥ देखो इ
नहीं विश्वामित्र ने क्रोधित
होकर दूसरे लोक की रचना के
रने को नक्षत्रों को बनाया था ॥
३४ ॥ भला ऐसे तपस्वी ऋषि
से मुझ को क्यों कर डर न होवे इस
से आप ऐसा उपाय करिये जिस
से वह ऋषि मुझ को अपने क्रो
ध से न जलावे ॥ ३५ ॥ क्योंकि वह
अपने तप के बल से सब लो
कों को जला सक्ते हैं पृथ्वी को अ
पने पग से कंपायमान कर सक्ते
हैं मेरु परवत को फेंक सक्ते हैं
और दिशाओं को घुमाय स
क्ते हैं ॥ ३६ ॥ ऐसे जितेन्द्री और

॥ ३ चर॥ अग्रादिपर्व॥

अग्नि के समान तेज रखने वा

ले ऋषि को मैं क्या कर सक्ता हूं। कैसे के

र सक्ती हूं॥ ३७॥ उनका मुख अ

ग्नि ने त्र सूर्य चन्द्रमा और ता

रा जिह्वा काल के समान है मे

री सामर्थ्य उनको छूने की न

हीं है॥ ३८॥ तुम भी तो विचार

करो कि जिसके प्रभाव से यम

राज, चन्द्रमा, महर्षि, विश्वे

देवा और बालखिल्य ऋषि

डरते हैं उनके सन्मुख मुझ स्त्री

की क्या सामर्थ्य है जो कुछ

कर सकै॥ ३९॥ इससे आपमे

री सहायता के लिये वायु औ

र कामदेव को भी मेरे साथ क

र दीजिये जिसमें वायु मेरे व

सोंको उडा कर मजको न उनके
रहे॥४०॥४१॥ इन्द्र नें वायु और
कामदेव को मैनका की सहायक
करनें के वास्ते आज्ञा दी और वह
सहाय करनें को लेकर इन्द्र का
काम करनें के लिये वहां सें विश्वा
मित्र रिषि के आश्रम को गई॥
४२॥ इति श्री भा बा महाभा तें
आदिपर्वणी एकसप्ततीतमो
अध्यायः॥७१॥ बहत्तरवां अ
ध्याय॥ सकुंतला के जन्म की
कथा का वर्णन॥ जब मैनका
अप्सरा इन्द्र सें बिदा होकर वा
यु और कामदेव को साथ ले
कर विश्वामित्र के आश्रम में
डरती डरती पौंहुंची तब पह
ले विश्वामित्र को प्रणाम करी

॥ २८४ ॥ आदिपर्बे ॥
और फिर क्रिड़ा करने लगी
क्रीड़ा करते में बायु ने उस के च
न्द्रमा के समान प्रकाशमान
प्रकाशमान वस्त्रों उड़ादि
या और वह नंगी होकर ब
स्त्र पकड़ने को हंसती और दौ
ड़ती हुई बिशामित्र जी के
सन्मुख आई और बिस्वामि
त्र उस के वह पनाद्दित और
नंगे शरीर को देख कर काम
देव की सहायता से काम के ब
श में हुये ॥ ६ ॥ ७ ॥ और उस
को बुलाकर उसके साथ बि
हार किया वह अपसरा
उन कै पास बहुत बनी रही और
उन दोनों ने आपस में रोषा वि
द्वीर्घ काल था बहोत दिन में

॥१८५॥ आदि पर्व॥

विहार किया एक रात का दिन एक २ के

बरस के समान बीता अथवा दिन के

माफक मालूं होता था थोड़े दिनों के

पीछे हिमालय के शिखर पर माल

नीन दी के पास उस मैनका के ए

क कन्या हुई॥ ९॥ और वह आप

सरा देवताओं का कार्य सिद्ध जा

न कर उस कन्या को मालती नदी के

किनारे पर छोड़ कर वहां से इन्द्रलो

क को चली गई॥१०॥ मैनका के च

ले जाने पर वहां के पक्षी उस कन्या

के पास आ बैठे और उसको अ

पने परों से इस प्रकार ऐसे छिपा

लिया जिस मैं मांस के खाने वाले

जीव वहां आकर उसको खान जा

वैं॥ ११॥ १२॥ उसी समय मैं कण्व

ऋषि भी वहां सन्ध्योपासन

करने के निमित्त नदी के कि

॥३८॥ग्राहिब॥
नारे पर आये और उस कन्या
को छिपोंसे छिन देख क
र अपने आस्थान अस्रं पर ले
आये और पुत्री भाव मान कर
उसका पालना सुकिया॥१३॥
धर्म शास्त्र के मत से तीन पिता
होते हैं एक तो ओ पिता होता है
जिसका शरीर से उत्पन्न हो
दुसरा पिता ओ जो प्राण दे और
तिसरा पिता ओ जो अन्न खा
ण कूं देवे॥१४॥ इस कारण से
हे राजा कराव चि मेरे पिता हैं और
उन्होंसें पुत्री भाव प्रीत रख
ते हैं और मैं उनसें पिता भाव
मानती हूं और मेरा नाम श

रा दपर्व ॥
ाता है किसी
किये ग्रौर इन को
॥४१॥ कोई मनुष्य
अर्जुन की ग्रौर देखि
उनके बाण लेने ग्रौर चढ
ग्रौर धनुष खींच में मैं ग्रंतर
ता है ॥४२॥४३॥ इसीप्रकार सें व
भी कृष्णजी को भी देख नहीं सका है
कार देखराजने उनदोनों बीरों के समा
जनको दिव्यपुष्पों की बर्षा से ढक जाइसके पीछे
भी कृष्णजी ने धनुष खींचकर ग्रर्जुन के देखते
देखते उनके बामपाषव में बाण मारे तब ग्र
र्जुन ने हंसकर बड़ी धारवाले बाणों से भी कृष्ण
जी का धनुष काट डाला ० ग्रौर उनकी छा
ती में दश बाण मारे उनसें वेच्छिन्न होकर
ऐसे भी कृष्ण रथ के ईडे को पकड़कर खड़ी रह
तक बैठे रहे उनकी यह दशा देखकर रथ
को नें कोलाहल की उनके उपर दया को प्राप्ति
करके रथ को हांकके ग्रचेत भी कृष्ण के दू
र ले जाया ॥४४॥५१॥ इति श्री भाषा महा
भारते विराटपर्वणी चतुःषष्ठितमोऽध्या

ता
॥ अर्जुन को दुर्यो[ध]
...कार ए से आ गन ... वन
...ने मे जय तब भी घ... फिर
...गये तब बड़े मन वाला दु... र्जुना
...कार के धनुष लिये हुये अर्जुन ता हु... न के
... न का
म रख आया ॥ ८ ॥ और एक भल्ल धनु... उसके
तक खींच कर अर्जुन के ललाट में मारा ... र्वत क
ग में से अर्जुन की शोभा ऐसी होगई मानो
के एक शिखर पर अकेला वा सरखड़ा है ॥ ३ ॥ ... र्जुन के
सिर लगे हुये बाण से अर्जुन का माथा चापा होगया
और उसमें से उष्ण रुधिर की धार निकलने लगी ॥ ४ ॥
उस बाण के लगने से अर्जुन ने क्रोधित होकर अ...
और शिव से कुछ कम दृढ़ जो रखने वाले बाणों को
लेकर दुर्योधन को मारना प्रारम्भ किया ॥ ५ ॥ तब दु
र्योधन ने भी और बाण अर्जुन के मारे और अ
र्जुन ने दूसरे बाण दुर्योधन के मारे इस प्रकार से वे
दोनों अजमीढवंशी कुछ काल तक अच्छे प्रकार
से लड़ते रहे ॥ ६ ॥ विकर्ण पर्वत के तुल्य मतवाले
हाथी पर सवार होकर साथ में चार रथी लिये हुये अ
र्जुन पर दौड़ा ॥ ७ ॥ तब अर्जुन ने बड़े फल का लोह बा
ण लेकर कानों तक खींच कर उस शीघ्रता से आने वा
ले हाथी के शिर में मारा ॥ ८ ॥ और वह बाण उस हाथी के

र्व॥

मा... च लागया जहां तक पर लगेथे मानों
इन्द्र... रा मान पर्वत्त को चीर कर घुस गया है
॥९... ने से वह हाथी [illegible] पकार पीड़ी तहोकर
पृथ्वी... र से गिर पड़ा जैसे वज्र के गिरने से पर्व
तका... कर गिर जाता है ॥१०॥ उसके गिरने प
र विक... उतर पड़ा और भय से पृथ्वी छोड़ कोद
कर वि... ति के रथ पर सवार होगया ॥११॥ फिर अ
र्जुन ने... वज्र रूपी [illegible] बाण से पर्वत रूपी हाथी
को बैस... एक बाण दुर्योधन के वक्षस्थल में मारा ॥१२॥
और ब... से बाण मार कर सब योधाओं को घायल कर
दिया इस प्रकार से हाथी का मरना और विकर्ण आदि सब
योद्धाओं के घायल होके भागने को देख कर दुर्योधन
भी रथ को फेर कर उस ओर भागा जिधर अर्जुन न था॥
१३॥ १४॥ अर्जुन ने उसको भागते हुये और रु[illegible]
धिर से लिप्त घायल देख कर तालियां बजाई ॥१५॥
और हा कि अरे दुर्योधन तू बड़ी कीर्ति और यश को छो
ड़ कर रण से विमुख होकर क्यों भागता है क्या तेरा
गर्व घट होगया अब क्यों जय के बाजे नहीं बजवाता है॥
१६॥ मैं कुन्ती का तीसरा पुत्र युधिष्ठिर का आज्ञाकारी
भाई हूं मैं युद्ध में [illegible] स्थित हूं तू क्यों भागा जाता है अ
ब अपने मुख को फेर कर हमारा सब धन दे और अ
पने [illegible] पूर्व कृत आदि कर्मों को याद कर तेरा नाम दुर्यो
धन नि[illegible] फल कर दिया गया है युद्ध से भागने वा

ले को नाम दुर्योधन कदाचित् नहो ना [illegible] ष्ट
मैं नहीं देखता हूं कि आगा आपको पीछे [illegible] चा
कर सके इस से अच्छा है कि तू पु [illegible] आप
ने प्यारे प्राणों को बचा लेना ॥१९॥ [illegible] नाम
हाभारते विराट पर्वणी पंचषष्टित [illegible] यः ॥
६५॥ छ्यासठ का अध्याय ॥ अर्जुन के [illegible] हर षि
यों से युद्ध होना सब कामो हित होजाने [illegible] र्जुन को उ
न के वस्त्र हरण करना कौरवों की हार [illegible] र जाना ॥
वैशम्पायन जी बोले हे राजा जन्मेजय उ [illegible] कार से
बुलाये जाने पर दुर्योधन बाणों से रूप अंकुश से अ
भिभूत और क्रोधित होकर मत वाले हाथी औ
र पैर से कुचले हुये सर्प की भांति रथ फिरवा कर
अर्जुन के सन्मुख लौटा ॥१॥२॥ उस धाय ले को इस
प्रकार से लौटते हुए देखकर नरवीर कर्ण ने आगे ब
ढकर उसको रोका और उत्तर की ओर से आप अर्जु
न के सन्मुख आया ॥३॥ उसी समय पाण्डु पराजय कर
ने वाले भीष्म जी भी धनुष बाण लिये हुये लौट पड़े
और उन्होंने दुर्योधन के पपिछे म और जाकर उस
की रक्षा की ॥४॥ इसी प्रकार से द्रोणाचार्य कृपाचा
र्य विविंशति और दुःशासन भी धनुष बाण लि
ये हुये लौट पड़े और दुर्योधन के अर्थ अर्जुन के स
न्मुख चले आये ॥५॥ अर्जुन ने [illegible] उन सब महा
वीरों को सेना सहित पूर्ण जल प्रवाह की भांति
लौटा हुआ देख कर सर्प की भांति सब को नम्र

…र्दि॥

न… ६॥ उन सब वीरों ने अपने २ अस्त्र ले

कर… इस प्रकार से बाण वर्षा किई जैसे पर्वत

पर… पड़ते हैं ॥७॥ तब अर्जुन ने अपने अ

स्त्रों से… बाण वर्षा को रोक कर और हटा कर

२ दूस… सी अस्त्र को प्रगट किया जो किसी

पदार्थ… न हीं सकता था और मोहित कर

में बाल… ॥८॥ और सूत्रधार और पत्र रखने

वालों… से सब दिशाओं को व्याप्त कर के उन दि

वध… पा हुई सब कौरवों के मन को पीड़ि

त कर… ॥९॥ और महा [illegible] नाद प्राप्त को दो

नो हाथों से बजा कर पाण्डव पृथ्वी और आका

श को पूर्ण कर दिया ॥१०॥ उस को सुन कर

सब कौरव वीर मोहित हो गये और अपने रहा

थों से धनुषों को छोड़ २ कर जहां के तहां रह गये ॥११

उन सब को अचेत देख कर अर्जुन ने उत्तरा के

वचनों को स्मर्ण करके विराट पुत्र से कहा कि जब ता

क सब सेना अचेत है तब तक तू सेना के भीतर जा

के द्रोणाचार्य और कृपाचार्य के श्वेत वस्त्र कर्ण के पी

ले वस्त्र और अश्वत्थामा और दुर्योधन के नीले

वस्त्रों को ले आ भीष्म मेरी सम्मोहन में नहीं है क्योंकि

वे अस्त्र के प्रतिघात को जानते हैं इस से तू उन के बायें ओ

[illegible] र से जा यह सुन कर विराट पुत्र बाग डोर

छोड़ कर रथ से कूद पड़ा और महारथियों के व

[illegible] को सोतों को लोकर फिर रथ ...
१२॥ १५॥ और सब नहरी ज ...
ड़ों को हांकर कौरवों की सेना को ... और
प को वाहिर ले आया॥१६॥ उ ... कृपदे
ख कर भी[illegible] जी ने उसके वा ... अ
न में वाणों से भी[illegible] के रथ के घोड़ ... कर
१० वाण भीष्म जी के [illegible] को ... ॥१७॥
और उन को छोड़कर निर्विघ्नता से र ... के वा
हर निकल कर इस प्रकार से आ खड़ा ... जैसे
सूर्य वादल को फाड़कर निकल आता ... ॥१८॥
इसके पीछे दुर्योधन आदि सब [illegible] वीर सचेत होगये
और दुर्योधन ने [illegible] ने उस देवता के तुल्य अर्जुन
को अकेला खड़ा हुआ देख कर भीष्म जी से कहा
कि आप से यह अर्जुन किस प्रकार से मुक्त हुआ ऐसा
यतन कीजिये जिससे वह मुक्त न होकर आने न
पावे यह सुनकर भीष्म जी ने हंस कर कहा कि तेरी
बुद्धि कहां है और उस समय पराक्रम तेरा कहां गया था
॥१९॥२० जब धनञ्जय ने बाणों को छोड़ कर सो रहि
[illegible] था जिस प्रकार अन्न काम न पाप मैं नहीं है न
[illegible] हीन कर्म करना चाहता है यदि तीनों लोक भी
उसको मिलते हों तब भी अर्जुन अपने धर्म को न
छोड़े जा यही कारण है कि तुम सब को मोहित हो
ने पर उस ने किसी को नहीं मारा तब तुम कौरवों

कौरवों को रो मोह के वस में हो कर आप ने प्रयोजन को
नष्ट मत करो शोका मत करो सो निर्विघ्न तासें करो अ
वे अर्जुन को औरें जीत कर राजा मैं दो वैसम्पायन जी
बोले हे राजा जन्मेजय को थित और नष्ट प्रयोजन रा
जा दुर्योधन आप ने पिता मह के उत्त हितकारी वचनों
को सुन कर चुप हो रहा और कौरवों ने भी जो दुर्योधन को
घेरे खड़े थे अर्जुन से पीवडी हुई अ जिन को देख क
र भीष्म जी की बात को परम हित माना और वहां
से सब लौट दिये उस समय अर्जुन ने प्रसन्न हो कर
एक मुहूर्त तक साम वचन कह कर भीष्म जी और
द्रोणा चार्य और कृपा चार्य और अश्वत्थामा आदि
अन्य कौरवों के वृद्ध मान लोगों के चरणों में वाण डाल
कर यथा योग्य सत्कार हुई होत और नमस्कार की और र
कवाण मार कर दुर्योधन के उत्तम रत्न जड़ित मुकट को
काट डाला ॥२८॥२७॥ इसके उपरान्त गांडीव धनुष के
पाद से सब लोकों को पाहित कर के उसने देवदत्त नामी
शंख बजाया उस से पाण्डवों को मन भय भीत हो गये
और फिर अपने रथ की ध्वजा से सब को निरादर
करके वहां रण भूमी में स्थित रहा और प्रसन्नता पूर्वक
विराट पुत्र से बोला ॥२८॥२९॥ कि अब तुम्हारे पशु हम
ने जीत कर लिये चलो और यह लौटाले चलो और नग
र को चलो तुम्हारे सब पाप अब चले गये सब देवता
अर्जुन और कौरवों के उस बड़े समागम को देखकर
प्रसन्न हुए और अर्जुन के कर्मों को विचारते हुये ।

पने २ स्थान को चले गये॥३०॥३१॥ इति श्री भाषा महा
भारते विराटपर्वणि [illegible] तमोऽध्याय॥६६॥ स
डसठका ऽध्याय॥ अर्जुन का कौरवों को विजय करके
नगर को लौटना, और दूतों को जय का संदेशा लेकर न
गर में भेजना॥ वैशंपायन जी बोले हे राजा जन्मेजय जब
अर्जुन ने राजा विराट के धन को जीत कर जाथा [illegible] त
ब भागे हुये कौरवी सेना के बहुत से मनुष्य मिले
जो युद्ध के समय भय से जहां तहां बन में आ लुके
थे, और अब कौरवों के चले जाने पर बन [illegible] से नि
कल कर भूख पियासे, और परदेश के कारण से, अचे
तसे चले जा रहे थे उन्हों ने, अर्जुन को देख कर प्र
णाम किया, और कहा कि हम लोग, आप [illegible]
आज्ञा का क्या प्रिय करें अर्जुन यह सुन कर बोला कि
तुम लोग डरो मत, और धैर्य धारण करो मैं क
भी पीड़ित को नहीं मारता हूं जाओ, और तुम्हारा कल्या
ण होवे॥२॥५॥ वैशंपायन जी बोले हे
राजा जन्मेजय यह सुन कर सब योधा, और नें, अ
र्जुन को आयु की [illegible] र्ति, और यश पाने
का आशीर्वाद देकर प्रसन्न किया॥६॥ इनके सिवा
य, अन्य कौरव भी उस मतवाले हाथी के तुल्य
और लौट कर राजा विराट के पास जाने वाले वीर
अर्जुन के सन्मुख [illegible] तब अर्जु
न ने उत्तर से कहा कि हे तात तू, अब जानता ही
है कि पांडव सब तेरे पिता के पास रहते हैं पर

नो मन उर में प्रवे प्र[redacted] करने पर उनकी प्रसं
सा न करना है सान हो कि राजा मत्स्य भयभीत होक
र नाश होजाय ॥१॥९॥ शत्रुओं को जय करने और गौ
ओं के लौटाने में जो कर्म मैं ने किया है उसको तुम अ
पना किया हुआ कर्म अपने पिता के सन्मुख कहना॥
१०॥ यह सुनकर उत्तर बोला जो कर्म तुमने किया है वह
अपार है मेरी सामर्थ्य वैसा कर्म करने की नहीं है परन्तु
जबतक आप न कहैंगे तबतक मैं यह न कहूंगा कि यह
कर्म आपने किया है ॥११॥ वैशम्पायनजी बोले हे रा
जा जे जय अर्जुन रण भूमी से चल कर स्मशान में
जहां छुपाकर बैठा था वहां आया और रथसे उतर पड़ा
तब अग्नि की तुल्य महा कपि ध्वजा प्राणियों सहित आका
श को चले गए और रथ हमारा था सो रचित ध्वजा अन्तर्धा
न होगई उस समय वालों से घोष ले अंग अर्जुन ने
उत्तर रथ में सिंह का चिन्ह रखने वाली ध्वजा लगा
ली और सब पाण्डव धनुष और तरकसों को पूर्ववत
छोड़कर के वृक्ष पर रख कर वहां से सारथी होकर उत्त
र को रथमैं बैठाकर और वेणी बांधकर फिर अपना स्त्री
रूप वृहन्नला का सा बनाके नगर की ओर चल दि
या वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय उधर तो कौ
रवों ने भाग और महा दुःखी होकर हस्तिनापुर की
राह ली और इधर अर्जुन ने आगे बढ़कर मार्ग
में उत्तर से कहा ॥१२॥१३॥ कि देखो यही सब गोक
ल है जो आ जाता है अब हम इस समय यहीं ठहर
कर घोड़ों की स्नान करा कर और पानी पिला
कर आराम देंगे तुम शीघ्र इन गोपालों को भेजकर

नगर में अपनी जय का संदेशा भेजदो॥ १८॥ २०॥ यह सुनकर उत्तर ने प्रीघता से ग्वालों को बुलाकर कहा कि तुम लोग नगर में जाकर यह संदेशा राजा से कहदो कि सब शत्रु हार कर भाग गये और गौ जीतलीं॥ २१॥ इसके पीछे उन दोनों ने भले प्रकार से मंत्र किया और उस घोकार के वृत्त को फिर पूर्ववत ठीक करके विजय होने के आनन्द से प्रसन्न होकर वहां से वृहन्नला रूपी अर्जुन को सारथि करके उत्तर रथ में बैठकर नगर की ओर चलि दिया॥ २२॥ २३॥ इति श्री भाषा महाभारते विराटपर्वणी सप्तषष्ठितमो ऽध्यायः॥ ६७॥ अठसठवां अध्याय॥ उत्तर का नगर में पहुंचना और राजा विराट का जय का संदेश सुनकर प्रसन्न होना और द्यूत खेलना और युधिष्ठिर की नाक में पासा मारना और रुधिर का निकलना॥ वैशम्पायन जी बोले हे राजा जन्मेजय इधर का तो वृत्तान्त हो चुका अब उधर का अब उधर का वृत्तान्त सुनो जिधर राजा विराट त्रिगर्तदेश से युद्ध करने गया था वह राजा त्रिगर्तदेशी महाराजा को सेना सहित जीतकर चारों पांडवों सहित [illegible] बड़ी प्रसन्नता पूर्वक अपने नगर में आया॥ १॥ २॥ और पांडव आदि सब क्षत्रियों सहित राजसभा में सुन्दर आसन पर बैठा उस समय ब्राह्मण और रत्न वृद्ध लोग राजा के पास आये राजा ने उन सब को प्रसन्न करके विदा किया उपरान्त राजमंदिर में जाकर

उस ने पूछा कि उत्तर कहां है तब स्त्रियों और कन्यां
ओं ने और दासदासि[redacted]यों ने कहा कि कौरव वो ने भी
ष्म कर्ण दुर्योधन कृपाचार्य द्रोणाचार्य और अ
श्वत्थामा आदि छै महारथियों के साथ नगर के
उत्तर और से आकर राज्य की गोउ हरी थी उसको
सुन कर उत्तर क्रोध करके साहस से उन छै महा
रथियों से अकेला बृहन्नला [redacted] सारथी सहि
त युद्ध करने गया है ॥ ३ ॥ ८ ॥ वैशंपायनजी बो
ले हे राजा जन्मेजय राजा विराट ने उत्तर का अकेला
जाना और बृहन्नला का सारथी होना सुन कर बड़ा
शोच किया और राजा उस ने अपने मुख्य मंत्रियों को
बुला कर कहा ॥ ९ ॥ कि कौरव अथवा जोई राजा हो
गा वह त्रिगर्त देशियों की पराजय सुन कर कभी रण
कर मैं को न ठहरेगा इससे बहुत शीघ्र उन सेनाजनों
को जो घायल नहीं हैं उत्तर की रक्षा के लिये भेजदो ॥
१० ॥ ११ ॥ [redacted] जितने रथ घोड़े हाथी हैं [redacted]
[redacted] सबको शीघ्र तैयार करा के भेजदो इस प्र
कार से आज्ञा [redacted] देने पर जब चतुरंगिनी सेना अ
नेक वीर और शस्त्र युक्त तयार हुई तब राजा ने आ
दि किसी आज्ञा करदे खो कि राजकुमार जीता है वा म
रगया अभी समझ से जिस रथी का सारथी नपुंसक
हो वह कब पसें जीता होगा ॥ १२ ॥ १४ ॥ वैशंपायनजी
बोले हे राजा जन्मेजय उस समय युधिष्ठिर ने राजा को
दुःखी देख कर कहा कि जो बृहन्नला सारथी है तो पार्थ

हमारी गौवौं कौन ले जा सकेंगे॥१५॥ तेरे पुत्र ने देव
ऊदिन का सारथी के साथ अनुष्ठान किया है व
ह अय से सारथी के होने से सब कौरव और देवता
असुर सिद्ध और राक्षसों को भी जीत स[illegible]तो
है॥१६॥ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय इ
सी अवसर मे उत्तर के भेजे हुये दूत आ पहुँचे औ
र उन्होंने विजय होने का संदेशा कह सुनाया॥
१७॥ मंत्रियों ने उस को सुनकर राजा से जाकर क
हा कि महाराज कौरव पराजय हुये और उत्तर गौ
वौं को जीत कर नगर के निकट आ पहुंचा है और
अपने सारथी सहित कुशल है॥१८॥१९॥ वह
सुनकर युधिष्ठिर बोला भला आरब्ध से गौ
जीत लीजाई और कौरव भागे परन्तु इस में कोई
आ[illegible]श्चर्य की बात नहीं है तेरा पुत्र क्या जि[illegible]
[illegible] सका सारथी वृहन्नला है वही जय कर सका
है वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय राजा विरा
ट पुत्र की विजय सुनकर बहुत प्रसन्न हुवा और दूतों
को वस्त्रादिक देकर मंत्रियों को आज्ञा दी॥२०॥२२॥
सब राजमार्गों को पताकाओं से अलंकृत करो औ
र चत्वर खकार सब देवताओं की पूजा करो॥२३॥ औ
र मतवाले हाथी पर बड़ा घंटा लेकर एक मनुष्य को
सवार करदो कि सब चौराहों पर वह हमारी विज

य धोभित करैं और रथ स्यर घोड़ा कुमारी और अलं
कृत गणिका और रथ वाले पुत्र की आगोनी को भे
ज दो ॥ २४ ॥ २५ ॥ और उत्तरा भी सब [stain] ऋंगार क
रके कुमारियों के साथ उत्तर की आगोनी को गय ॥
२६ ॥ वैशम्पायन जी बोले हे राजा जन्मेजय राजा की
आज्ञा से सब नगर मांगल्य वस्तुओं से संयुक्त कि
या गया और सुन्दर स्वरूपवान स्त्रियां दधि और
दूर्वा आदि मंगल वस्तु लिये हुये और भेरी पणव
तूर्य नांदीर और ढोल आदि अनेक बाजों सहित
सूत और मागध सब अनन्त [stain]प राजकुमारीराज
पुत्र की आगोनी को गये ॥ २७ ॥ २८ ॥ वैशम्पायन
जी बोले हे राजा जन्मेजय उक्त प्रकार से सेना कन्या और
अलंकृत वेश्या और को राजपुत्र की आगोनी को भेजक
र राजा विराट ने प्रसन्नतापूर्वक कहा कि हे सैरन्ध्री जा
ओ पासे उठा ला और कंक जी वाहोय [stain] म हस्तन कर प
हस्तुन कर युधिष्ठिर बोला ॥ २९ ॥ ३० ॥ कि मैं ने सु
ना है कि प्रसन्न मनुष्य के साथ खिलाड़ी को जुवा न खे
लना चाहिये सो इस समय आपके आनन्द में होने के
कारण से मेरी इच्छा जुवा खेलने की नहीं है ॥ ३१ ॥
परन्तु मुझको आपका प्रिय करना है इस से जो आ
पकी इच्छा होय तो आइये खेलें राजा बोला कि स्त्री
और सुवर्ण आदि जो कुछ द्रव्य है तिन को बिना जु
आ खेले क्या मिल सकता है पर[torn] र युधिष्ठि [torn]

र को लगा कि आपको बहुत दोष पर खब ने बाले ज
पें के दिखने से कला लाभ है॥३२॥३३॥ जो आख
त मे मे बड़े २ दोष है इससे उस का त्याग ज़रूरी अ
च्छा है आपने युधिष्ठिर को भी पांडव को देख
पा लू ना हो गा कि उस ने कैसे बड़ि पुत्र को देप
रान्त और रथ न की देवन द्वपा भाई यौ सहित न ज
पे में लगाई थे थे इसी से मेसी दृष्टि में आखिल
ने में नहीं है॥३४॥३५॥ परन्तु जो आप उस
को [illegible] अच्छा समझते हैं तो आइये
देखिये वैशंपायन जी बोले हे राजा जन्मेजय इस
के पीछे गो आधार म्भ हुआ उसी समय विराट
ने युधिष्ठिर से कहा॥३६॥ देखो आज मेरे बे
टे ने कैसे कौरवों को जीता है यह सुन कर युधि
ष्ठिर बोला॥३७॥ कि जिस का सारथी बृहन्न
ला हो उस की विजय क्यों कर न होय यह सुन कर
राजा विराट ने क्रोधित हो कर कहा॥३८॥ अ
रे नीच ब्राह्मण तुझ को पहसान नहीं है कि
कौन बात कहने की है कौन नहीं कहने की है तू
नपुंसक को मेरे पुत्र की तुल्य कह कर मेरा अ
पमान करता है॥३९॥ भला बता तो वह मेरा
पुत्र हो के भी क्या दृ क कौरवों को क्यों कर वि
जय न हीं [illegible] सकता है अब तो मैं तुझ को सखा जा
न कर छोड़ [illegible] है ताहूं परन्तु जो तू अपना जीवि

॥४०।३॥ विराटपर्व॥

त चाहे तो फिर शेष समय तक छिपो यह सुन कर युधिष्ठिर
बोला कि द्रोणाचार्य कृपाचार्य भीष्म अश्वत्थामा
कर्ण और राजेन्द्र दुर्योधन आदि को सिवाय बृहन्न
ला के मस्त गजों सहित सामन्त इन्द्र भी नहीं
जीत सक्ता है उसकी भुजा बल के समान न हुआ
है और न होगा॥४०॥४३॥ बड़े पुत्र को देखक
र वह प्रसन्न होता है और उसने सन्मुख आने
वाले सब देवता और असुर और मनुष्यों को जय
किया है॥४४॥ ऐसा [redacted] सहायक पाक
र क्यों कर राजपुत्र की विजय न होय यह सुन कर
बिराट ने कहा कि हम ने बहोत तनियेधा किया पर
तू अपनी जिह्वा को वस में नहीं रखता है॥४५॥
सत्य है जो दण्ड देने वाला कोई न होय तो कोई म
नुष्य धर्म न करै वैशम्पायन जी बोले हे राजा
जन्मेजय यह कह कर राजा विराट ने बड़े क्रोध से
युधिष्ठिर को डपट कर कर कहा जैसा तू कहता
है वैसा नहीं है और फिर पासा हाथ में लेकर
बड़े बल से युधिष्ठिर की नासिका में मारा उस
के लगाने से युधिष्ठिर की नाक से रुधिर
बहने लगा॥४६॥४७॥ तब धर्मात्मा युधिष्ठि
र ने उस रुधिर को पृथ्वी पर गिरने न दिया कि
न्तु अपने हाथ में रोक कर समीप स्थित द्रोपदी की

और देखा ॥४८॥ वह पतिव्रता उन अभिप्राय को जान गई और पृथ्वी पर जा कर पानी भरा हुआ सुवर्ण का पात्र ले आ ॥४९॥ और उस में नासिका से गिरते हुये रुधिर को ले लिया इसी अवसर में अति प्रसन्न उत्तर ने अनेक प्रकार के सुगंधी माला धारण किये हुये और शुभ अंत्य लग्न पहुंचे नगर में प्रवेश किया और नगर निवासी और देशवासी मनुष्यों ने स्त्रियों सहित राज सभा के द्वार पर आकर राजा के पास अपने आने का हाल कहला भेजा और द्वारपालकों ने राजा से जा कर कहा ॥५०॥५२॥ कि महाराज आप का पुत्र वृहन्नला सारथी सहित सभा के द्वार पर खड़ा है यह सुन कर राजा ने प्रसन्न हो कर कहा ॥५३॥ कि आए दोनों को शीघ्र भीतर लाओ मैं उन दोनों के देखने की इच्छा से बैठा हुआ हूं उस समय युधिष्ठिर ने उस लाने वाले से कान में कहा ॥५४॥ कि केवल उत्तर ही को लिवालाव वृहन्नला न आने पावै क्यूं कि उस का यह व्रत है ॥५५॥ कि सिवाय युद्ध में संग्राम के आने वाले के जो कोई मनुष्य मेरे मार कर घायल कर दे अथवा रुधिर

निकाले वह जीतन हीं बच सक्ता ॥५६॥ सो वह मु
झको रुधिर भरा हुआ देख कर अपने क्रोध को
सहन सकेगा और राजा को मंत्रियों सहित मारक
र सेना को भी मार डालेगा ॥५७॥ इति श्री भाषा
महाभारते विराटपर्वणि अष्टषष्ठि तमो
ऽध्यायः ॥६८॥ उणहत्तर का अध्याय ॥ उत्तर का
राजसभा में जाना उसके कहने से विराट का युधि
ष्ठिर से अपराध क्षमा कराना और विराट का उ
त्तर की प्रशंसा करना ॥ वैशम्पायनजी बोले हे राजा
जन्मेजय इसके पीछे राजपुत्र भूमीजय जिस को उ
त्तर भी कहते थे राजसभा के भीतर आया और उसने
अपने पिता के चरणों को नमस्कार कर और कंक
को भी दंडवत की ॥१॥ और रुधिर से लिप्त युधिष्ठि
र एकान्त में बैठा पाया और जो उसके पास सैरन्ध्री
स्थित थी ॥२॥ उसको देखकर उत्तर ने शीघ्रता
से पूछा कि इसको किसने मारकर अपराध कि
या है ॥३॥ यह सुनकर विराट बोला कि इस कुटि
ल को मैंने मारा है यह इतनी प्रतिष्ठा के योग्य न
हीं है क्यों कि तुझ से सूरवीर के प्रतिष्ठा योग्य हो
ने पर यह नपुंसक की बड़ाई करता है ॥४॥ उत्तर बो
ला महाराज आपने बड़ा अकार्य किया इस
को शीघ्र प्रसन्न कीजिये नहीं तो ब्राह्मण के क्रो
ध की अग्नि आपको कुल सहित नाश कर

॥४०॥ विराटपर्व॥
देगी॥ ५॥ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जन्मेजय पुत्र
के वचन को सुन कर राजा विराट ने रखवाली की ई ग्र
गिन की तुल्य युधिष्ठिर से अपने अपराध की क्ष
मा चाही तब युधिष्ठिर ने कहा कि हे राजा वृथा तो दे
ऊं ई कि हम ने तेरा अपराध क्षमा किया हमारे
क्रोध का लेश नहीं है॥ ६॥ ७॥ परन्तु हां जो हमा
रे शरीर का रुधिर पृथ्वी पर गिर पड़ता तो निः
सन्देह हम सब देश और तुम नाश हो जाते ग्री
रअन्याय से निरअपराध ताडित होने पर भी
मैं आप को दोष नहीं देता हूं क्योंकि बलवान म
नुष्य शीघ्र ही ऐसा कर्म करने लगता है॥
८॥ ९॥ जब रुधिर बन्द हो गया तब वृहन्नला
राज सभा में प्रवेश किया गया उसने भी रा
जा और कंक को दंडवत की॥ १०॥ इस के पीछे रा
जा विराट युधिष्ठिर को सुन कर के अर्जु
न के सन्मुख उत्तर की प्रशंसा कर के कहने ल
गा॥ ११॥ हे माता के आनन्द बढाने वाले पुत्र
मैं तुझ सा पुत्र पाकर पुत्र वान हूं आज जैसा पुत्र
मेरे नहीं था और न होगा॥ १२॥ हे पुत्र जो
कर्ण ऐसा वीर है कि हजारों चाल चलै परन्तु
एक चाल में भी न चूके उस कर्ण से तैने कैसे
युद्ध किया॥ १३॥ जो सभी मनुष्यों की तुल्य वीर इ

सनर लौ कमें को ईं नहीं है उस सेतेरा किस प्रकार
सें समा गम हुआ ॥ १८ ॥ और जो यादव और कौर
व और सब दाक्षी कुलों का आचार्य ब्राह्मण और
सब शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य नामी है उस
सें तेरा युद्ध किस प्रकार सें हुआ और जो आचा
र्य का अश्वत्थामा नामी पुत्र सब शस्त्र धारि
यों में बड़ा प्रख्यात है उस सें तू कप सें लड़ा था
और जिस कृपाचार्य को देख २ योद्धा लोग ऐसे
दुखी हो जाते हैं जय सें धन हरे हुये व्यापारी
लोग उस सें तैं ने कप सें समा गम किया और जो
दुर्योधन नामी राज पुत्र अपने बाणों से पहाड़ को भी
वेधसक्ता है उस सें तैं ने किस प्रकार सें युद्ध कि
या आज मेरे सब शत्रु पराजित हुये और मेरे सन्मु
ख सुख रूपी वायु चल रही है ॥ १५ ॥ १९ ॥ तैं ने
आज बड़े बलवान् वीर कौरवों को युद्ध में हरा
कर भगा दिया है और निश्चय उन से गोधन
इस प्रकार सें जीता है जैसे सिंह मांस को
छीन ले ॥ २० ॥ २१ ॥ इति श्री भाषा महाभारते वि
राट पर्वणि एकोनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥
सत्तरका अध्याय ॥ उत्तर का राजा विराट सें कह
ना और पाण्डवों को कि यही देव पुत्र ने जीता
है मेरी ऐसी सामर्थ नहीं है ॥ उत्तम प्रया सा को [illegible]

॥४.१॥ विराटपर्व॥
सुन कर उत्तर बोला कि न मैं ने गौओं जीती हैं और न
मैं ने युद्ध से शत्रु जय किये यह सब काम कि देवपुत्र
ने किया है ॥१॥ मैं भीत हो कर भागा जाता था उसी
समय उस देवपुत्र ने जिस का शरीर वज्र के समा
न दृढ था, और रूपवान था उस ने, आ कर मुझे भा
गने से रोका, और मेरे रथ पर बैठ गया ॥२॥ उ
सी ने गौओं जीती हैं और उसी से कौरव हार कर च
ले गये हैं उसी बीर ने यह काम किया है मेरी सा
मर्थ नहीं है ॥३॥ द्रोणाचार्य कृपाचार्य, अश्व
त्थामा कर्ण विकर्ण, और भीष्म नामी छः महा
रथियों को उस ने बाणों के मारे विमुख कर दिया
॥४॥ दुर्योधन भयभीत हो कर सिंह से गजराज
के तुल्य भागा उस से भागने में मैं देवपुत्र ने क
हा तुम भाग कर हस्तिनापुर में भी नहीं बच स
को हो वहां कोई तुम्हारी कोई रक्षा कर नहीं स
क्ता है इस से युद्ध करो जीतोगे तो पृथ्वी भोगोगे
, और मरोगे, और नौ स्वर्ग पाओगे ॥५॥१॥ यह
सुन कर वह राज मंत्रि, और सेना सहित सर्प
की भांति स्वास लेता हुआ, और वज्र तुल्य बाण
छोड़ता हुआ लौटा ॥६॥ उस देखकर मेरे रो
म खड़े हो गये, और रथी टूट कंपने लगे परन्तु उस
रूपवान, और सिंह तुल्य देवपुत्र ने हस कर स

॥ ४०८ ॥ विराटपर्व ॥ पिछे

वको बाणों से तितर बितर कर दिया और उनके वस्त्र
हर लिये और उनको बहुत से वचन भी सुनाये ॥ १० ॥
११ ॥ यह सुन कर बिराट ने कहा कि वह यशस्वी औ
र शूरवीर देवपुत्र कहां है जिसने कौरवों से हमारेत
र गोधन को जीता है और तेरी रक्षा की है मैं उस
का दर्शन करके उसकी पूजा [illegible] करना चाह
ता हूं ॥ १२ ॥ तेरा १३ ॥ उत्त[illegible]र बोला कि
महाराज वह देवपुत्र वहीं अन्तर्द्धान हो गया
परन्तु कहगया है कि कल अथवा परसों आ
वेगा ॥ १४ ॥ वैशम्पायन जी बोले हे राजनमें
जय उस प्रकार से वर्णन किये हुये और छ
लभेष में छुपे हुये पांडवों को विराट की आ
ज्ञा से अर्जुन ने वे सब वस्त्र उसकी पुत्री उत्तरा
को दे दिये ॥ १५ ॥ उत्तरा उन अनेक प्रकार के ब
ड़े मोल वाले [illegible]कों को लेकर बहुत प्रसन्न हुई ॥
१६ ॥ इसके [illegible] हे राजा जन्मेजय अर्जुन
ने बड़ी प्रसन्नता से विराटपुत्र से मंत्र करके
राजा युधिष्ठिर के निमित्त जो कर्म करना था
उसको विधिवत् किया ॥ १८ ॥ १९ ॥ इति श्री
भाषा महाभारते विराटपर्वणि सप्ततितमो
अध्यायः ॥ ७० ॥ इकहत्तर का अध्याय ॥ पांड
वों को स्नान आदि कर्म करके विराट की सभा

में आकर राज्यासन पर बैठ [illegible] ना विराट का बै
ठने का कारन पूछना और अर्जुन का युधिष्ठि
र के गुन वर्नन करना॥ वैशम्पायन जी बोले हे रा
जा जे [illegible] ने जय इसके पीछे तीसरे दिन पांचों
[illegible] भाई पांडवों ने महूर्त पर व्रत रख कर स्नान
किये और श्वेत वस्त्र धारन किये॥१॥ और
अपने को सब आभूषनों से भूषित करके युधि
ष्ठिर को आगे किये [illegible] हुये पांचों अग्नि त
ल्य तेजस्वी महारथी विराट की सभा में आ
कर राज्यासनों पर इस प्रकार से बैठ गये मा
नों वेदियों पर अग्नि स्थापित है इसके पीछे
राजा विराट राज काज करने के लिये मंत्रियों
सहित सभा में आया॥२॥४॥ और प्रज्वलि
त अग्नि की समान प्रकाशमान पांचों पां
डवों को राज्यासन पर स्थित देखकर खड़ा हो
गया और एक महूर्त देखता रहा उपरान्त क्रो
धित होकर मरुद्गणों से युक्त इन्द्र की स
मान बैठे हुये कंक रूपी युधिष्ठिर से बोला॥५॥६॥
कि हम ने तुम को पासे फेंकने के लिये अपना
सभासद बनाया था आज यह क्या उपहास
है जो तुम अपने को अलंकृत करके राज्यास
न पर बैठ गये हो॥७॥ वैशम्पायन जी बोले

हे राजा जनमेजय उक्त बात को सुन कर, अर्जुन
नें मन्द मुसकरा कर कहा ॥८॥ कि हे राजा यह
पुरुषोत्तम ब्रह्मण्य पात्र तिस त्याजी प कृ ल, श्री
रुद्रवत है, और इन्द्र के आधे आसन पर बैठने के
योग्य है ॥९॥ इन को आप केवल देहधारी धर्म स
मझिये जहां तक बुद्धि की जाती है उससे भी ये अधि
क हैं मनुष्यों में भी इन का वैसा ही श्रेष्ठ है सब त
पों का इन को स्थान जानिये ये नाना प्रकार के अ
स्त्रों को चलाता है और जो कुछ ये जानते हैं उस को
तीनों लोकों के चर और अचर जीवों में न कोई जा
नता है और न जानेगा ॥१०-११॥ इन को जो विदि
त है वह किसी देवता, असुर, मनुष्य, राक्षस, गंध
र्व, यक्ष, किन्नर और महा उरग को भी नहीं विदि
त है ॥१२॥ इन के गुण मैं कहां तक आप से
कहूं ये दीर्घदर्शी, महातेजस्वी, पुर और दे
श वासियों के प्यारे पांडवों के अतिरथी, यज्ञ के
करता, धर्म तत्पर, सब को वश में रखने वाले ॥
१३॥ महर्षि से कुछ कम, ऐसे राजर्षि सब लो
कों में विख्यात, बलवान, द्युतिमान, चतुर,
सत्यवादी और जितेन्द्रिय हैं ॥१४॥ धन आदि पदा
र्थों के संचय करने में ये इन्द्र और कुबेर समान
हैं और संसार की रक्षा करने में मनु जी के स
दृश हैं ॥१५॥ नाम इन का कौरव श्रेष्ठ धर्मराज

प्रसिद्ध हैं ये महा तेजस्वी और प्रजा पर अनु
ग्रह करनेवाले हैं ॥१६॥ संसार में इन की कीर्ति
सूर्य की प्रभा के समान और रथ सूर्य की कि
रणों के सदृश दोनों सब स्थानों में आच्छादि
त और घूमते हैं और जब तक ये कुरुदेशों के
अधिकारी रहे तब तक दश हजार हाथी और
दश हजार रथ जिन में कंचन माला धारी
श्रेष्ठ घोड़े जुते हुये इनके पीछे २ चला क
रते थे और मणी और कुण्ड[illegible]लधारी
और सौ सूत और मागध इन की स्तुति इस
प्रकार से किया करते थे जैसे कि ऋषि इन्द्र की
स्तुति किया करते हैं ॥१७॥२१॥ और कौरव औ
र सब राजा किंकरों के समान इन की नित्य उपा
सना किया करते थे ये कुबेर के समान औ
र सब राजा देवताओं के सदृश थे इन सूर्य
रूपी तेजस्वी ने सब राजाओं को कर का देने
वाला वैश्यों की सदृश कर डाला था और अट्ठासी
हजार महात्मा स्नातक ब्राह्मण जिन्हों ने
ब्रह्मचर्यव्रत को भले प्रकार पूजा किया था
इन के यहां भोजन करते थे और बूढ़े अना
थ लंगड़े और अन्धे मनुष्यों को पुत्र तुल्य पा

लन करते थे और धर्म पूर्वक इन्द्रियों को दमन और क्रोध में जितव्रत हैं ॥२३॥२४॥ और वेद ब्राह्मणों के पालक होकर सत्यवादी हैं इन्हीं के प्रताप से राजा दुर्योधन कर्ण शकुनी और अपने जनों के साथ तपरहा है इनके सब गुण वर्णन नहीं हो सक्ते हैं ॥२६॥२७॥ इनका धर्म में तत्पर होना और दया करना संसार में बिख्यात है अब सा पृथ्वीपति अधर्म राजा होने पर ये क्यों कर राज्यासन पर बैठने के योग्य नहीं हैं ॥२८॥२९॥ इति श्रीभाषा महाभारते बिराटपर्वणि एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥७१॥ बहत्तरवां अध्याय॥ उत्तर और अर्जुन का बिराट राजा से पांडवों को बताना और बिराट का अर्जुन को अपनी उत्तरा पुत्री देना और अर्जुन का उसे अपने पुत्र के लिये अंगीकार करना॥ उन बातों को सुनकर राजा बिराट बोला कि जो यह कंक कुन्ती पुत्र कौरव्य राजा युधिष्ठिर हैं तो भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव और द्रौपदी कौन हैं जब से वे पांडव जुए में राज्य हार कर चले गये तब से उनका कुछ वर्तान्त सुनने में नहीं आया ॥१॥२॥ यह सुनकर अर्जुन ने कहा कि हे राजा जो यह बल्लभ नामी आपका पाकशाला का अध्यक्ष है यही भयानक पराक्रमी

मी भीमसेन है॥३॥ इसने क्रोधवश नाम
मी राक्षसों को गन्धमादन पर्वत पर मारा था
और सौगन्धीक नामी दिव्य पुष्प द्रोपदी के
लिये लाया था॥४॥ इसी ने दुष्टात्मा कीचकों
को मारा है और यही आपके अन्तःपुर में
रीछ वाराह व्याघ्र और हाथियों को मारता था॥
और जो आपका अश्वबन्धपाल है यही नकु
ल है और आपका गोरक्षक यह सहदेव है ये
दोनो महारथी हैं और माद्री माता से उत्पन्न हैं
॥६॥ यह दोनों रूपवान् और शृंगारवेष आ
भरणों से युक्त हैं और यशस्वी श्रेष्ठ और सह
स्रों महारथियों में समर्थ हैं॥७॥ और यह क
मल की तुल्य विशाल नेत्र सुन्दरी जिसकी
कटि सूक्ष्म और हास्य मनोहर है सैरन्ध्री रूप
द्रौपदी है जिसके कारण से कीचक मारे गये
थे॥८॥ और मैं भीमसेन से छोटा और नकुल
और सहदेव से बड़ा अर्जुन नामी कुन्ती का पुत्र
हूं॥९॥ हम लोगों ने गर्भ की भांति बड़े सुख
पूर्वक आपके नगर में गुप्तवास किया॥१०॥
वैशम्पायन जी बोले हे राजन् जनमेजय जब अ
र्जुन ने पांडवों को बता दिया तब उत्तर राजा वि

राटसे पांडुवोंके वर्णन करनेमें इस प्रकारसे कहने
लगा ॥११॥ कि यह जो जाम्बूनद सुवर्ण कासा गौ
रशरीरधारी मनुष्य जिसकी प्रच[illegible]रड बड़ी ना
सिका सिंहकीसी और बड़े लम्बे और रक्तने
त्र हैं यह कुरुराज युधिष्ठिर है ॥१२॥ और यह
दूस[illegible]रा जिसके शरीर[illegible] का वर्ण तपाये हुये सु
वर्ण कासा है चाल जिसकी मत
वाले हाथी कीसी है कन्धे बड़े विस्तीर्ण हैं और भु
जा लम्बी और मोटी हैं यह भीमसेन है ॥१३॥
और इसके पार्श्व में जो बड़ा बड़ा धनुषधारी
श्याम वर्ण मनुष्य है जिसका शरीर गजराज
कासा सिंहके से ऊंचे २ कन्धे चाल गजेन्द्र
की और नेत्र कमलके समान बड़े २ हैं यह वी
र अर्जुन है ॥१४॥ और वे दोनों मनुष्य जो आ
पके समीप बैठे हैं नकुल और सहदेव हैं ये दो
नों विष्णु और इन्द्रसे कुछ ही न्यू[illegible]न नहीं हैं इन
की समान नरलोकमें कोई रूपवान् और
सुशील नहीं ॥१५॥ और इन[illegible] दोनोंके पार्श्व
में जो यह उत्तम सुवर्ण कासा शृंगार रखने वा
ली बड़ी प्रकाशमान मूर्तिमान लक्ष्मी औ
र पार्वती की तुल्य नीले कमल कीसी कान्ति र
खने वाली और देवताओं की देवी है यह द्रौ

पड़ी है ॥१६॥ और यह अर्जुन पाण्डवों का मार
ने वाला है सो है जैसे सो सिंह मृगों का मारनें
वाला है सो है जैसे [illegible] सो सिंह मृगों का मारनें वाला
है ॥१७॥ कौरवों में से शूर रथियों को मारता
हुवा यह रथ समूह में घुम[illegible]ता था इस
ने बड़े मत्त हाथी को एक बाण सें मारकर गि
रा दिया कि वह हाथी दांतों के बल पृथ्वी पर गि
र पड़ा इसी नें कौरवों को जीता है और इसी नें
गौ जीती है ॥१८॥१९॥ हे पिता इसकी पां
ख की ध्व[illegible]नि सें मेरे कान बहरे हो ग
ये थे और भी भीष्म द्रोण कर्ण और दुर्योधन
आदि महारथियों को इसी नें जय किया था वह
सब काम मैं नें नहीं किया था इसी वीर का किया
हुआ है इसी वीर ने मुझ भयभीत भागते हुये
को लौटा[illegible]या था और इसी की भुजा बल सें
मैं जीता हुआ फिर आया हूं ॥२०॥२२॥ वैशंपा
पायन जी बोले हे राजा जनमेजय अर्जुन सें प्री
ति रखनें वाले उत्तर सें राजा नें उक्त बात को सु
न कर कहा ॥२३॥ कि समय के अनुसार मैं
मैं पांडवों का प्रिय करना चाहता हूं जो तेरी इ

च्छा हो तौ मैं उत्तरा को अर्जुन को दे दूं ॥२४॥ उत्त
र बोला वो हीत श्रेष्ठ है मेरा भी यही मत है महा भा
ग पांडुत सब प्रकार से मान्य और पूज्य है ॥२५॥ प
हलुन क विराट राजा ने कहा कि अय मुझ को भी
शत्रुओं ने पकड़ लिया था भीमसेन ने मुझे छु
डाया और गौ जीती ॥२६॥ सो युद्ध में जो हमारी जि
य है वह इन्हीं का भुजा बल है इससे हम सब को
मंत्रियों सहित कुन्ती पुत्र राजा युधिष्ठिर को
उसके भाइयों सहित प्रसन्न करना चाहिये पां
डु व धर्मात्मा है ऐसा करने से जो कुछ हम लो
गों से अनजाने में कहा गया है वह क्षमा करेंगे॥
२७॥२८॥ वैशम्पायन जी बोले हे राजा जनमेज
य उक्त प्रकार से कहकर राजा विराट युधिष्ठि
र के समीप चला गया और उसको अपना रा
ज्य पुर और कोष समर्पण किया ॥२९॥ और
फिर अर्जुन को आगे करके सब पांडवों से मि
ले और उनके मस्तक को सूंघने [illegible]
लगा उनके स्वरूप के दर्शन से राजा विराट
तृप्त नहीं हुआ और थोड़ी देर पीछे उस
ने बड़ी प्रसन्नता से राजा युधिष्ठिर से कहा कि
आप सब प्रकार बड़े कुशल पूर्वक वनवास को
पूरा करके यहां आये और प्रारब्ध ही से पात्रे से

पाञ्चालों में प्रतिज्ञा रहने के नियम को पूरा किया॥३०॥
३३॥ मैं अपना सब राज्य और जो कुछ धन मेरे
पास है यह अर्जुन को देता हूं आप अंगीकार कीजि
ये और अर्जुन उत्त
रा को ग्रहण करें इसके समान उस के लिये मैं
योग्य पती नहीं देखता हूं॥३४॥३५॥ यह व
चन करके राजा युधिष्ठिर ने अर्जुन की और
देखा तब अर्जुन ने राजा विराट से कहा कि
राजा मत्स्य और भरतवंशियों का स
म्बन्ध बहुत योग्य है मैं आप पुत्री को अ
पने पुत्र के अर्थ अंगीकार करता हूं॥३६॥
३७॥ इति श्री महाभारते विराट पर्वणि
द्विसप्ततितमोऽध्यायः॥७२॥ तिहत्तरका
अध्याय॥ अभिमन्यु और विराट पुत्री उ
त्तरा का विवाह होना॥ उक्त बात को सुन कर
राजा विराट बोला कि हे पाण्डव श्रेष्ठ तुम मे
री दी हुई पुत्री को अपनी भार्या के अर्थ क्यों
अंगीकार नहीं करते हो॥१॥ अर्जुन ने कहा
कि मैंने सदा उसके साथ अन्तःपुर में रहता था वा
वह मेरा का ना स्थान पर भी रहने पर पिता की

भांति विख्यात सत्यवती थी॥ २॥ आगे और नाचने के कारण मैं बहुत उसकी बहुत मानती थी और प्रिय जानती थी और आनेनाचने के समय मुझे आचार्य के समान समझती थी॥ ३॥ मैं उसके साथ एक वर्ष तक अन्तःपुर में रहा उससे विवाह करने में घर और बाहर सब की बड़ी शंका होगी॥ ४॥ मैं शुद्ध जितेन्द्री और दांत हूं इससे मैं आपकी पुत्री को अपने लिये ग्रहण नहीं कर सकता हूं॥ ५॥ हां पुत्र वधू होने में किसी प्रकार की शंका न होवेगी और लोकापवाद की शुद्धी भी हो जायगी॥ ६॥ मुझे मिथ्यापवाद और अकीर्ति से बड़ा डर लगता है इससे आपकी पुत्री को अपने पुत्र की वधू करने के वास्ते अंगीकार करता हूं॥ ७॥ मेरा अभिमन्यु नामी पुत्र साक्षात देवकुमार के स्वरूप है और चक्रधारी वासुदेव जी का प्यारा भानजा है और शस्त्र विद्या की निपुणता में अद्वितीय है वह आपकी पुत्री के लिये परम योग्य वर है॥ ८॥ यह सुनकर राजा विराट बोले कि हे कौन्तेय मनसीजी और धर्म में तत्पर हो तुम में यह बात होना योग्य है॥ १०॥ बहुत से ब्रह्म जो कुछ तुम ने

वो उपसम जो उसको पत्नी ग्रहण करो तो मेरा संबन्धी
पाकर मेरी सब कामना वृद्धि को प्राप्त हो जी॥११॥
वैशम्पायनजी बोले हे राजा जनमेजय विराट के
उस प्रकार के कहने से राजा युधिष्ठिर ने अर्जु
न और राजा विराट की सम्मति से विवाह हो
ने की आज्ञा दी॥१२॥ इसके पीछे राजा युधि
ष्ठिर और राजा विराट ने सब मित्र और श्री
कृष्णजी के पास दूत भेजे॥१३॥ अ
भिमन्यु श्रीकृष्ण और आनर्त देशों के नि
वासी दाशार्हों को बुलाया और सब से कहल
ला भेजा कि पाण्डव तेरह वर्ष वनवास व्यतीत
करके राजा विराट के नगर में उपस्थित हैं और
राजा विराट की पुत्री का अर्जुन के पुत्र से विवाह है
॥१४॥१५॥ दूतों के पहुँचने पर काशी राज
और राजा शैब्य जो युधिष्ठिर से प्रीति रखते थे
वे एक एक अक्षौहणी सेना लेकर वहाँ आये
और महाबली राजा द्रुपद भी एक अक्षौहणी
सेना सहित आया था और उसके साथ द्रौपदी
के वीर पुत्र और अपराजित शिखण्डी और
शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ दुर्धर्ष धृष्टद्युम्न जो य
ज्ञ करता बड़े बड़े दक्षिणा देने वाले वेद

और अब भरत खण्ड स्थान से सम्पन्न हो कर ब
डे शूरवीर थे वे आये राजा विराट ने उन सब
को सेना और वाहनों सहित आदर पूर्वक भोज
न दिया सब प्रकार से पूजा उपरान्त राजाओं के अ
हां तक हैं आने पर श्री कृष्ण और बलदेव जी
भी आये और कृतवर्मा प्रधान सात्यकि अ
नेर्ध्य भी अक्रूर सांब और निषाद आदि सब
शूरवीर अभिमन्यु और उसकी माता को अप
ने साथ लेकर आये और श्री कृष्णजी के साथ
दश सहस्र हाथी सत अयुत रथ एक अर्बुद दश
घरजा भी घोड़े एक खर्ब प्यादे और भोज और अं
धक वंशी बड़े २ हती ॥१५॥२५॥ आये थे श्रीकृ
ष्णजी ने सब पांडवों को पृथक २ दास दासी
और नाना प्रकार के रत्न और वस्त्र देकर भेंट
दिया और अभिमन्यु का विधिवत विवाह हो
ने लगा और पांडवों के स्थापित किये पांचजन्य
भेरी जो शंख और डंवर नामी अनेक प्रका
र के राजा मत्स्य के भवन में बजने लगे ॥२६॥
२७॥ फिर राजा विराट ने अनेक प्रकार के मृ
गों के मांस और अन्न पान और उत्तम म
द्य और अनेक प्रकार के पानव नाकर जिव

॥४[illegible] २३॥ विराटपर्व॥
पि कमनीप ॥ श्रीपब तनलकि पोर
कौ पाधनि दे पाउ द्दार ॥ कुं जलाल भा.धा.कि
पो पर्ब्वे विराट मजाद ॥